अप्रैल (द्वितीय) 2020 कीमत : 10.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज खरी आवाज



शर्मीली बन गई खूंरेजी

- 7 कहानियां
- ठेके पर सरकारी नौकरियां
- कोरोना को तकनीक से मात
- सोनम का खतरनाक केक

MK MAGAZINE KING

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया



झुर्रियां | काले घेरे | छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- सन स्क्रीन
- फेस वाश

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

क्लीयर हैंड सैनिटाइजर
यहां से आप ले सकते है
amazon



कोरोना वायरस को फैलने से रोकें

ZEELAB PHARMACY

साबुन से बार बार हाथ धोएं
घर के बाहर, तुरंत कीटाणु मारने के लिए, हैंड सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें
अगर आपको सर्दी, खांसी, बुखार या सांस लेने में तकलीफ है तो डॉक्टर की सलाह लें

ज़ीलैब फार्मेसी की ओर से जनहित में जारी

हेल्पलाइन नंबर
9896062855
9896062292

MK MAGAZINE KING

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज
संस्थापक : विश्वनाथ (1917-2002)
अप्रैल (द्वितीय) 2020
अंक: 654
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ
मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: **दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.** अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं–

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 10 रु. एक साल के लिए 535 रु., 2 साल के लिए 1069 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, नयगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888. एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264. टोल फ्री नंबर : 18001038880
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/ह्वाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

गद्दारी पैठ



कोरोना के कहर में तबलीगी जमात की नासमझी से जो समस्याएं बढ़ी हैं, उन्होंने केंद्र सरकार को फिर से हिंदूमुसलिम करने का कट्टर कार्ड थमा दिया है. देखा जाए तो देश की जनता को आराम से जीने का मौका देने का वादा दे कर जीतने वाली भारतीय जनता पार्टी सरकार ने अपना एक और दांव, दंगे चला कर अब घरघर में दहशत का माहौल खड़ा कर दिया है. किसी को भी देश का गद्दार कहने का हक खुद ब खुद लेने के बाद अब उन्होंने जगहजगह गोली मारो गद्दारों को नारा गुंजाना शुरू कर दिया है. बिना सुबूत, बिना गवाह, बिना अदालत, बिना दलील, बिना वकील के किसी को भी गद्दार कह कर उसे मार डालने का हक बड़ा खतरनाक है.

न सिर्फ मुसलमानों को डराया जा सकता है, इस नारे से हर उस को डराया जा सकता है, जिस ने अपनी अक्ल लगा कर भगवा भीड़ की मांग को पूरी करने से इनकार कर दिया हो.

आज देश का दलित, किसान, मजदूर, बेरोजगार युवा, बलात्कारों से परेशान लड़कियां, छोटे व्यापारी सरकारी फैसलों से परेशान हैं. दलितों के घोड़ी पर चढ़ कर शादी करने पर मारपीट ही नहीं हत्या कर दी जाती है और जिस ने भी उस के खिलाफ आवाज उठाई, उसे गद्दार कह कर गोली मारने का हक ले लिया गया है. अगर किसान कर्ज माफ करने के लिए सरकार के खिलाफ मोरचा खोलें तो उन्हें गद्दार कहा जा सकता है. अगर व्यापारी नोटबंदी, जीएसटी और बैंकों के फेल होने पर होने वाले नुकसान की बात करें तो उन्हें गद्दार कहा जा सकता है. नागरिकता कानून की फुजूल की बात करने वाले को गद्दार कहने का हक है. छोटीबड़ी अदालतों में वकीलों के झुंड मौजूद हैं जो अपने हकों को मांगने वालों को गद्दार कह कर जज के सामने तक नहीं जाने दे रहे. जजों को गद्दार कह कर उन का रातोंरात तबादला कर दिया जा रहा है.

सारे देश में सरकार डिटैंशन सैंटर बनवा रही है जो आधी जेल की तरह हैं जहां नाममात्र का खाना मिलेगा, नाममात्र के कपड़े मिलेंगे, पर बरसों रहना पड़ सकता है. उन को गुलाम बना कर उन से काम कराया जा सकता है. लड़कियों को बदन बेचने पर मजबूर किया जा सकता है. यह हिटलर ने जरमनी में किया था. स्टालिन ने रूस में किया था. माओ ने चीन में किया था. कंबोडिया में पोलपौट ने किया था.

गद्दार कह कर कैसे सिर फोड़े जा सकते हैं. घरों को जला कर सजा दी जा सकती है. इस का नमूना दिल्ली में दिखा दिया गया. जिन्होंने किया वे आजाद घूम रहे हैं. जो शांति के लिए जिम्मेदार हैं, वे भड़काऊ भाषण देने में लगे हैं.

इस सब से मुसलमानों को तो लूटा जा ही रहा है, दलित और पिछड़े भी लपेटे में आ गए हैं. आज सरकारी नौकरियों में केवल ऊंचों को पद देने का हक एक बार फिर मिल गया है, क्योंकि या तो सरकारी काम ठेके पर दे दिए गए हैं या बंद कर दिए गए हैं. दहशत के माहौल की वजह से कोई बोल नहीं पा रहा. कन्हैया कुमार जो बिहार में भारी भीड़ जमा कर रहा था को अब दिल्ली की अदालतों में बुला कर परेशान करने की साजिश की जा रही है. चंद्रशेखर आजाद को बारबार लंबी जेल में भेज दिया जाता है. हार्दिक पटेल का मुंह बंद कर दिया गया है.

देश को अमन चाहिए, क्योंकि अगर पेट में आधा खाना ही हो, कपड़े फटे हुए हों तो भी अगर चैन हो तो जिंदगी कट जाती है. अब यह चैन भी गद्दार के नारे के नीचे दब रहा है.

★★★

पूरी दुनिया कोरोना की महामारी से जूझ रही है. लौकडाउन के बाद जरूरी कीमती सामान से लदे ट्रक जहां थे वहीं खड़े हैं. पहले भी हालात ट्रक ड्राइवरों के पक्ष में कहां थे. देखें तो देश के ट्रक ड्राइवरों की जिंदगी वैसे ही उबाऊ और खानाबदोशी होती है, उस पर हर नाके पर, हर सड़क पर बैठे खूंख्वारों से निबटना एक आफत होती है. सेव लाइफ फाउंडेशन का अंदाजा है कि ट्रक ड्राइवर हर साल तकरीबन 50,000 करोड़ रुपए रिश्वत में देते हैं. रिश्वत ट्रैफिक पुलिस वाले, टैक्स वाले, नाके वाले, चुंगी वाले, पोल्यूशन वाले तो लेते ही हैं, अब धार्मिक धंधे करने वाले भी जम कर लेने लगे हैं. धार्मिक धंधे वाले ट्रकों और टैक्सियों को रोक कर ड्राइवरों से उगाही करते हैं.

कोई कह सकता है कि यह रिश्वत तो मालिक की जेब से जाती होगी, पर यह गलत है. बहुत से ट्रकों को लगभग ठेके पर दे दिया जाता है कि ट्रक पहुंचाओ, रास्ते में जो हो, भुगतो और एकमुश्त पैसा ले लो. ड्राइवर को ऐसे में अपने मुनाफे में कटौती नजर आती है. वह कानूनी, गैरकानूनी दोनों रोकटोक पर रिश्वत देने में हिचकिचाता है और अकसर झगड़ा हो जाता है और मारपीट तक हो जाती है तो नुकसान ट्रक ड्राइवर का ही होता है.

ड्राइवरों की जिंदगी वैसे ही बड़ी दुखद है. उन्हें 12 घंटे ट्रक चलाना होता है, इसलिए अकसर वे शराब और दवाओं का नशा करते हैं. देश की सड़कें बेहद खराब हैं जो ट्रक चलाने में ड्राइवर की हड्डीपसली दुखा देती हैं. आमतौर पर सड़कों पर लाइट नहीं होती. अंधेरे में चलाना मुश्किल होता है. भारत में अब तक सुरक्षित ट्रक नहीं बनने शुरू हुए हैं. ड्राइवरों के केबिन एयरकंडीशंड नहीं होते, उन ट्रकों के भी नहीं जिन में खाने के सामान या दवाओं के लिए रेफ्रीजरेटर लगे होते हैं, इसलिए बेहद गरमीसर्दी का मुकाबला करना पड़ता है. बहुत से ड्राइवरों को बदलते साथियों के साथ चलना होता है.

हमारे यहां ड्राइवरों को रास्ते में सोने के लिए ढाबों पर पड़ी चारपाइयां ही होती हैं, जिन पर न गद्दे होते हैं, न पंखे तक.



घरों से दूर रहने की वजह से ड्राइवर राह चलती बाजारू औरतों को पकड़ते हैं, पर वे लूटने की फिराक में रहती हैं. उन के गैंग अलग बने होते हैं जो परेशान करते हैं. ड्राइवरों को बीवियों की चिंता भी रहती है कि उन के पीछे वे औरों के साथ तो नहीं आंखें लड़ा रहीं.

यही वजह है कि आज 1000 ट्रकों पर 400-500 ड्राइवर ही मिल रहे हैं. ट्रांसपोर्ट उद्योग को ड्राइवरों की कमी की वजह से भारी नुकसान होने लगा है. एक तरफ बेरोजगारी है, पर दूसरी तरफ ट्रेनिंग न मिलने की वजह से ड्राइवरों की कमी है. ट्रेनिंग तो आज सिर्फ जय श्रीराम कह कर मंदिर के धंधे कैसे चलाए जाएं की दी जा रही है. ●

MK MAGAZINE KING

शर्मीली बन गई खूंरेजी

रमेश तिवारी 'रिपु'

बस्तर की शर्मीली औरतें लाल गलियारे में रह कर खूंरेजी औरतें बन गई हैं. उन के हाथ में न केवल नक्सली नैटवर्क की कमान है, बल्कि वे किसी बड़े हमले की अगुआई भी करती हैं. अपनी जान और इज्जत को जोखिम में डालने वाली माओवादी औरतों पर लाखों के इनाम हैं.

जल, जंगल और जमीन की लड़ाई के लिए नक्सली नेताओं ने माकपा के सिद्धांत की घुट्टी पिला कर इन्हें बंदूक उठाने के लिए मजबूर कर दिया है, वहीं राजनीतिक पैरामीटर में ये गरीब हैं, बेरोजगार हैं, कुपोषित हैं. नक्सली औरतें अपने हक की आखिरी लड़ाई लड़ रही हैं.

छत्तीसगढ़ के अबूझमाढ़ की दुर्गम पहाड़ियों और जंगलों में माओवादियों का मुख्य गढ़ है. वामपंथी उग्रवाद का संचालन इन्हीं जंगलों से हो रहा है. इन्हीं घने जंगलों में माओवादी अपनी समानांतर सरकार चलाते हैं, जिसे वे 'जनताना सरकार' कहते हैं.

नक्सली जिला सुकमा की सरहद आंध्र प्रदेश और ओडिशा से मिलती है, जिसे वहां की पुलिस 'माओवादियों की राजधानी' कहती है. माओवादियों के नैटवर्क का संचालन यहीं से होता है.

साल 2005 तक नक्सली नेताओं ने औरतों की सेना तैयार नहीं की थी, वहीं साल 2006 में नक्सली नेताओं ने औरतों की सेना तैयार करने का फैसला लिया. उस के बाद नक्सलयों ने हर घर से एक बेटी और एक बेटा यह कह कर मांगे कि तुम्हारे हक की लड़ाई हम सरकार से लड़ रहे हैं.

धीरेधीरे नक्सलियों के एक बड़े नैटवर्क का संचालन नक्सली औरतें करने लगीं. नक्सली संगठन में जो आदिवासी औरतें हैं, वे सभी जवान हैं.

कभी आदिवासी औरतों को शर्मीली कहा जाता था, लेकिन अब इन के चेहरे पर लज्जा नहीं दिखती. ये बर्बरता की एक मिसाल बन गई हैं.

नक्सली नेता अपने संगठन में खूंरेजी औरतों को उन्हें कैडर के हिसाब से पद देते हैं. पद, इज्जत और अच्छी तनख्वाह के लिए आदिवासी लड़कियां और औरतें चूल्हाचौका और पढ़ाई छोड़ कर माओवादी बन रही हैं.

माओवादियों की सोच यह है कि राजनीतिक सत्ता बंदूक की नली से निकलती है. पीएलजीए यानी पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी मर्दों की तरह औरतों की भी भरती करती है. उन्हें सेना की तरह ट्रेनिंग दी जाती है. छापामार दस्तों की अगुआई की जिम्मेदारी भी ट्रेनिंग ले रही नई औरतों को दी जाती है. बस्तर में नक्सलियों के एक बड़े नैटवर्क की कमान जवान औरत के हाथों में है.

बस्तर की आदिवासी औरतें बड़ी मेहनती हैं. हाड़तोड़ मेहनत करना और मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिला कर खेतीकिसानी से ले कर जंगल से जरूरी चीजें जमा करना, हाटबाजारों में बेचने के अलावा घरगृहस्थी और बालबच्चे संभालना उन का स्थायी गुण है. उलट हालात में नहीं घबराना आदिवासी औरतों की खासीयत है. उन की यही खासीयत लाल गलियारे की जरूरत बन गई है.

आदिवासी औरतों में अनुशासन और किसी भी काम को मन लगा कर करने की इच्छाशक्ति बहुत तेज होती है. उन की इस खूबी का इस्तेमाल माओवादी नेताओं ने किया और उन्हें जालिम छापामार बना दिया.

पैसे और आतंक की वजह से भी आदिवासी औरतें अब नक्सली मूवमैंट को अंजाम दे रही हैं. जंगल में रहते हुए इन का ओचरण जंगली हो गया है. दया और ममता से इन का कोई सरोकार नहीं रहा. पुलिस के शारीरिक और मानसिक शोषण की वजह से पुलिस की ये बड़ी दुश्मन हैं.

जाहिर सी बात है कि पुलिस की इमेज आदिवासियों के बीच अच्छी नहीं है. हिड़मा का पुलिस ने सामूहिक बलात्कार किया था और उस के बाद





MK MAGAZINE KING

उसे नक्सली की वरदी पहना कर गोली मार दी थी.

मीडिया को बाद में बताया गया कि वह इनामी नक्सली थी. मीना खलको कांड में भी यही हुआ था. यह अलग बात है कि मानवाधिकार आयोग की जांच में खुलासा होने पर पुलिस वालों के खिलाफ कार्यवाही हुई थी. वहीं ऐसे सैकड़ों मामले हैं, जिन में पुलिस के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई.



वरदी के खिलाफ नक्सली औरतें हिंसा की नई परिभाषा गढ़ रही हैं. इन की बर्बरता और हिंसक वारदातों की वजह से पुलिस ने कई महिला नक्सलियों पर इनाम घोषित किया है, जिस में कुमारी वनोजा पर 8 लाख रुपए, कुमारी सोढ़ी लिंगे पर 5 लाख रुपए और माडवी मंगली की गिरफ्तारी पर 3 लाख रुपए का इनाम है.

नक्सली वारदात में औरतें

पुलिस भी मानती है कि इन 14 सालों में बड़ी तादाद में औरतों ने नक्सली दल में शामिल हो कर नक्सली संगठन को मजबूत करने में अहम रोल निभाया है. बस्तर संभाग के दरभा, भेज्जी, फरसगढ़, कुटरू, छोटे डोंगर, झारा घाटी, आवापल्लो, आमाबेड़ा, ओरछा समेत आधा दर्जन इलाकों में औरतों को एरिया कमांडर के पद पर तैनात कर नक्सली मूवमैंट को बढ़ाने और हिंसा फैलाने का काम सौंपा गया है.

इस समय बस्तर की जेलों में तकरीबन 50 नक्सली औरतें कैद हैं. इन में आधा दर्जन हार्डकोर नक्सली औरतें हैं, जो नक्सलियों के बड़े मूवमैंट को औपरेट करती थीं.

छत्तीसगढ़ की ज्यादातर नक्सली वारदातों में औरतों का रोल रहा है. दरभा की झीरम घाटी में हुई कांग्रेसियों की 'परिवर्तन यात्रा' में हुए हमले को भी नक्सली औरतों ने ही अंजाम दिया था.

बस्तर में नक्सलियों के खिलाफ आंदोलन छेड़ने वाले कांग्रेस नेता महेंद्र कर्मा को झीरम घाटी में बेरहमी से नक्सली औरतों ने ही मारा था. वे औरतें महेंद्र कर्मा को पीटते हुए सड़क से तकरीबन आधा किलोमीटर अंदर ले गई थीं और इस दौरान उन के चेहरे पर चाकुओं से वार भी करती रही थीं.

कई वारदातों में नक्सली औरतों के नाम सामने आने के बाद पुलिस ने भी उन पर नजर रखना शुरू कर दिया है. नक्सल प्रभावित जिला सुकमा के बुरकापाल में 24 अप्रैल, 2017 को माओवादियों और सुरक्षा बल के जवानों के बीच हुई मुठभेड़ में 300 से ज्यादा माओवादी शामिल थे, जिन में से आधे से ज्यादा वरदी में नक्सली औरतें थीं, जो सुरक्षा बल के जवानों पर गोलियां चला रही थीं.

दंतेवाड़ा में साल 2010 में हुई नक्सली वारदात, जिस में 76 सैनिक मारे गए थे, नक्सली औरतों ने रैकी कर घटना को अंजाम दिया था. फोर्स के कैंप और हाट बाजार में बड़ी आसानी से औरतें चली जाती हैं, इसलिए भी माओवादियों ने उन की फौज तैयार की है.

बसंती का कहर

कांकेर जिले के लोहारी गांव की 8 लाख रुपए की इनामी नक्सली कमांडर संध्या उर्फ बसंती उर्फ जुरी गावड़े साल 2001 में नक्सलियों के बाल संगठन में शामिल हुई थी. इस के बाद संगठन में अलगअलग जगहों पर अहम जिम्मेदारियां निभाने के बाद वह अपने गांव में जन मिलिशिया कमांडर के तौर पर काम कर रही थी.

नक्सली नेताओं के शोषण से तंग आ कर बसंती ने आत्मसमर्पण कर दिया. उस का प्रमुख काम पुलिस पर हमला कर हथियार लूटना, सीनियर नक्सली नेताओं की हिफाजत करना था. उस ने जिन गंभीर वारदातों को अंजाम दिया, उस में से दुर्गूकोंदल, आमाबेड़ा, कोयलीबेड़ा और पखांजूर थाना क्षेत्र में कई जगह धमाके, आजगनी और घात लगाना शामिल था.

13 सितंबर, 2003 में दंतेवाड़ा जिले के गीदम थाने में हमला और लूट, 2007 में बीजापुर जिले के रानीबोदली कैंप पर हमला, 2010 में चिंतलनार में हमला, जिस में 76 सैनिक मारे गए थे.

छत्तीसगढ़ के डीजीपी दुर्गेश माधव अवस्थी कहते हैं, "बहुत सारी नक्सली वारदातों में माओवादी औरतों का हाथ होने की जानकारी मिली है. गुप्त सूचना के आधार पर आपरेशन चलाए हैं. 2019 से अब तक हर महीने माओवादियों के कैंप पर हमले किए हैं.

"हमारे एक भी कैंप पर वे अब तक हमला नहीं कर पाए हैं. नक्सलियों में दहशत है. भारी तादाद में औरतें सरैंडर कर मुख्यधारा में शामिल हुई हैं. जाहिर है कि नक्सलवाद से औरतों का मोह भंग होने लगा है."

नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा जिले के गीदम थाना क्षेत्र से 8 लाख रुपए की इनामी नक्सली सुकाय वेट्टी साल 2011 में एलजीएस सदस्य के रूप में नक्सली संगठन से जुड़ी थी. वह पूर्वी बस्तर डिविजन के कुआनार में एलजीएस की सक्रिय सदस्य थी.

सुकाय वेट्टी ने साल 2010 में मुडपाल के जंगल में पुलिस पर घात लगा कर हमला किया था और नारायणपुर के धौड़ाई इलाके में सीआरपीएफ के जवानों पर हमला किया था. इस में 27 जवान शहीद हुए थे. साल 2013 में कोंडागांव के केशकाल थाना क्षेत्र में पुलिस नक्सली मुठभेड़ में भी वह शामिल थी.

कमउम्र लड़कियों की मांग

आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हुई कई बड़ी नक्सली वारदातों को अंजाम देने वाली 3 लाख रुपए की इनामी नक्सली रमोली नेताम ने अपने पति गोविंद नेताम के साथ सरैंडर किया था.

वह बताती है, "बड़े नेता कमउम्र लड़कियों को संगठन में शामिल करने का दबाव बनाते हैं. पहले लड़कियों में जोश भरा जाता है कि यह अपने लोगों के लिए हमारी लड़ाई है, लेकिन शामिल होने के बाद उन के साथ दोयम दर्जे का बरताव किया जाता है.

जुगरी निवासी छिनारी नारायणपुर मर्दापाल एलओएस सदस्य के रूप में साल 2008 में भरती हुई थी. उसे भानपुरी एरिया कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी दी गई थी. दोनों नक्सली औरतों पर 50-50 हजार रुपए का इनाम था.

माओवादियों को प्यार और औलाद पैदा करने की इजाजत नहीं होती. 8 लाख रुपए की इनामी नक्सली 20 साला आसमती को 10 लाख रुपए के इनामी नक्सली संपत से प्यार हो गया था. इन दोनों की मुहब्बत



परवान चढ़ ही रही थी. इस की भनक कमेटी के रामचंद्र रेड्डी उर्फ सचिव राजू को लग गई. दोनों को अलग कर दिया.

आसमती को यह अच्छा नहीं लगा उस ने घर बसाने के लिए लाल गलियारे से नाता तोड़ने के लिए संपत को मजबूर किया और बाद में उन दोनों ने हथियार डाल दिए.

भेदभाव नहीं

आदिवासी समाज में औरतों के साथ भेदभाव के हालात नहीं हैं. उन्हें बराबरी का दर्जा दिया गया है. बस्तर में बेरोजगारी मुद्दा नहीं है. शहरी लोग और सरकारी तंत्र जब उन तक पहुंचा, तो उन्हें बताया गया कि तुम पिछड़े हो, रहनसहन ठीक नहीं है, कच्चे मकान में रहते हो, कपड़ा ठीक से पहनो. सरकारी पैरामीटर पर वे गरीब कहे गए.

आदिवासी कभी कुपोषित नहीं थे. आदिवासी औरतें अपनी जिंदगी में खुश थीं, इसलिए भी कि उन के साथ कभी जातिगत भेदभाव नहीं किया गया था, इसलिए भी कि सभी एक ही जाति के हैं.

सवाल यह है कि फिर आदिवासी औरतें नक्सलवाद से क्यों जुड़ीं? देखा जाए तो बस्तर अंचल में आदिवासी संसाधन पर कब्जे की लड़ाई है. जल, जंगल और जमीन की लड़ाई है.

सरकार जल, जंगल और जमीन पर कब्जा उद्योगपतियों को दे रही है, जबकि सदियों से इन पर आदिवासियों का कब्जा था. जंगलों को काट कर उद्योगधंधे लगाने के लिए सड़कें बनाने की सरकार की नीतियों की वजह से आज हर आदिवासी को भरमाने का खेल खेला जा रहा है.

आंध्र प्रदेश के नक्सली नेताओं ने आ कर छत्तीसगढ़ के आदिवासी समाज में माकपा के सिद्धांत का बीज बोया. यही वजह है कि आज छत्तीसगढ़ के 28 जिलों में से 18 जिले नक्सलवाद की आग में जल रहे हैं.

सरैंडर करने वाली नक्सली औरतों को यह बात समझ में आ गई कि राजनीति की सत्ता बंदूक की गोली से नहीं निकलेगी, बल्कि आंध्र प्रदेश के नक्सली नेताओं ने उन का दैहिक और मानसिक शोषण करने का यह तरीका निकाला है.

क्यों बन रही हैं नक्सली

आदिवासी समाज की औरतें नक्सली क्यों बन रही हैं? इस के पीछे एक नहीं, बल्कि 4 अहम वजहें हैं. उन



के घर का कोई पुलिस से तंग आ कर नक्सली बन गया, तो उन के घर की औरतों ने भी उन के साथ बंदूक उठा ली. किसी का प्रेमी नक्सली बन गया तो वह भी नक्सली बन गई.

जिस आदिवासी औरत या मर्द का दिमाग माकपा के सिद्धांत से प्रभावित हो कर बदल गया, वह नक्सली बन गया. लेकिन इन सब वजहों के अलावा एक सब से प्रमुख वजह वसूली को माना जा रहा है. जंगली क्षेत्र में सड़कें, पुलिया, पुल या फिर विकास के दूसरे निर्माण कामों में लगे ठेकेदारों से वसूली करना, टैंडर के आधार पर अपना हिस्सा तय कर रखा है.

हिस्सा नहीं देने वाले ठेकेदार काम नहीं कर सकते. उन के ट्रैक्टर, जेसीबी मशीन, डंपर, गाड़ी को नक्सली फूंक देते हैं. नक्सली दहशत अब वसूली का जरीया बन गया है. तेंदू पत्ता सीजन में सब से ज्यादा रकम नक्सलियों को वसूली से मिलती है.

बस्तर में कमांडैंट के पद पर रहे कमलेश कमल कहते हैं, "आदिवासी औरतों को लगता है कि नक्सली बनना दूसरे रास्तों को चुनने से बेहतर है. भूख या फिर बेरोजगारी से मरने की जगह गोली से मर जाना ज्यादा ठीक है. नक्सली बनने के बाद समर्पण कर देने से एक तय रकम मिलती है. यह लालच भी औरतों को नक्सली धारा की ओर खींचता है."

कुछ जिंदगी में करना है. नाइंसाफी के खिलाफ लड़ना है. आदिवासी औरतें लालच में बड़ी आसानी से फंस जाती हैं. नक्सली आदिवासियों का ब्रेनवाश करते हैं कि देखिए, सरकार तुम्हारे साथ कितना सौतेला बरताव करती है. तुम्हारे जल, जंगल और जमीन को उद्योगपतियों को दे कर तुम्हें कमजोर कर रही है. तुम्हारे जंगलों पर उद्योगपति कब्जा कर रहे हैं. हम सरकार के खिलाफ आप की लड़ाई लड़ेंगे, हमारा सहयोग करें.

बहरहाल, अब लोकल औरतें समझ गई हैं कि माओवादी केवल उन का शारीरिक शोषण के लिए उन्हें नक्सली बनाए हुए हैं. इस वजह से नक्सलवाद के प्रति उन में गुस्सा है और वे सरैंडर करने की दिशा में ज्यादा सोचने लगी हैं. पुलिस का दबाव भी काम कर रहा है.

बस्तर के आईजी विवेकानंद सिन्हा कहते हैं, "स्थानीय आदिवासियों का माओवाद से मोह भंग हो रहा है. अब नक्सवाद आखिरी सांसें गिन रहा है." ●

सरस सलिल

बहू पूछती है सवाल

सूर्यनाथ प्रसाद

बात मेरे बेटे की शादी के समय की है. मैं पूरे परिवार के साथ लड़की देखने गया था. हम सब ने लड़की देखी और हमें लड़की पसंद भी आ गई. हम ने रिश्ता पक्का कर लिया. सभी एकदूसरे से बातें करने और लड़की के साथ फोटो खिचवाने में बिजी थे.



मेरे पास ही लड़के के पिताजी बैठे थे. हम दोनों आपस में बातें कर रहे थे. मैं ने बातें करतेकरते कहा, "आजकल लड़कियों की तादाद लड़कों से कम होती जा रही है. अगर लड़कियों की हो रही भ्रूण हत्या नहीं रोकी गई तो धरती से लड़कियों को खत्म होने में समय नहीं लगेगा.

"इस के लिए आदमी ही नहीं, बल्कि औरतें भी कम जिम्मेदार नहीं हैं, क्योंकि उन के अंदर भी कहीं किसी कोने में एक बेटे की मां कहलाने की लालसा छिपी होती है. औरतें कन्या भ्रूण हत्या पर इतनी लाचार और बेबस बन कर चुप्पी क्यों साध लेती हैं?

"जब औरतों में खुद बेटी पैदा करने की चाह बलवती होगी, जिस दिन से वे बेटी या बेटे में फर्क करना छोड़ देंगी, तब कहीं जा कर इस समस्या का हल निकल सकता है. मगर इस के लिए औरतों को आगे आना होगा."

मेरी बातें वह लड़की बड़े गौर से सुन रही थी.

शादी के दिन जब वरमाला का वक्त आया तो लड़की ने वरमाला डालने से पहले लड़के से पूछा, "आप शादी के बाद बच्चा होने पर बेटी हो या बेटा, भेदभाव तो नहीं करेंगे या बेटी होने पर गर्भपात तो नहीं कराएंगे?"

मेरे बेटे ने ऐसा न करने की बात कही.

बहू के मुंह से यह सुन कर मुझे बहुत खुशी हुई और यह बात मेरे दिल को छू गई. उस दिन के बाद से हमारे गांव में यह परंपरा शुरू हो गई. हर लड़की वरमाला डालने से पहले यह बात अपने दूल्हे से जरूर पूछती है कि वह बेटी और बेटे में फर्क तो नहीं करेगा? ●

MK MAGAZINE KING

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति एवं मान्यता प्राप्त चिकित्सक

लाइफटाइम एचीवमेन्ट अवार्ड से लन्दन में सम्मानित

एकमात्र असली डिग्री धारक-लन्दन व अमेरिका में सम्मानित

INTERVIEW

आयुर्वेद के गुण

डॉ० पी. के. जैन से

B.S.c.(Lko. Univ.), Ayurvedacharya(Delhi), M.R.S.H. (London),M.W.A.S.(USA)

Dr. P.K. Jain's Group of Health Care Lucknow

मर्दाना कमजोरी * शीघ्रपतन * शुक्राणुहीनता * अंगों का सिकुड़ापन



डॉ.पी.के.जैन को लन्दन में लार्ड विस्काउन्ट स्लिम (मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स/ब्रिटिश गवर्नमेंट द्वारा लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय डाक्टर, डॉ. पी.के. जैन को सबसे लोकप्रिय कामयाब एवं वैज्ञानिक इलाजों के लिए Jain TV ने आमंत्रित किया तथा अपोलो हॉस्पिटल दिल्ली के वरिष्ठ यूरोलॉजिस्ट ने इस विषय पर डॉ. साहब से चर्चा की। इस विधा के सबसे सफलतम चिकित्सक डॉ. पी.के. जैन साहब को सर्च वेबसाइट www.google.co.in ने अपनी रैंकिंग में टॉप यौन रोग विशेषज्ञ में रखा है। प्रस्तुत हैं उन से एक भेंट वार्ता:



डॉ.पियूष जैन अमेरिकी राजदूत सर स्टीवन क्वाइट से प्राईड ऑफ इण्डिया अवार्ड प्राप्त करते हुए

❖आपके अनुसार कमजोरी क्यों होती है, इनके लक्षण क्या हैं और इनको दूर करने से रोगी क्या-क्या लाभ उठाता है?

अज्ञानतावश प्रायः कुछ लोग अपने अमूल्य रत्न वीर्य को अत्यधिक नष्ट कर देते हैं एवं रोगी पहले मानसिक कमजोरी एवं पौरूषहीनता महसूस करता है। अतः यौन शक्ति एवं स्वास्थ्य का दिनों दिन घटना प्रमुख लक्षण है। हमारे इलाज द्वारा निरन्तर स्वास्थ्य वृद्धि, आत्मविश्वास का बढ़ना तथा पौरूष शक्ति बढ़ती है।

❖डा0 साहब, आप डा0 पी. के. जैन क्लीनिक प्रा0लि0 के डायरेक्टर हैं तो आप बांसमंडी क्लीनिक और महाराणा क्लीनिक, दोनों जगह मरीजों से एक साथ कैसे मिलते हैं?

एक इन्टरनेशनल क्लीनिक के डायरेक्टर होने के नाते मेरा सबसे बड़ा कर्तव्य है कि अपनी फैक्ट्री में बनने वाली दवाओं की गुणवत्ता विश्वस्तरी हो और मरीज को ज्यादा से ज्यादा लाभ हो अतः मेरा ध्यान दवाइयों के निर्माण पर रहता है। महाराणा क्लीनिक के हेड डॉक्टर पियूष जैन हैं और बांसमण्डी क्लीनिक के हेड डॉक्टर संचय जैन हैं। इनके अलावा मेरे निर्देशानुसार बांसमण्डी एवं महाराणा क्लीनिक में बेहद कुशल एवं क्वालीफाइड टीम पूरी तन्मयता के साथ मरीजों को पूर्णतया संतुष्ट करने की पूरी कोशिश करती है।

❖डॉ. साहब, कृपया अपने विश्व के एकमात्र सफल लिंग वृद्धि कोर्स के बारे में जानकारी दें?

यह कोर्स मेरे वर्षों के अनुभव के आधार पर स्वनिर्मित अनमोल दवाओं (स्वर्ण, हीरक तथा रजत भस्मों) का ऐसा खजाना है जिनका प्रयोग करने पर आप अनुभव करेंगे चार बहुत महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन. 1. लिंग की संख्ती में वृद्धि, 2. सेक्स के दौरान ज्यादा देर तक जोश बना रहना, 3. वीर्य स्खलन की मात्रा तथा समय में वृद्धि, 4. सेक्स के लिए किसी भी उम्र में भरपूर इच्छा और जोश कायम रहना।

❖डॉ. साहब, मैंने पढ़ा है कि आपको 'इन्टरनेशनल लाइफ टाइम एचीवर' अवार्ड' प्राप्त हुआ है? इसके अलावा आपको "भारत गौरव सम्मान" से सम्मानित किया गया। कब और कहां?

हां, लन्दन में मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स लार्ड विस्काउन्ट स्लिम द्वारा मुझे यौन रोगों के सफल एवं सबसे कामयाब इलाजों हेतु इन्टरनेशनल लाइफ टाइम एचीवर अवार्ड तथा नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री शाहनवाज हुसैन द्वारा भारत गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया है।



डॉ.संचय जैन अमेरिकन एम्बेसी के काउंसलेट जनरल सर पीटर कार्सनर से 'प्राइड आफ इण्डिया' अवार्ड प्राप्त करते हुऐ।

❖ लखनऊ में आपके मिलते-जुलते नाम से कई लोग डुप्लीकेट क्लिनिक में संलग्न हैं तो लोग आपके पास आने से पहले भटक न जायें इसके लिए लोगों को क्या करना चाहिए?

विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. पी. के. जैन जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सकों की श्रृंखला में आते हैं से मिलने के लिए हुसैनगंज, महाराणा प्रताप की मूर्ति वाले चौराहे पर, होटल 'मेरा मन' के बगल में है। क्लीनिक के बगल में होटल 'मेरा मन' देखकर आश्वस्त हो लें कि आप असली डॉ. पी. के. जैन महाराणा क्लीनिक पहुंच गये हैं। हमारी निःशुल्क पेशेन्ट मोबाइल वैन (एम्बुलेन्स) आपको माता मंदिर के सामने पार्किंग में सुबह 8.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक उपलब्ध रहती है। उसकी निःशुल्क सेवा प्राप्त कर सकते हैं। असुविधा होने पर मोबाइल नं0 9415402646 पर तुरन्त सम्पर्क कर सकते हैं। आज यौन रोग, निष्क्रियता, कमजोरी एवं संतानहीनता के लिए डॉ. पी. के. जैन का नाम अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सकों की श्रृंखला में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। डॉ. साहब के इलाज की सफलता को देखते हुए इलाज खर्च बिलकुल वाजिब है।

प्रस्तुति डॉ. नलिनी



Facts based on Ayurved shastra Results may vary Pertain to Person

विशेष नोट : झातव्य है कि डा० पी.के. जैन साहब को निम्न मर्जों के सबसे सफल इलाज के लिए लंदन एवं दिल्ली में कई बार सम्मानित किया		
यौन समस्या	संतानहीनता	(चर्म)यौन रोग
• पुरूषों में यौन कमजोरी, शीघ्रपतन, धातुरोग, स्वप्नदोष, इच्छा में कमी, सेक्स पावर में कमी का सफलतम इलाज। • स्त्रियों में सेक्स की इच्छा न होना, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर का सफल इलाज।	•शुक्राणुओं की कम संख्या (Oligospermia), गतिशीलता में कमी, शुक्राणुहीनता (Azoospermia), वीर्य न बनना या कमी होने पर सफल इलाज। (Asemenosis)	•सिफलिस (फिरंग,आतशक) •गोनोरिया सुजाक,प्रमेह
मानसिक यौन समस्यायें एवं हारमोनल इम्बैलेन्स पर भी हमारी दवाइयां पूर्ण कामयाब हैं		

इलाज खर्च 15,500/- (15 दिन) है हमारे यहां इन इलाजों के अलावा कुछ विशिष्ट इलाज भी किये जाते हैं जो कि 35,500/- तथा इससे ऊपर भी होते हैं जो कि रोग की दशा पर निर्भर करते हैं। हमारी दवाओं के कोर्स 30 दिन के होते है। डॉ0 साहब का पता नोट कर लें।

Subject to Lucknow Jurisdiction

ORIGINAL CLINIC AT LUCKNOW ONLY ESTD.1926

डा. पी. के. जैन'S महाराणा क्लीनिक प्रा0लि0



केवल हुसैनगंज चौराहे पर, महाराणा प्रताप की मूर्ति के ठीक सामने, निकट होटल "मेरा मन", लखनऊ

DR.PIYUSH JAIN
B.Sc.(Lko.Univ.), B.A.M.S. Ayurvedacharya (Vinoba Bhave Univ.) M.R.S.H. (London)

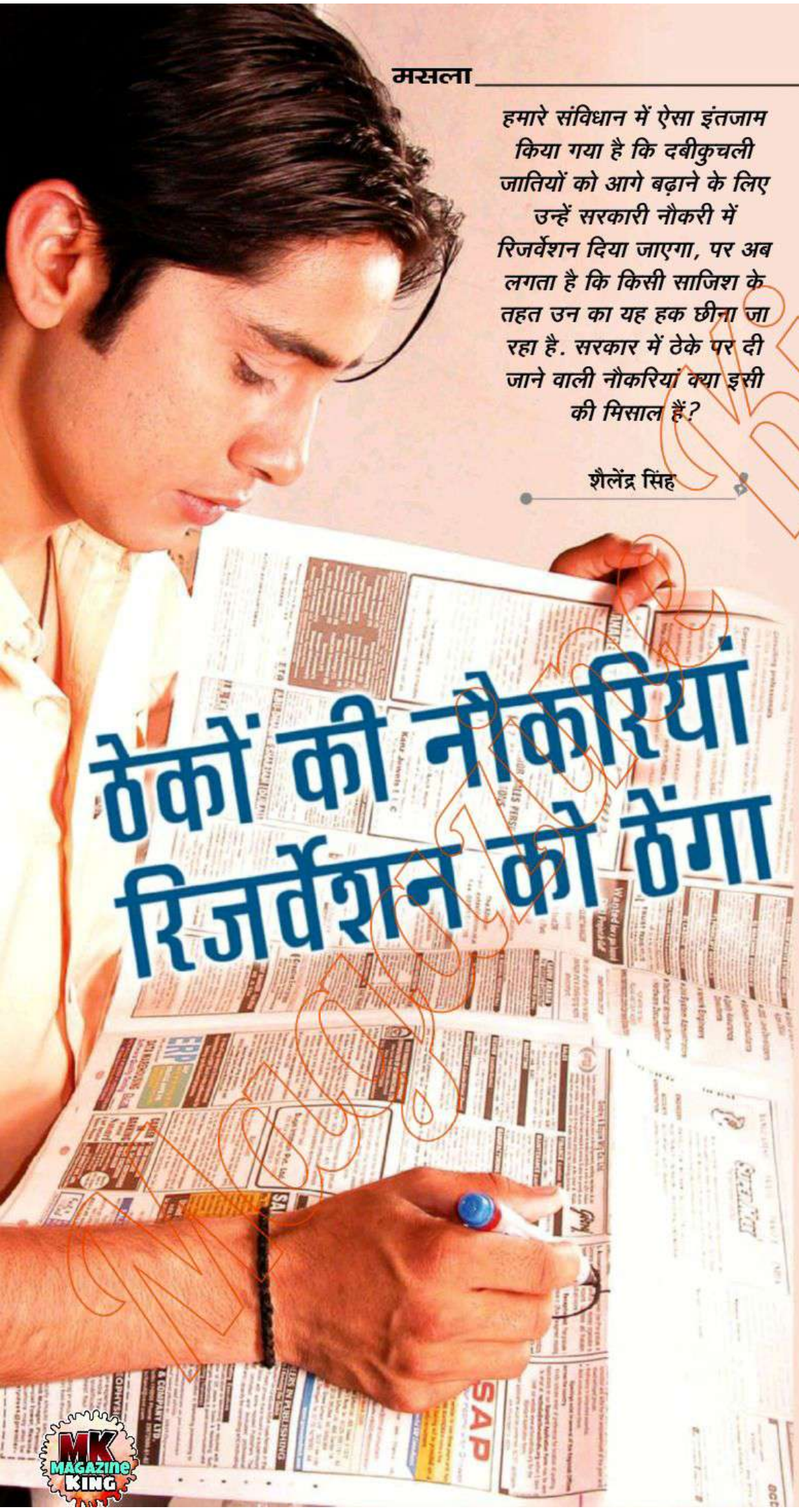
Mobile:9415027773, 9415402646, 9838599444
Phone :0522-2637823, 0522-2681417, 0522-2638932
visit us at : www.drpkjainclinic.com E-mail: drsanchay@rediffmail.com drpiush@rediffmail.com

DR.SANCHAY JAIN
B.Sc.(Lko.Univ.), B.A.M.S. Ayurvedacharya (Topper of Nagpur Univ.) M.R.S.H. (London)

असुविधा से बचने के लिये मोबाइल पर एपाइन्टमेन्ट अवश्य ले लें। विस्तृत जानकारी के लिये डाक्टर साहब से मिलें

एशिया का नं० 1 टॉप अल्ट्रामॉर्डन क्लीनिक

MK MAGAZINE KING



हमारे संविधान में ऐसा इंतजाम किया गया है कि दबीकुचली जातियों को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें सरकारी नौकरी में रिजर्वेशन दिया जाएगा, पर अब लगता है कि किसी साजिश के तहत उन का यह हक छीना जा रहा है. सरकार में ठेके पर दी जाने वाली नौकरियां क्या इसी की मिसाल हैं?

शैलेंद्र सिंह

ठेकों की नौकरियां रिजर्वेशन को ठेंगा

ठेकों व आउटसोर्सिंग के जरीए कर्मचारियों को रख कर आरक्षण की संवैधानिक व्यवस्था को दरकिनार किया जा रहा है. दलितों और पिछड़ों को नौकरियों में दरकिनार करने की सोच को समझते हुए वे लोग निजी क्षेत्रों में नौकरियों की मांग करने लगे हैं.

साल 2019 में उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग में ठेके पर कंडक्टर की भरती का विज्ञापन निकला. लखनऊ और मेरठ में इस की भरती प्रक्रिया शुरू की गई. इस के तहत लखनऊ में 85 और मेरठ में 162 पदों पर भरती होनी है.

आजकल परिवहन विभाग में स्थायी नौकरियों की जगह पर ठेकों पर भरतियां होती हैं. आवेदक की योग्यता 12वीं पास मांगी गई. आयु सीमा 18 साल से 40 साल के बीच रखी गई थी. आवेदन फीस के रूप में सामान्य वर्ग के लिए 200 रुपए और आरक्षित वर्ग के लिए 100 रखी गई थी. पूरी प्रक्रिया में आरक्षण का कही भी जिक्र नहीं था.

चुने जाने के बाद नौकरी पाने वाले को 10,000 रुपए परिवहन निगम के खाते में जमा कराने होंगे. इस के बाद 15 दिन की ट्रेनिंग दी जाएगी. इस दौरान कोई तनख्वाह नहीं दी जाएगी. ठेके पर रखे जाने वाले कंडक्टरों का भुगतान किलोमीटर के हिसाब से किया जाएगा. कितने रुपए प्रति किलोमीटर भुगतान होगा, इस बात की जानकारी भी नहीं दी गई थी.

उत्तर प्रदेश स्वास्थ्य विभाग में साल 2019 में ही 8,000 महिला स्वास्थ्य कर्मियों की भरती के लिए घोषणा की गई थी. इस में भी ठेके पर नौकरी देने की बात कही गई थी. इस के बाद यह प्रक्रिया कैंसिल कर दी गई. इस की वजह यह बताई गई कि 540 पदों पर भरती प्रक्रिया में कोर्ट की रोक लग गई.

ठेकों पर नौकरी के लिए उत्तर प्रदेश स्वास्थ्य विभाग में ही 4,688 पदों पर भी भरती प्रक्रिया शुरू की गई. इस के तहत एएनएम, लैब टैक्नीशियन, लैब असिस्टैंट , पीआरओ और स्टाफ नर्स की भरती का विज्ञापन निकाला गया. इन सभी की नियुक्तियां भी ठेके पर होनी हैं.

ठेके पर होने वाली भरतियां भी कई बार कैंसिल कर दी जाती हैं. ठेके पर होने वाली भरतियों के कई बार विज्ञापन नहीं दिए जाते. विभागीय आधार पर भरतियों को शुरू कर दिया जाता है. इन के लिए अब सीधी भरती न कर के किसी आउटसोर्सिंग एजेंसी के जरीए लोगों को भरती किया जाता है. इस से विभागों में सीधे ठेके पर नौकरियां भी खत्म हो रही हैं.

सरस सलिल

चुनाव में भरती के ऐलान

नौकरी भरती के ऐलानों को देखें, तो साफ दिखता है कि चुनाव के समय नौकरी के ऐलान ज्यादा होते हैं. कई बार चुनाव खत्म होते ही या तो जौब भरतियां कैंसिल हो जाती हैं या नौकरी की लिखित परीक्षा में पेपर आउट हो जाता है. नौकरी पर रोक लग जाती है. ठेके पर नौकरी का ऐलान करना और कैंसिल होना ज्यादा आसान होता है.

सरकारी विभागों में स्वीकृत पदों में अनुमानित तौर पर 50 फीसदी पद खाली चल रहे हैं. सरकार न तो स्वीकृत पदों पर स्थायी कर्मचारियों की नियुक्तियां कर रही हैं और न ही स्वीकृत पदों की संख्या को बढ़ा रही हैं. इस की वजह यह है कि सरकार और उस से जुड़े तमाम विभागों में काम करने वालों की तादाद में तेजी से कमी आई है.

सरकार अब ज्यादा काम ठेकों यानी संविदा पर लोगों को रख कर ले रही है. इस की सब से बड़ी वजह यह है कि सरकार आरक्षण के झंझट में नहीं पड़ना चाहती है. इस की वजह से नियमित होने वाले काम भी अब ठेकों पर होने लगे हैं.

सरकार आरक्षण को खत्म करने के लिए सरकारी नौकरियों को ही खत्म करती जा रही है. अदालत के आदेश के बाद भी सरकार ठेकों पर नौकरियों को रोक नहीं रही है.

हर सरकारी विभाग में होने वाली नौकरियों में ठेकों पर नियुक्तियां स्थायी रूप से होने लगी हैं. ठेकों पर नियुक्तियां एक कानूनी प्रक्रिया होती है. ठेकों की नियुक्ति में कर्मचारी और विभाग के बीच एक कौंट्रैक्ट होता है, जिस के तहत काम होता है.

सरकार ने ठेकों के संबंध में नियमकानून बनाए हैं. इस को भारतीय संविदा अधिनियम 1872 के नाम से जाना जाता है. इस के तहत भरती करने में तय भरती प्रक्रिया का पालन नहीं होता है. ठेकों के तहत भरती होने वाले कर्मचारी की काम करने की शर्तें स्थायी कर्मचारियों वाली होती हैं. कई बार उन से अधिक क्षमता के काम भी लिए जाते हैं, पर मानदेय और तनख्वाह के नाम पर दोनों के बीच बहुत फर्क होता है.

तनख्वाह की सुविधाओं में फर्क

ठेकों पर रखे गए कर्मचारी को तनख्वाह तो कम मिलती ही है, कोई दूसरी सुविधाएं जैसे मैडिकल, बीमा, बोनस, पैंशन भी नहीं मिलती है. अगर काम करने की जगह ठेकों पर रखें गए कर्मचारी की मौत हो जाती है तो भी विभाग किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं लेता है. यहां पर सरकार संविधान के 'समान काम समान वेतन' के नियम को लागू नहीं करती.

उदाहरण के रूप में उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग में नियुक्त किए गए 'शिक्षा मित्र' एक तरह से ठेकों पर काम करने वाले ही थे. 'शिक्षा मित्र' के तौर पर पढ़ाने वाले को 19,000 रुपए हर महीने तनख्वाह मिलती है और स्थायी अध्यापक को शुरुआती दौर में ही 40,000 रुपए हर महीने मिलते हैं.

'शिक्षा मित्र' कोर्ट से ले कर सरकार तक कई बार अपनी बातें मनवाने के बाद इतना पाने लगे हैं. पहले उन को 10,000 की जगह पर 3,200 रुपए हर महीने ही मिलते थे.

स्थायी कर्मचारी और ठेके पर लगे कर्मचारी के बीच तनख्वाह और सुविधाओं में फर्क आपस में लड़ाईझगड़ों को बढ़ाता है. काम करने में आपसी खींचतानी होती है, जिस का असर काम की क्वालिटी पर पड़ता है.

शिक्षा विभाग में केवल स्कूल लैवल पर ही यह भेदभाव नहीं होता है, बल्कि कालेज और यूनिवर्सिटी लैवल पर भी यह भेदभाव होता है. कालेज और यूनिवर्सिटी में स्थायी कर्मचारी के साथ ही साथ काम करने के लिए गैस्ट लैक्चरर की नियुक्ति होने लगी है, जो असल में ठेकों पर रखा गया टीचर ही होता है.

ठेकों पर लगने वाले कर्मचारी किसी एक विभाग या एक प्रदेश तक सीमित नहीं हैं, पूरे देश का एकजैसा ही हाल है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की थी कि सभी पद स्थायी होंगे, लेकिन उस के बाद भी ठेकों पर लगे कर्मचारी और स्थायी कर्मचारी अलगअलग काम कर रहे हैं.

मंडल आयोग और ठेके पर नियुक्तियां

सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्ग को आरक्षण देने के लिए उस समय के प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मंडल कमीशन लागू किया था, जिस का बड़े पैमाने पर पूरे देश में विरोध हुआ था.

भारतीय जनता पार्टी ने उस समय राम मंदिर मुद्दे को आगे किया था. इस को राजनीति की भाषा में 'मंडल बनाम कमंडल' कहा गया था. साल 1992 के बाद सरकारी नौकरियों में दलित और पिछड़ों की भरती के लिए विशेष भरती अभियान शुरू हुए थे. ऐसे में सवर्ण वर्ग को सरकारी नौकरी मिलने में बाधा पैदा होने लगी.

उत्तर प्रदेश में साल 1993 में



सपाबसपा की सरकार बनी, तो दलित और पिछड़ों के लिए सरकारी नौकरियों में विशेष भरती अभियान शुरू हुआ. सामाजिक रूप से इस का असर पड़ने लगा. सवर्ण और दलितपिछड़े एकदूसरे के मुकाबले खड़े होने लगे. इस का राजनीतिक असर भी पड़ने लगा, जिस की वजह से सवर्ण राजनीतिक रूप से हाशिए पर चले गए.

मंडल कमीशन लागू होने के 27 साल बाद तक उत्तर प्रदेश में सवर्ण जाति के मुख्यमंत्री प्रभावी भूमिका में नहीं रहे. अपवाद स्वरूप केवल राम प्रकाश गुप्ता और राजनाथ सिंह 3 साल ही मुख्यमंत्री रह सके. इन के मुकाबले दलित और पिछड़ी बिरादरी के मुख्यमंत्रियों ने ही कुरसी को संभालने का काम किया. इन में कल्याण सिंह 2 बार, मुलायम सिंह यादव 3 बार, मायावती 4 बार और अखिलेश यादव एक बार मुख्यमंत्री रहे.

जिस समय राजनाथ सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने, तब शिक्षा विभाग में 'शिक्षा मित्र' की भरती का अभियान चलाया गया. 'शिक्षा मित्र' के पद पर नियुक्ति के लिए केवल मैरिट का नियम बनाया गया. आरक्षण व्यवस्था को लागू नहीं किया गया.

'शिक्षा मित्र' की भरती में बड़े पैमाने पर सवर्णों को नियुक्त किया गया. भले ही स्थायी शिक्षक और 'शिक्षा मित्र' शिक्षक के बीच तनख्वाह और सुविधाओं में भारी अंतर था, पर नौकरी मिलने पर सुकून था.

यहां से ही शिक्षा विभाग के साथ ही साथ दूसरे सरकारी विभागों में ठेकों पर नियुक्त होने का रास्ता खुल गया. स्वास्थ्य विभाग, ऊर्जा, समाज कल्याण, सिंचाई जैसे तमाम बड़े विभागों में भी ठेकों पर कर्मचारी नियुक्त होने लगे. स्थायी सरकारी नियुक्तियां बंद होने से आरक्षण को दरकिनार करना मुमकिन होने लगा. केवल छोटे पदों पर ही नहीं, बल्कि इंजीनियर, डाक्टर और लैक्चरर जैसे बड़े पदों पर भी ठेकों पर नौकरियों में लोग रखे जाने लगे.



ठेकों के बाद आउटसोर्सिंग

एक तरफ ठेकों पर लगे कर्मचारी 'समान काम समान वेतन' की मांग को ले कर आंदोलन कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कह रहे हैं कि सभी पद स्थायी होंगे. इन दोनों के बीच सच यह है कि अब सरकारी विभागों में ठेकों पर कर्मचारी रखने से भी छुटकारा पाने के लिए आउटसोर्सिंग शुरू हो गई. ऐसे में एक ही विभाग में 3 तरह के कर्मचारी काम करने लगे हैं.

पहले स्थायी कर्मचारी हैं, दूसरे संविदा कर्मचारी हैं और तीसरे लैवल पर आउटसोर्सिंग वाले कर्मचारी हैं. ठेकों पर लगे कर्मचारी भी अपनी सेवाशर्तों पर ही काम करते थे. आउटसोर्सिंग कर्मचारियों के बीच में विभाग सीधे कोई करार नहीं करता है. इस में आउटसोर्सिंग एजेंसी होती है. वह विभाग से कर्मचारियों की सेवाशर्तों पर करार करता है.

सरकारी विभाग आउटसोर्सिंग कर्मचारी को जो तनख्वाह देता है, उस में से कुछ हिस्सा कमीशन के रूप में आउटसोर्सिंग कंपनी को भी जाता है.

आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की हालत संविदा कर्मचारियों से भी बुरी होती है. विभाग आउटसोर्सिंग कंपनी को आउटसोर्सिंग कर्मचारी देने का ठेका देती है. यह वैसे ही होता है, जैसे पहले माल सप्लाई या औफिस की जरूरतों के सामान को सप्लाई करने का ठेका दिया जाता था.

आउटसोर्सिंग कंपनियां आने से कर्मचारियों का शोषण और भी ज्यादा बढ़ गया है. अब बिना आरक्षण के ही सरकारी औफिसों में काम करने वाले लोग इस तरह से रखे जा रहे हैं. ऐसे में सरकारी नौकरियों में आरक्षण दे कर कमजोर जातियों को सामाजिक रूप से बराबरी का दर्जा देने की सोच के मुताबिक नहीं किया जा रहा है. यह बात दलित और पिछड़े तबके के चिंतकों को पता है.



राजनीतिक और सामाजिक हैं फैसले

दलित नेता आरके चौधरी कहते हैं, "हम लंबे समय से निजी क्षेत्र में आरक्षण की मांग कर रहे हैं. हमें पता है कि सवर्ण विचारधारा से जुड़ी सरकारें सरकारी नौकरी के पदों को लगातार खत्म करती जा रही हैं. ऐसे में एक समय सरकारी नौकरियां पूरी तरह से खत्म हो जाएंगी. जब आरक्षण अपनेआप ही खत्म हो जाएगा. पूरी दुनिया में ऐसे ही आरक्षण व्यवस्था को खत्म करने की कोशिश की गई.

"दूसरे तमाम दलित चिंतक मानते हैं कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण को सोचीसमझी राजनीति के तहत खत्म किया जा रहा है. इन की वजहें राजनीतिक और सामाजिक हैं. संविधान बनाने वाले बाबा साहब भीमराव अंबेडकर मानते थे कि सामाजिक समरसता के लिए दलितपिछड़ों की जिंदगी माली तौर पर मजबूत बनाना जरूरी है. इस वजह से ही सरकारी नौकरियों और चुनावों में दलितपिछड़ों को आरक्षण दिया गया.

आज के समय में जहां पर अमीरी है, वहां जातीय भेदभाव और छुआछूत कम ही देखने को मिलता है. जहां पर गरीबी और बेकारी है, वहां पर भेदभाव और छुआछूत भी पहले की तरह कायम है.

आरक्षण के जरीए सरकारी नौकरियां और सरकारी नौकरियों की वजह से समाज में बराबरी का दर्जा मिलने लगा था. पहले ठेकों पर और बाद में आउटसोर्सिंग के जरीए आरक्षण की व्यवस्था में सेंधमारी की जा रही है, जिस से आरक्षण को खत्म किए बिना ही आरक्षण की उपयोगिता को खत्म किया जा सके.

इन में सब से ज्यादा असर गरीब वर्ग के दलित और पिछड़ों पर पड़ रहा है. संपन्न किस्म के दलित और पिछड़ों के बच्चे अब बड़े स्कूलों में पढ़ने लगे हैं, जिस से वे कंपीटिशन के जरीए होने वाले इम्तिहानों में कामयाब हो जाते हैं. छोटी नौकरियां करने वाले दलित और पिछड़ों पर ही ठेकों और आउटसोर्सिंग का असर सब से ज्यादा पड़ रहा है. ऐसे में ये तबके ही पीछे रह जा गए हैं. ●

MK MAGAZINE KING

नासमझी

दुनिया कोरोना से जूझ रही है ये बेच रहे शराब



नंगी आंखों से न दिखने वाले एक वायरस ने पूरी दुनिया में तबाही मचाई हुई है. हर देश में मातम सा छाया है, लोग अनजाने डर की गिरफ्त में हैं, न जाने कितने अपनी जान गंवा चुके हैं, पूरा संसार ठप हो चुका है, लोग अपने घरों में दुबके हैं, जो बेघर हैं, उन्हें भी अपनी जान की फिक्र है, दो वक्त की रोटी का इंतजार है. इस के बावजूद बहुत से ऐसे असामाजिक तत्त्व हैं, जो अब भी शराब जैसी सामाजिक बुराई की गैरकानूनी सप्लाई कर रहे हैं.

देश की राजधानी नई दिल्ली से सटे हरियाणा में ही, फरीदाबाद जिले को ही देख लें. फरीदाबाद जिले के बल्लभगढ़ में तिगांव थाना पुलिस ने गांव मंझावली में 28 मार्च की शाम को दबिश दे कर देशी शराब ठेके के एक मुलाजिम और 2 ग्राहकों को गिरफ्तार कर केस दर्ज किया.

इसी तरह बल्लभगढ़ में ही क्राइम ब्रांच सैक्टर 65 की टीम ने शहर की भूदत्त कालोनी में 29 मार्च को सरेआम कार में गैरकानूनी तरीके से शराब बेच रहे एक नौजवान को गिरफ्तार कर लिया. उस के पास से अंगरेजी शराब की 10 पेटियां बरामद हुईं.

क्राइम ब्रांच सैक्टर 65 के हैड कांस्टेबल संदीप ने बताया कि वे पुलिस टीम के साथ गश्त कर रहे थे कि एक मुखबिर ने उन्हें बताया कि संदीप नाम का एक आदमी किसी प्राइवेट स्कूल के पास कार में शराब बेच रहा है. पुलिस ने वहां दबिश दी और संदीप को धर दबोचा.

फरीदाबाद से सटे हथीन इलाके में बहीन थाना पुलिस ने निषेधाज्ञा के दौरान एक आदमी को गिरफ्तार कर उस के पास से अवैध देशी शराब पकड़ी.

इसी तरह से बल्लभगढ़ इलाके के एक गांव सागरपुर में पुलिस ने शराब की 29 बोतलें बरामद कीं.

इस सिलसिले में एएसआई अजय कुमार ने बताया कि मिली खबर के मुताबिक पुलिस उस दुकान पर पहुंची, जहां से यह शराब बेची जा रही थी. वहां एक आदमी शराब लेने आया. दुकानदार ने दुकान के शटर के नीचे से उसे शराब का एक अद्धा पकड़ा दिया. बस, तभी पुलिस ने उस दुकानदार को पकड़ लिया.

ये तो थे पुलिस की शाबाशी के काम, पर बल्लभगढ़ में ही एक वरदीधारी ने लौकडाउन के दौरान कार में बैठ कर शराब पी और लोगों को डरायाधमकाया भी.

रविवार, 29 मार्च का यह मामला बल्लभगढ़ के मलेरना रोड का था, जहां एक पुलिस वाला अपने 3 साथियों के साथ कार में बैठ कर शराब पीता हुआ मिला. इतना ही नहीं, वह हंगामा भी कर रहा था. आतेजाते लोगों को परेशान कर रहा था.

जब दूसरे पुलिस वाले वहां पहुंचे तो वह उन से भी उलझने लगा. पुलिस की चैकिंग में दिल्ली से शराब की बोतल, गिलास और कुछ फल भी मिले. इतने में वह पुलिस हवलदार वहां से भाग गया.

लोकल लोग दबी जबान में बोल रहे थे कि वहां गई पुलिस ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की, जबकि पुलिस बोल रही है कि उस हवलदार की पहचान कर ली गई है और उस पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी. – सुनील ●

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE



दाद को दे मात फिनोल की शक्ति के साथ ट्रिपल एक्शन और दाग रहित

दाद, खाज, खुजली, गंजापन और फंगल इंफैक्शन के लिए

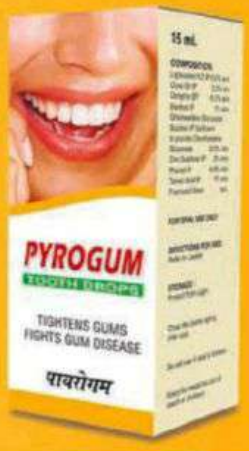


ऐंटीसेप्टिक एवं दर्द निवारक जैल

मुँह के छालों का सफाया

मुँह के छाले, मसूड़ों मे सूजन, नकली दांतो से मसूड़ों के छाले, बच्चों के दूध के दांत से मसूड़ों में खुजली

दांतो का डाक्टर पायरोगम



पायरोगम ऐंटीसैप्टिक हीलिंग लिक्विड है जो मुँह के कीटाणुओं को नष्ट कर आप को इंफैक्शन से बचाता है, डेमेज टिश्यू की मरम्मत कर कीटाणुओं को पनपने से रोकने के साथ दांतों को पायरिया से बचाता है.

दांतों की पूरी केयर करने में सक्षम

पायरिया, दांत में दर्द, कमजोर दांत, बैड ब्रैथ, गले में दर्द, दांतों में इंफैक्शन, मसूड़ो से खून निकलना आदि में सहायक

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फ्रोन : 8447977889/999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com
www.suncareformulations.com
फ्री होम डिलीवरी 8447977999

सुनील शर्मा

कोरोना : घर में रहें इम्युनिटी बढ़ाएं

'अर्जुन अवार्ड' विजेता और ओलिंपिक खेलों में भारत का मान बढ़ाने वाले मुक्केबाज मनोज कुमार ने कोरोना महामारी से बचने के लिए सब से घर में रहने की अपील की है. उन का कहना है कि जब घर में ही परिवार के साथ रहना है तो सेहतमंद चीजों का सेवन करें और रोजाना कसरत जरूर करें. ऐसी कसरतें चुनें, जिन का आप के पूरे शरीर पर अच्छा असर पड़े.

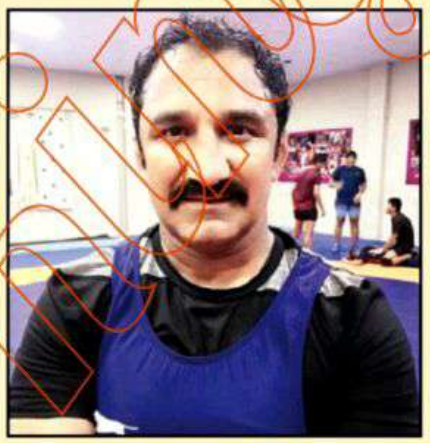
बचपन में आप ने खूब रस्सी कूदी होगी, जिसे स्किपिंग कहते हैं. इस कसरत में बस एक रस्सी की जरूरत होती है, पर यह रस्सी कूदना बहुत फायदेमंद होता है. इस के अलावा अपने शरीर का खयाल रखें, शासन और प्रशासन के कहे मुताबिक रहें, बेवजह घर से बाहर न जाएं.

डाइटीशियन नेहा सागर का मानना है कि कोरोना से मजबूती से लड़ने के लिए हमें अपने शरीर की इम्युनिटी को बढ़ाने की जरूरत है. इस के लिए विटामिन सी से भरपूर चीजों का सेवन करें. यह सभी तरह के खट्टे फलों, पपीता और लाल शिमला मिर्च में पाया जाता है. अगर कहीं लौकडाउन के चलते सब्जियों या फलों की कमी हो गई है तो विटामिन सी के सप्लीमैंट भी ले सकते हैं.

विटामिन सी के अलावा दूसरी चीजों जैसे लहसुन, अदरक और ग्रीन टी का भी सेवन कर सकते हैं. खाली पेट लहसुन की कली का सेवन करने से इम्युनिटी बढ़ती है.

विटामिन डी भी इन हालात में जरूरी है. चूंकि अभी ज्यादातर लोग घर पर ही हैं तो वे उतना ही खाएं जो आसानी से पच सके. शराबसिगरेट के सेवन से बचें.

इस की वजह यह है कि इन के सेवन से शरीर की बीमारियों से लड़ने की ताकत कम होती है. सिगरेट पीना तो इसलिए हानिकारक है, क्योंकि यह हमारे गले के साथसाथ फेफड़ों पर भी बुरा असर डालती है.



भारतीय रेलवे कुश्ती टीम के कोच और इंटरनैशनल रैफरी कृपाशंकर बिश्नोई ने इस लौकडाउन में सब को दंडबैठक करने की सलाह दी है.

उन का मानना है कि अगर लोग घर पर दंडबैठक भी कर लेते हैं, तो उन्हें किसी और वर्कआउट की जरूरत नहीं है. दंडबैठक सभी कसरतों का राजा है और इस से आप की फिटनैस का लैवल बढ़ता है.

मुंबई में आइडियल बौडी (आईबी) फिटनैस नामक जिम चलाने वाली और प्रोफैशनल पर्सनल ट्रेनर अंजू गुप्ता ने बताया कि कोरोना संक्रमण के कहर से बचने के लिए लोगों को अपनी इम्युनिटी पावर बढ़ाने वाली ऐसी चीजों का सेवन ज्यादा करना चाहिए जैसे फल, सूखे मेवे, सब्जियां और ऐसी चीजें भी जिन में विटामिन सी की प्रचुरता हो, जैसे नीबू, अदरक, संतरा वगैरह.



जहां तक कसरत करने की बात है तो लोगों को ऐसे काम जयादा करने चाहिए, जिन से उन का दिल मजबूत बने, ताकि उन का ब्लडप्रैशर सही रहे. घर के काम जैसे साफसफाई, कपड़े धोना भी बिना किसी जिम के उपकरण के करने वाली कसरत ही मानी जाएगी. बौडी स्ट्रैचिंग भी जरूरी है. साथ ही, अपने मन को भी शांत रखें.

इस के अलावा उन कसरतों को ही ज्यादा करें जिन में फ्लोर और आप की बौडी की ही जरूरत हो, इस विपदा में आप का घर में रहने के साथसाथ सेहतमंद रहना भी जरूरी है. ●

सरस सलिल



कोरोना एक मौत के डर से मरा दूसरे ने मौत को दी मात

संवाददाता

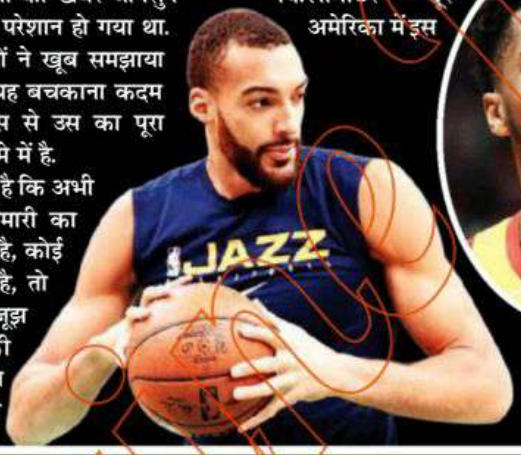
फरीदाबाद में आज 4-5 दिनों के बाद सुबह दरवाजे पर अखबार की 'धपाक' हुई तो एक सुकून सा मिला कि अब छपी हुई खबरों से देशदुनिया को जानेंगे, पर जब खबरें पढ़ीं तो लगा जैसे किसी क्लिनिक में रखी कोई हैल्थ मैगजीन को पलट रहा हूं. हर पन्ने पर कोरोना महामारी से जुड़ी खबरें.

लेकिन एक छोटी सी खबर के बड़े असर ने सोचने पर मजबूर कर दिया. मामला हरियाणा के बल्लभगढ़ के छांयसा इलाके में गड़खेड़ा गांव का है, जहां 27 मार्च को 40 साल के एक आदमी ने कोरोना के डर से फांसी लगा कर अपनी जिंदगी खत्म कर ली, जबकि उसे या उस के परिवार में तो किसी को यह बीमारी हुई भी नहीं थी.

पद्म सिंह नाम का वह किसान हर रोज कोरोना की खबरें जानसुन कर बहुत ज्यादा परेशान हो गया था. उस के घर वालों ने खूब समझाया भी, पर उस ने यह बचकाना कदम उठा लिया, जिस से उस का पूरा परिवार अब सदमे में है.

सवाल उठता है कि अभी जब कोरोना बीमारी का कोई इलाज नहीं है, कोई पुख्ता दवा नहीं है, तो इस बीमारी से जूझ रहे लोगों की मानसिक हालत कैसी होती होगी? और उन लोगों की सोचिए, जो ऐसे लोगों की जान बचाने के लिए दिनरात लगे हुए हैं.

पद्म सिंह मानसिक रूप से कमजोर था और कोरोना से होने वाली संभावित तबाही से बुरी तरह घबरा गया था, पर हमारे देश से हजारों किलोमीटर दूर अमेरिका में इस बीमारी से पीड़ित नैशनल बास्केटबाल एसोसिएशन के 2 नामचीन खिलाड़ी रूडी गोबर्ट और डोनोवन मिचेल ठीक हो गए हैं.





यूटा जैज क्लब के हवाले से बताया गया था कि इन दोनों खिलाड़ियों का कोरोना टैस्ट पोजिटिव पाया गया था, लेकिन अब उन के अंदर कोई लक्षण नहीं है.

यह रूडी गोबर्ट और डोनोवन मिचेल की खेल भावना का ही असर है कि उन्होंने इस बीमारी का डट कर सामना किया और अपने जीतने के जज्बे को जिंदा रखा.



संवाददाता

कोरोना को तकनीक से मात?



क्या भारत में कोरोना का कहर तीसरी स्टेज में है? अभी यह कहना तो जल्दबाजी होगी लेकिन जिस तरह नोबेल पुरस्कार विजेता अभिजीत बनर्जी और इस्थेर डुफलो ने कहा है वह काफी चिंताजनक है.

उन्होंने कहा है कि कोरोना वायरस पर पार पाने के लिए और ज्यादा जागरूकता फैलानी होगी और चिकित्सा संबंधित मजबूत ढांचागत बुनियाद तैयार करना जरूरी है. अगर भारत में यह झुग्गीझोंपड़ी वाली बस्तियों में फैलता है तो वहां इस महामारी पर काबू पाना मुश्किल हो जाएगा.

अब जबकि पूरी दुनिया में कोरोना वायरस ने बहुत सी ज़िंदगियों को लील लिया है और भारत में इस के मरीजों की तादाद रोजाना बढ़ रही है तो क्या अब यह जरूरी हो गया है कि नई से नई तकनीक का इस्तेमाल किया जाए?

वैसे, विदेशों में कोरोना से बचने के लिए कई तरह की नई तकनीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है. कई एशियाई देश इस बीमारी से जूझ रहे मरीजों को एप से ट्रैक कर रहे हैं. इस में लोकेशन ट्रैकिंग बड़ा अहम रोल निभा रही है.

इजरायल ने अपनी सुरक्षा एजेंसी को यह हक दिया है कि वह अपने नागरिकों की लोकेशन का डाटा 30 दिनों तक इस्तेमाल कर सकती है. दक्षिण कोरिया, चीन और ताइवान ने भी लोकेशन ट्रैकिंग के जरीए ही वायरस के मामलों को रोका. जरमनी और इटली की सरकारों ने इस तकनीक से उन इलाकों का पता लगाया, जहां ज्यादा लोग जुटे थे.

इस के अलावा दूसरी तकनीक मोबाइल एप रहीं.

अमेरिका में एक एप लांच किया गया, जिस के माध्यम से लोग संक्रमण के लक्षण रिपोर्ट कर सकते हैं. इसे बहुत से लोगों ने डाउनलोड किया. दक्षिण कोरिया ने 'कोरोना 100 एम' नामक एप बनाया. इस से पीड़ित मरीज की लोकेशन पता चलती है. अगर वह पीड़ित किसी दूसरे के 100 मीटर के क्षेत्र में आता है, तो एप उसे अलर्ट कर देता है.



इसी तरह चीन में जो एप बनाया गया है, वह लोगों को उन की सेहत के मुताबिक खास रंग का कोड रहता है.

भारत में भी एक ऐसा एप 'आरोग्य सेतु' लांच कर दिया है, जो किसी यूजर को संक्रमित मरीज के पास आते ही अलर्ट कर देगा. यह मरीजों की लोकेशन भी ट्रैक करेगा.

इन तकनीकों के अलावा चीन ने तो बहुत से आइसोलेशन वार्डों में सिर्फ रोबोट ही इस्तेमाल किए थे. ऐसे रोबोट मरीजों का बुखार चेक करते थे, उन्हें दवा देते थे और साथ ही मरीजों को खाना भी देते थे.





चीन के अलावा इटली ने अपने कई शहरों में पुलिस ने जनता पर ड्रोन कैमरों से नजर रखी और लोगों को घरों में रहने की सलाह दी.

चूंकि यह महामारी चीन से शुरू हुई थी, इसलिए सब से ज्यादा तकनीकों का इस्तेमाल भी इसी देश ने किया. उस ने भीड़ में किसे बुखार है, इस की जांच के लिए थर्मल कैमरे का इस्तेमाल किया. यह थर्मल कैमरा ज्यादा तापमान वाले शख्स का पता लगाता है.

चीन ने तो चेहरा पहचानने की तकनीक का इस्तेमाल किया.

भारत के सुदूर दक्षिण भारत के राज्य केरल में पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे से संक्रमित लोगों की पहचान की. लेकिन चूंकि भारत एक बड़ा देश है और इस की ज्यादातर आबादी गांवों में बसती है, इसलिए नई तकनीकों का इस्तेमाल शहरों में ज्यादा किया जा सकता.

लिहाजा, फिलहाल तो सरकार के कहे मुताबिक लोगों को अपने घरों में बने रहना चाहिए और बेवजह बाहर नहीं निकलना चाहिए. ●

सरस सलिल

कोरोना महामारी में भी हंसी की फुलझड़ियां

बेशक चीन की देन कोरोना वायरस का नाम सुनते ही शरीर में झुरझुरी सी दौड़ जाती है. फिलहाल हालात बेकाबू से लगते हैं और जिस तरह लोग इस महामारी के खतरनाक असर को समझ नहीं पा रहे हैं, उस से तो आने वाले दिनों में कैसे हालात बनेंगे, उस की कल्पना भी नहीं की जा सकती है.

अब जबकि पूरा भारत लौकडाउन का दंश झेल रहा है, तो घर पर उस के साथी परिवार वाले तो हैं ही, पत्रिकाएं और पुस्तकें भी उसे सही राह दिखा रही हैं, फिर वे लोगों के घर में रखी हों या डिजिटल एडिशन ही सही.

सोशल मीडिया के जरीए सब हर तरह की जानकारी पा रहे हैं. इन में सच भी होता है तो अफवाहें भी. सरकार की तारीफ होती है तो उस की खिंचाई भी. लोगों की जान बचाते डाक्टरों के वायरल होते वीडियो हैं तो कहीं पुलिस की ज्यादती या दूसरे लोगों की कालाबाजारी के चर्चे भी उघाड़ दिए जाते हैं.



इन सब के बीच कुछ ऐसा मनोरंजन भी हो रहा है, जो कोरोना की महामारी के डर के बावजूद घर बैठे लोगों के चेहरे पर मुसकान ले आता है. बहुत बार तो खिलखिलाहट भी. ऐसे ही चंद चुटकुले हैं, जो सोशल मीडिया पर चकरघिन्नी की तरह घूम रहे हैं. इन में से कुछ खास इस तरह हैं :

कोरोना महामारी न फैले, इसलिए एक बार एक आदमी वर्किंग फ्रौम होम कर रहा था. उस का क्लाइंट किसी बात पर नाराज हो कर बोला, 'मैं आप के काम से खुश नहीं हूं. आप अपने बौस से मेरी बात कराइए.'

इतना सुनते ही वह आदमी जोर से चिल्लाया, 'अजी सुनती हो, ये जनाब तुम से बात करना चाहते हैं.'

इसी तरह घर पर बैठे 2 दोस्त फोन पर अपना दुखड़ा रो रहे थे. पहला दोस्त बोला, 'मैं इस समय स्टेज 3 में हूं. पहली स्टेज में बरतन मांजे, दूसरी स्टेज में खाना बनाया और तीसरी स्टेज में कपड़े धो रहा हूं. और तुम... ?'

दूसरा दोस्त सीना तान कर बोला, 'मैं ने बेलन से मार खा ली, मगर काम नहीं किया... भाई, कोरोना तो थोड़े दिन में चला जाएगा, मगर पत्नी को पता चल गया कि इस को यह सब आता है, तो जिंदगीभर करना पड़ेगा.'

एक भाई ने तो अपनी भड़ास कुछ इस तरह निकाली, 'इसी तरह लौकडाउन बढ़ता रहा और 24 घंटे मियांबीवी को साथ रहना पड़ा, तो वैज्ञानिकों से पहले कोई पति ही कोरोना वायरस का टीका बना देगा.'

कर्फ्यू लगने के बावजूद एक बंदा बाहर सड़क पर टहल रहा था कि पुलिस ने उस से पूछा, 'कहां जा रहे हो मुंह उठाए...पता नहीं कर्फ्यू लगा है...'

संवाददाता

उस आदमी ने दर्द को पीते हुए कहा, 'जनाब, दर्द दूर करने की मलहम लेने जा रहा हूं, कर्फ्यू का पता तो पिछले चौक में ही लग गया था...'

इसी तरह एक आदमी डाक्टर के पास गया और बोला, 'डाक्टर साहब, मुझे बैठने मे काफी तकलीफ हो रही है.'

डाक्टर ने छूटते ही पूछा, 'कर्फ्यू देखने गए थे क्या ?'

उस आदमी ने हैरान हो कर पूछा, 'आप ने कैसे पहचाना ?'

'क्योंकि आजकल ऐसे लोग ज्यादा दवा लेने आ रहे हैं,' डाक्टर ने चुटकी ली.

घर में बैठेबैठे पक चुके एक आदमी ने अपने दोस्त पर भड़ास निकालते हुए कहा, 'बिलकुल रेलवे के डब्बे में बैठने जैसी फीलिंग आ रही है... सिर्फ टायलेट के लिए उठ कर जाना है और फिर वापस आ कर अपनी जगह पर बैठ जाना है.'

एक आदमी ने तो हद ही कर डाली और बोला, 'वह दिन दूर नहीं, जब लोग कहेंगे कि यह छोटा वाला तो कोरोना के चक्कर में पैदा हो गया.'

एक आदमी ने तो चेतावनी दे डाली, 'अगर बीवी से लड़ाई हो भी जाए तो भी घर से बाहर नहीं निकलें. इज्जत ही सबकुछ नहीं होती, जान है तो जहान है...'

एक भाई ने तो ज्ञान की गंगा ही बहा दी, 'नोटबंदी की अपार सफलता के बाद पेश है 'घरबंदी'

और वह भी अपनी ही बंदी के साथ...'

एक कवि टाइप शादीशुदा मर्द ने घर से ही एक चेतावनी दे डाली, 'हवा की लहर बन कर तू मेरी खिड़की न खटखटा. मैं बंद कमरे में बैठा हूं तूफान से सटा...'

दरअसल, यहां वह आदमी अपनी गर्लफ्रैंड को बता रहा है कि मिसकाल मत देना, बीवी पास ही बैठी है.

लौकडाउन के इस समय में समय का सदुपयोग करें. खुद को साफसुथरा रखें, टाइमपास के लिए अच्छी पत्रिकाएं पढ़ें, जागरूक बनें और मौका मिलते ही चेहरे पर मुसकान ले आएं. ●

रॉयल हर्बल क्लीनिक
डा० एस. अहमद-9984503030
यू.जी-1, केशव कॉम्प्लेक्स, नियर लेखराज मेट्रो स्टेशन इंदिरा नगर, लखनऊ
स्त्री रोग
यूट्राइन फाइब्रॉइड (रसौली) • ल्यूकोरिया • यूट्राइन सिस्ट • ब्रेस्ट कैंसर • ब्रेस्ट सिस्ट
चर्मरोग सफेददाग
एक्जिमा, सोरायसिस व किसी प्रकार की एलर्जी का इलाज
दमा, खाँसी, बहुत पुराना जुकाम
पथरी बिना आपरेशन के इलाज
पहली खुराक से आराम
गुर्दे व पेशाब की नली में फँसी पथरी को बाहर निकालें
बवासीर खूनी/बादी
कोलाइटिस, गैस आंव, पेट साफ न होना फिशर फिशटुला आदि
बालों का गिरना
बालों का झड़ना, टूटना, बालों में रुसी, दोमुहें बालों का उपचार
जोड़ो का दर्द
गठिया, अर्थराइटिस, स्लिप डिस्क साईटिका, स्पान्डेलाइटिस

रोहित



पार्टी के बैरों का दर्द

बैंक्वैट हाल के अंदर चकाचौंध करने वाली जगमगाती लाइटें, गुलाब, मोगरा की मनमोहक खुशबू, फूलों से सजा स्टेज. सोफे, टेबल और कुरसियों पर चमकदार कपड़ा, कोने में दनदनाते डीजे पर बजते फूहड़ गाने, जिन पर थिरकते न थकने वाले जवान लड़केलड़कियों के पैर.

वहीं हाथ में जाम ले कर ठहाका लगाते मदहोश जोड़े नए चमचमाते कपड़े पहन कर किसी भी पार्टी की शान में चार चांद तो लगा ही देते हैं.

डिनर में महाराजाई भोज यानी शुरू में कोल्ड ड्रिंक्स, रंगबिरंगे शेक, तरहतरह के स्नैक्स, जिन का नाम लेते जबान टेढ़ी हो जाए, का क्या कहना. आखिर में मैन कोर्स में खाने के न गिन पाने वाले तमाम पकवान.

इन सब के बीच उन मेहमानों के इर्दगिर्द घूमने वाले बैरे यानी आम बोलचाल में वेटर. गंदली सी एकजैसी ड्रैस, बदबूदार दस्ताने, सालों से न धोई हुई टोपी, कभी सीटी की आवाज में पलक झपकते पहुंचते तो कभी इशारों की भाषा समझ कर आ जाते. हमेशा मुस्तैद, किसी भूखेप्यासे मेहमान को देख कर उसे सेवा देने को तैयार हों भी क्यों न, ऐसे ही हाथपैर मार कर ही तो टिप बनती है.

यहांवहां हाथ में बड़ी सी क्रेट या वार्मर ले कर टहलते हुए बैरे. क्रेट के भारी वजन से हाथों के पंजे से ले कर कंधे तक दर्द से मन ही मन कराहते हुए.

आलम यह कि डीजे के शोर में भी खुली जबान में दर्द से 'आह' न कह पाने का मलाल. घबराहट इस बात की कि कहीं पीछे से कप्तान यानी सुपरवाइजर न देख ले और नाराज हो कर आज की दिहाड़ी न रोक ले.

लेकिन इस का तोड़ यह कि मन ही मन अमीरों को देखते हुए लच्छेदार गालियों से अपने दर्द को मलहम लगाने का एहसास. यही एहसास है, जिसे पा कर संतुष्ट महसूस किया जा सकता है.

वैसे तो बैरों का पेशा हर किसी के लिए खुला है. मसलन, उस की रीढ़ की हड्डी सीधी हो और अगर झुके तो सिर्फ मेहमाननवाजी के लिए. उसे 7-8 घंटे बस खड़े हो कर यहांवहां घूमना ही तो होता है. हमेशा काम करते भी रहना होता है या काम न भी हो तो काम करने का दिखावा करना होता है. अगर ऐसा नहीं किया तो उस के सीनियर के पास भरी पार्टी में उस का कौलर पकड़ कर लताड़ने का पूरा हक है.

हंसते हुए चेहरे का रंग गोरा, जूतेपैंट काली, बाकी ड्रैस वहीं से मिल ही जाती है. थोड़ा पढ़ालिखा हो तो और भी अच्छा. वह क्या है न कि पढ़ेलिखे मेहमानों को परोसने वाले इंगलिश पकवानों का नाम कह कर परोसने का खूब रिवाज चलता है बैंक्वैट में.

पता चले, इंगलिश पकवानों के शब्द मुंह में अटक गए तो पार्टी रौयल की कैटीगरी से बाहर हो जाएगी. इस का एक फायदा यह भी है कि लगे हाथ सौरी, थैंक्यू, हैलो की तहजीब भी पूरी की जा सकती है.

एक दुनिया में दूसरी दुनिया

बैंक्वैट के अंदरबाहर करने वाला बैरा एक ही वक्त में दूसरी दुनिया का एहसास कर लेता है. बैंक्वैट के अंदर लजीज पकवान को खाते देख कर उस के मुंह से लार टपकने लगती है. दूसरे की भूख झट से मिटाने वाला बैरा भी भूखा है, असहाय है, शरीर निढाल है.

दिन में किसी फैक्टरी में काम कर उस की आंखों में थकान साफ दिख रही है. इतने लजीज पकवान बैरों के लिए दिखना तक सपने जैसा है. वह इन सब पकवानों को हाथ में समेट कर तुरंत खा लेना चाहता है.

जैसे ही चकाचौंध के बीच खुद के लिए अंधेरा तलाश बैरा मेहमानों की नजरों से बच कर चिली पनीर का टुकड़ा टिशु पेपर में समेटते हुए बैंक्वैट के पिछवाड़े हिस्से में पहुंचता है तो वहां क्लीनर से ले कर काम से बचतेबचाते दूसरी बैरे उस का शानदार स्वागत करते हैं. उसे महसूस कराते हैं कि उस ने खुद के लिए इंसाफ किया है.

अपने इस पिछड़े और नीच काम का एहसास तो उसे होने लगता है, लेकिन वक्त के साथ वह इसे अपने ठेंगे पर ले कर चल देता है.

बैरा होना आसान नहीं. पार्टी में आए लोगों के लिए अपने घर के तमाम दुखों को भूल कर खुशनुमा चेहरा बनाना होता है. अपनी थकान को चेहरे पर आने से रोकना होता है. हाथ में तकरीबन 2-3 किलो का सामान संभाले रखना होता है. और अगर सामान भरी पार्टी में हाथ से छूट कर गिर जाए तो क्या कहना.

और भी गम हैं जमाने में

इस काम को करने वाले ज्यादातर 15 से ले कर 40 साल की उम्र के होते हैं. बहुत से गरीब तबके के छात्र अपने स्कूली दिनों से इस तरह के काम में घुस जाते हैं. अपनी किशोर उम्र में उन का मानना रहता है कि इस काम में फायदे होते हैं.

पहला, वे अपने स्कूल को समय दे पाते हैं. दूसरा, अपने हाथ खर्च के लिए पैसे जुटा लेते हैं. तीसरा, काम के साथ खाने को भी मिल जाता है.

लगे हाथ चकाचौंध भरे समाज को देखने का मौका कौन छोड़ना चाहता है. उन्हें दुख बस अपने हालात पर होता है कि जिन पार्टियों में वह बैरा बन कर जाते हैं, वहां उन्हीं की उम्र के मेहमान बच्चे उन को और्डर देते हैं, रोब झाड़ते हैं, यहां तक कि उन का मजाक तक उड़ा देते हैं. वे इस फासले की खाई को महसूस कर के मन मसोस कर रह जाते हैं.

सरस सलिल

MK MAGAZINE KING

ऐसे ही एक बैरे से मेरी मुलाकात शालीमार बाग के पास लावण्या बैंक्वैट हाल में हुई. उस मस्तमौला बैरे ने खुद का नाम अजय बताया. 25 साल का दुबलापतला नौजवान, चेहरे पर हंसी लिए यहांवहां ताक लगाए घूमते हुए.

जब मैं ने उस से पूछा कि किसे ढूंढ़ रहे हो तो वह कहता है कि 'कप्तान को'. उस के इस जवाब से मैं हैरान था, क्योंकि अकसर बैरे कप्तान न दिखे इसी उम्मीद में रहते हैं. लेकिन बाद में पता चला कि वह ढूंढ़ ही इसलिए रहा था, ताकि उसे देख कर छिपा जा सके.

अजय बताता है कि उस के घर में उस के अलावा 4 लोग और भी हैं. उस ने यह काम स्कूल के समय से ही शुरू कर दिया था. घर की हालत ठीक नहीं थी. पापा आनंद पर्वत के इंडस्ट्रियल इलाके में मजदूर हैं. वे ज्यादातर समय शराब के नशे में धुत्त रहते हैं. मां और 2 बहनें भी हैं, जिन का ज्यादातर समय फैक्टरी से लाया हुआ माल बनाने में बीतता है.

वे आगे कहता है, ''मैं ने अपनी पढ़ाई 11वीं जमात में छोड़ दी थी. अब मैं इसी काम को करता हूं.''

जब मैं ने उस से पूछा कि तुम ने आगे की पढ़ाई क्यों नहीं की, तो वह हंसते हुए कहता है, ''भाई, आज हालत यह है कि पढ़ेलिखे लोग भी यह काम करने को मजबूर हैं. मैं तो ठहरा अनपढ़.''

आंकड़े भी बोलते हैं

अजय की बात में सचाई तो थी. महाराष्ट्र इस का जीताजागता उदाहरण है. दिसंबर, 2018 में महाराष्ट्र सचिवालय ने वेटर के लिए 13 सीटें निकालीं, जिस के लिए काबिलीयत चौथी जमात पास रखी हुई थी. पता चला, 7,000 से ज्यादा नौजवानों ने अर्जी दी, जिस में से ज्यादातर ग्रेजुएट या उस से ज्यादा पढ़ेलिखे थे.

देशभर में नौजवानों का हाल यही है. ऐसी खबरें हर कुछ समय बाद सुनने को मिल जाती हैं. उत्तर प्रदेश सचिवालय ने जब 368 चपरासियों की पोस्ट निकाली थी, तो उस के लिए अर्जी देने वालों की तादाद 23 लाख थी.

बेरोजगारी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रदेश की आबादी के हर 93 में से एक आदमी ने चपरासी के लिए फार्म भरा. इन में से 2.22 लाख लोग इंजीनियर, 255 पीएचडी होल्डर और हजारों की तादाद



में पोस्ट ग्रेजुएट और ग्रेजुएटथे. बाकी औनेपौने अर्जी करने वालों की गिनती बताना बेमानी लगेगा.

प्रदेश के एक अफसर का इस मुद्दे पर कहना था, ''अगर वह 23 लाख लोगों के इंटरव्यू लेने की प्रक्रिया को पूरा भी करते हैं, तो उन्हें इस में 4 साल लग जाएंगे.''

ये तो उन नौजवानों के आंकड़े हैं जो सरकारी महकमों से निकल कर आते हैं. इस के अलावा ऐसे अनगिनत नौजवान हैं, जो आंकड़ों में चढ़ भी नहीं पाते.

हादसा जो नहीं होना था

दिल्ली के आजादपुर इलाके के पास बने ग्रैंड ड्रीम्स बैंक्वैट हाल में काम करने वाले 35 साल के उमेश उर्फ 'लंबू' अपने जलते दोनों हाथों को ले कर फ्रीजर रूम की तरफ तेजी से भागने लगा. उस के दोनों हाथ जले हुए थे. जलने के चलते उस के हाथ की चमड़ी लटकने लगी थी और चमड़ी से उठते हुए गोलगोल फफोले उठने लगे थे. उस के दोनों हाथ जलने से ऐसे सुर्ख लाल हो गए थे, मानो गरम खौलते पानी में हाथ दे दिया हो.

उमेश से बात करते हुए पता चला कि वह बैंक्वैट की दूसरी मंजिल से मेहमानों के लिए गरम खाने की क्रेट ले कर आ रहा था. बैंक्वैट में लिफ्ट नहीं है. जिस रास्ते से आना था, वह नौकरों के लिए बनाई गई पीछे वाली सीढ़ियां थीं. वे सीढ़ियां चिपचिपी और गंदगी से भरी रहती हैं. उस का पैर फिसला और खाने की पूरी गरम क्रेट उस के हाथों पर जा गिरी. वह अपना होश संभालता कि इतने में जो होना था वह हो गया.

कुछ देर बाद पता चला कि उसे पास के क्लिनिक में ले जा कर मरहमपट्टी कराई गई और घर जाने को कह दिया गया.

उमेश बताता है, ''इस काम में रोज का संघर्ष है. आज आप के पास काम है, तो कल नहीं. आप को हर दिन रोटी के लिए लड़ना पड़ता है.''

अपने दोनों हाथों के जलने का उमेश को दुख तो था, लेकिन इस से ज्यादा दुख इस बात का था कि अब उसे ठीक होने में काफी लंबा समय लगेगा और उस के पास कोई काम नहीं है. इसी काम से वह अपने परिवार का पेट भरता है.

रात में जब पार्टी खत्म हो जाती है तो वह बचा हुआ खाना अपने घर ले कर जाता है, तब जा कर परिवार खाना खाता है, चाहे पार्टी को खत्म होने में रात के 2 या 3 ही क्यों न बज जाएं.

एक हकीकत यह भी है कि पार्टी में काम करने वाले बहुत से बैरों या क्लीनरों के पास अपना कोई घर नहीं है और दिल्ली जैसे शहर में 3,000 रुपए से ले कर 4,000 रुपए का कमरा किराए पर लेने की आमदनी नहीं है. बहुत से बैरे बचीखुची रात वहीं बैंक्वैट की बेसमैंट में गुजार लेते हैं. दिन होते ही हर रोज के संघर्ष की लड़ाई लड़ते हुए काम की तलाश में निकल पड़ते हैं, फिर रात बैंक्वैट में.

किसी का सरोकार नहीं रहा

बैरे का पेशा उन्हीं पेशों में से एक है, जिस पर न तो सरकार का ध्यान जाता है और न ही सामाजिक कार्यकर्ताओं का. शानदार से दिखने वाले बैंक्वैट की चमकधमक से शायद आंखें चौंधिया जाती होंगी. लेकिन उस के पीछे का काला सच शायद ही नजर में आ पाता है.

सरकार के पास भी इस तरह के काम करने वालों का कोई डाटा मौजूद नहीं है. आखिर कितने लोग यह काम कर के अपना गुजारा चला रहे हैं? कितने नौजवान इस तरह की छिपी बेरोजगारी के शिकार हैं?

इस के अलावा टैलीविजन, अखबारों में भी इन कामों पर कोई खबरें नहीं हैं. यह बात जरूर है कि यह भी एक काम का हिस्सा है, जिस की जरूरत समाज में है. लेकिन ऐसे कामों पर कोई नियमावली क्यों तय नहीं की है? 300 रुपए से ले कर 400 रुपए रोज की दिहाड़ी पाने वाला बैरा आखिर कैसे अपनी बुनियादी सहूलियतें पूरी कर पाएगा?

जरूरत है कि इस तरह से होने वाले काम की सूध सरकार द्वारा ली जाए और साथ ही उन की जिंदगी को बेहतर बनाने की कोशिश की जाए, क्योंकि जो नौजवान देश के विकास में मजबूत हाथ की तरह इस्तेमाल में लाया जा सकता है, उस नौजवान का कोई चेहरा समाज के सामने न हो तो यह दुख की बात है. ●





कागज रखें

बीरेंद्र बरियार ज्योति

पटना के हड़ताली मोड़ के पास सुबह 9 बजे 8-10 पुलिस वाले मुस्तैदी से कागजात की जांच में लगे हुए थे. मोटरसाइकिल वालों को पकड़ा जा रहा था. उन से गाड़ी के तमाम जरूरी कागजात दिखाने को कहा जा रहा था. मुश्किल से 10 फीसदी लोगों के पास ही तमाम जरूरी कागजात पाए गए, बाकी को सड़क के किनारे खड़ा कर दिया गया.

गाड़ियों की लंबी कतार की वजह से वहां ट्रैफिक जाम का माहौल बन गया. वहां से गुजरने वाली बाकी छोटीबड़ी गाड़ियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था, पर मोटरसाइकिल वालों पर कागजात दिखाने का रोब गांठने वाले पुलिस वालों को इस से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था.

उसी दौरान एक स्कूटी सवार उधर से गुजरा. एक सिपाही ने स्कूटी का हैंडल पकड़ कर उसे जबरन रोका और उस के बाद स्कूटी की चाबी निकाल ली.

स्कूटी सवार गिड़गिड़ाया कि औफिस पहुंचने में पहले ही देर हो गई है, औफिस में जरूरी मीटिंग है. इस के बाद भी सिपाही पर कोई असर नहीं पड़ा. उसे स्कूटी को सड़क के किनारे लगाने को कहा गया.

स्कूटी वाले ने वहां मौजूद इंस्पैक्टर से कहा कि उस के पास सभी कागजात हैं, लेकिन औफिस पहुंचने की हड़बड़ी में वह घर पर ही भूल आया.

इस पर इंस्पैक्टर उसे डांटते हुए बोला कि पकड़े जाने पर सभी इसी तरह के बहाने बनाते हैं. घर जाओ और अभी तमाम कागजात ले कर आओ, नहीं तो जुर्माना भरो. जुर्माने की रकम को जोड़ कर तकरीबन 20,000 रुपए बने. स्कूटी सवार ने कहा कि अभी उस के पास इतने पैसे नहीं हैं.



इस स्कूटी सवार का नाम विनोद पांडे था. वह स्टौक ब्रोकिंग कंपनी में काम करता था. उस ने बाद में बताया कि पुलिस वालों से काफी गुजारिश की कि औफिस में जरूरी मीटिंग है, कल वह गाड़ी के सारे कागजात ट्रैफिक थाने में जा कर दिखा देगा, इस के बाद भी पुलिस वालों के कान पर जूं नहीं रेंगी.

नतीजतन, विनोद पांडे अपनी स्कूटी छोड़ कर औटोरिकशा से अपने घर पहुंचा. सभी कागजात ले कर हड़ताली मोड़ लौटा. पुलिस वालों को कागजात दिखाए. सभी कागजात सही पा कर पुलिस वालों के अहम को मानो चोट लग गई.

इंस्पैक्टर ने कहा कि सभी कागजात तो ठीक हैं, लेकिन स्कूटी के आगे की नंबर प्लेट धुंधली क्यों है? इस का तो फाइन भरना पड़ेगा. इंस्पैक्टर ने सिपाही से 1,500 रुपए का चालान काटने को कहा.

विनोद पांडे ने बताया कि वह सिपाही के पास गया और कहा कि उस के पास केवल 600 रुपए हैं. 500 रुपए आप लीजिए और मामले को खत्म कीजिए. सिपाही ने तुरंत हामी भर दी और 500 रुपए ले कर अपनी जेब में ठूंस लिए.

इस काम को निबटाने में विनोद के कई घंटे बरबाद हो गए. वह औफिस की मीटिंग में समय पर नहीं पहुंच सका. इस के लिए बौस से डांट पड़ी और 2 दिन की तनख्वाह काट ली गई.

विनोद पांडे ने बताया कि गाड़ी के कागजात साथ नहीं होने पर पुलिस फाइन नहीं लगा सकती है. अगर गाड़ी सवार कागजात दिखाने के लिए समय मांगे तो उसे समय देने का नियम है. लेकिन ज्यादातर मामलों में यही होता है कि पुलिस वाले कानून की धौंस दिखा कर चालान काटने के लिए मुस्तैद रहते हैं और इस के पीछे उन का मकसद कानून का पालन कराना नहीं, बल्कि अब जेब गरम करना ही ज्यादा होता है.

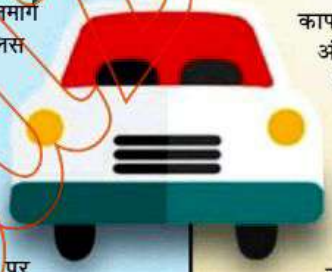
गाड़ी मालिकों का कहना है कि गाड़ी के सभी ओरिजनल कागजात हमेशा साथ में रखने पर कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है. कागजात गंदे हो जाते हैं या फट जाते हैं, बारिश में भीग कर गीले हो जाते हैं, चोरी होने या गुम

डिजिलौकर और एमपरिवहन

अगर आप गाड़ी का रजिस्ट्रेशन, ड्राइविंग लाइसैंस, फिटनैस सर्टिफिकेट, इंश्योरैंस की हार्डकौपी अपने पास नहीं रख सकते हैं या उसे पास में रखने में परेशानी हो तो डिजिलौकर का इस्तेमाल कर सकते हैं. उस में रखे कागजात को ओरिजनल कौपी की तरह माना जाता है.

नवंबर, 2018 में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने इसी को कानूनी मंजूरी दी है. कोई भी पुलिस वाला इसे मानने से इनकार नहीं कर सकता है.

इसी तरह एमपरिवहन एप के जरीए भी गाड़ी के तमाम कागजात पुलिस वालों या आरटीओ को दिखा सकते हैं. इस से फर्जीवाड़े पर भी अंकुश लग सकेगा. कई लोग फर्जी रजिस्ट्रेशन पेपर और कागजात बना कर गाड़ियों को बेच देते हैं.



डिजिलौकर या एमपरिवहन एप को मोबाइल फोन पर डाउनलोड करना होगा. एप साइनअप करने के लिए अपना मोबाइल नंबर ऐंटर करना होता है. उस के बाद ओटीपी आएगा, उसे ऐंटर करने के बाद आप का नंबर वैरिफाई हो जाएगा. अगले स्टेप में लौग इन करने के लिए यूजर नेम और पासवर्ड बनाना होगा. उस के बाद आप का अकाउंट बन जाएगा. इतना करने के बाद उसे आधार से लिंक करना होगा. आधार से लिंक होने के बाद मोबाइल नंबर पर ओटीपी आएगा और उसे ऐंटर करने के बाद आधार भी वैरिफाई हो जाएगा.



पुलिस की जबरदस्ती



होने का खतरा बना रहता है और सभी ओरिजनल कागजात गुम हो गए तो उन्हें दोबारा बनवाने में हजारों रुपए की चपत लग सकती है और महकमे की भागदौड़ में काफी समय भी बरबाद होता है.

इस वजह से लोग गाड़ियों के ओरिजनल कागजात साथ रखने से परहेज करते हैं, जबकि पुलिस वाले कागजात की फोटोकौपी को सही नहीं मानते हैं.

गौरतलब है कि 1 सितंबर, 2019 को नया मोटर वाहन अधिनियम पूरे देश में लागू हुआ. उस के तहत गाड़ी चलाने वालों के पास तमाम जरूरी कागजात नहीं रहने पर जुर्माने की रकम कई गुना ज्यादा बढ़ा दी गई. उस के बाद तो पुलिस वालों की मानो लौटरी लग गई.

1 सितंबर, 2019 से पहले बगैर ड्राइविंग लाइसैंस के गाड़ी चलाने पर 500 रुपए जुर्माने के तौर पर वसूलने का नियम था. पुलिस की जांच में पकड़े जाने पर चालक या तो जुर्माने की पूरी रकम भर कर रसीद लेता था या फिर दूसरा रास्ता था, जिस से चालक और चैकिंग में लगे पुलिस वालों दोनों को फायदा होता था. लाइसैंस नहीं रहने पर 50 रुपए से 100 रुपए तक पुलिस वालों की मुट्ठी में रख देने से मामला खत्म हो जाता था.

नया नियम लागू होने के बाद ड्राइविंग लाइसैंस के बगैर गाड़ी पर जुर्माने की रकम को 500 रुपए से बढ़ा कर 5,000 रुपए कर दिया गया. इस के बाद तो हजार 2 हजार रुपए से कम पर पुलिस वालों की मुट्ठी गरम ही नहीं होती है. अब ड्राइवर के सामने यही रास्ता है कि या तो जुर्माने की पूरी रकम अदा करे या चढ़ावा चढ़ा कर कानूनी पचड़े से बचे.

परिवहन महकमे के एक बड़े अफसर कहते हैं कि जुर्माने की रकम बढ़ाने के पीछे सरकार की मंशा यही थी कि इस के बाद जरूरी कागजात के बिना लोग गाड़ी चलाने से बचेंगे. ज्यादा जुर्माना देने के डर से लोग सभी जरूरी कागजात साथ रख कर ही गाड़ी चलाएंगे, लेकिन इस से आम आदमी की मुसीबत ही ज्यादा बढ़ी है.

कागजात की जांच करने में लगे पुलिस वाले जुर्माने की मोटी रकम का डर दिखा कर अपनी जेब गरम करने में ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं.

पुलिस वालों के इस रवैए की वजह से न तो नए नियम का डर लोगों में पैदा हुआ है और न ही सरकार का राजस्व ही बढ़ सकता है.

मिसाल के तौर पर देखा जाए तो हैलमैट नहीं पहनने पर दोपहिया गाड़ी चलाने वालों के लिए जुर्माने की रकम 200 रुपए से बढ़ा कर 1,000 रुपए कर दी गई है. अगर पुलिस सच में लोगों को हैलमैट पहनने के लिए जागरूक करना चाहती तो जुर्माना का चालान काटने के बजाय ड्राइवर से कहती कि गाड़ी साइड में लगाओ और जाओ हैलमैट खरीद कर आओ. हैलमैट खरीद की रसीद दिखाने के बाद पुलिस उसे छोड़ देती. लेकिन ऐसा होता नहीं है.

ज्यादातर पुलिस वाले ड्राइविंग करते समय जरूरी कागजात वगैरह रखने के लिए लोगों को जागरूक नहीं करते हैं, बल्कि रोब गांठ कर नाजायज वसूली में ही लगे रहते हैं.

बिहार के डीजीपी रहे अभयानंद कहते हैं कि ट्रैफिक नियमकायदों का पालन करना बहुत ही जरूरी है. पिछले साल तकरीबन डेढ़ लाख लोगों की मौत सड़क हादसों में हो गई. पूरी दुनिया में हर साल तकरीबन 13 लाख लोग सड़क हादसों में मारे जाते हैं. सड़क हादसों में जान गंवाने वालों में 50 फीसदी की उम्र 14 से 35 साल के बीच की होती है. ऐसे में ट्रैफिक नियमों को ले कर जागरूक करने और होने की सख्त जरूरत है.

सरकार के साथसाथ आम लोग भी नियमकायदे के तहत ही गाड़ी चलाएं. गाड़ी के कागजात जांच करने वाले पुलिस वालों की 'वसूली' के मामले पर वे कहते हैं कि जब लोग सभी कागजात ले कर और नियम के तहत गाड़ी चलाएंगे, तो किसी को भी किसी तरह की वसूली करने का मौका ही नहीं मिलेगा.

गाड़ी चलाते समय ड्राइविंग लाइसैंस, गाड़ी का रजिस्ट्रेशन, प्रदूषण नियंत्रण सर्टिफिकेट (6 महीने की वैलिडिटी), गाड़ी के इंश्योरैंस के कागज, भारी वाहनों के लिए उस का फिटनैस सर्टिफिकेट रखना जरूरी है.

कई लोगों की शिकायत है कि सभी कागजात रहने के बाद भी पुलिस वाले दूसरे किसी मामले में फंसा कर अपनी मुट्ठी गरम कर लेते हैं.

पटना से सटे बिहटा के रहने वाले एक स्टेशनरी कारोबारी संजय मिश्रा आपबीती सुनाते हुए कहते हैं कि वे स्टेशनरी का सामान खरीदने के लिए मोटरसाइकिल से पटना की तरफ जा रहे थे. दानापुर के पास पुलिस वाले गाड़ियों की जांच कर रहे थे.

पुलिस वाले ने उन से कागजात दिखाने को कहा, तो उन्होंने सभी कागजात दिखा दिए. उस के बाद पुलिस वालों ने यह कहते हुए 1,000 रुपए का जुर्माना लगा दिया कि उन का हैलमैट आईएसआई मार्क वाला नहीं है.

उन्होंने पुलिस वालों से कहा कि वे अभी ही जा कर आईएसआई मार्क वाला हैलमैट खरीद लेंगे, पर पुलिस वाले ने एक नहीं सुनी और चालान काट दिया. ●





गुरुजी का नया बखेड़ा

बीरेंद्र

झारखंड मुक्ति मोरचा के सुप्रीमो शिबू सोरेन उर्फ गुरुजी ने राज्य में स्थानीय नीति यानी डोमिसाइल नीति को ले कर एक बार फिर बखेड़ा खड़ा कर दिया है.

उन्होंने यह कह कर नया सियासी बवाल मचा दिया है कि पिछली रघुवर दास सरकार की डोमिसाइल नीति आदिवासी विरोधी है. इस के बाद राज्य में एक नई बहस छिड़ गई है और आदिवासी आंदोलन नए सिरे से गोलबंद होता दिखाई देने लगा है.

इस पर शिबू सोरेन का कहना है कि स्थानीय नीति का आधार साल 1932 का खतियान होना चाहिए. गौरतलब है कि रघुवर दास सरकार ने डोमिसाइल नीति 1985 को कट औफ डेट रखा था.

हिंसक आंदोलनों के बाद साल 2015 में झारखंड की डोमिसाइल नीति जमीन पर उतरी थी. साल 2000 से इस मसले को ले कर भड़की आग ने कई सरकारों की लुटिया डुबो दी थी.

इस के पहले राज्य के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी हुए थे. शिबू सोरेन के सुर में सुर मिला कर झामुमो के महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य कहते हैं कि 1985 के आधार पर स्थानीय नीति जायज नहीं है. अब इस नीति को ले कर नए सिरे से विचार किया जाएगा.

साल 2015 में लागू की गई डोमिसाइल नीति के तहत 30 साल से झारखंड में रहने वाले अब झारखंडी (स्थानीय) करार दिए गए. इस के तहत झारखंड सरकार द्वारा संचालित व मान्यताप्राप्त संस्थानों, निगमों में बहाल या काम कर रहे मुलाजिमों, पदाधिकारियों और उन के परिवार को स्थानीय माना गया है.



झारखंड राज्य और केंद्र सरकार के मुलाजिमों को स्थानीयता का विकल्प चुनने की सुविधा दी गई है. अगर वे झारखंड राज्य को चुनेंगे तो उन्हें और उन की संतानों को स्थानीय नागरिक माना जाएगा.

इस के बाद वे अपने पहले के गृह राज्य में स्थानीयता का फायदा नहीं उठा सकेंगे, वहीं झारखंड को नहीं चुनने की हालत में वे अपने गृह राज्य में स्थानीयता का लाभ ले सकेंगे.

भौगोलिक सीमा में निवास करने वाले वैसे सभी लोग, जिन का खुद या पुरखों का नाम पिछले सर्वे खतियान में दर्ज हो व मूल निवासी, जो भूमिहीन हों, उन के संबंध में उन की प्रचलित भाषा, संस्कृति और परंपरा के आधार पर ग्राम सभा द्वारा पहचान किए जाने पर उन्हें स्थानीय माना गया है.

इस के साथ ही वैसे लोगों को भी स्थानीय माना गया है, जो कारोबार और दूसरी वजहों से पिछले 30 साल या उस से ज्यादा समय से झारखंड में रह रहे हों और अचल संपत्ति बना ली हो. ऐसे लोगों की बीवी, पति और संतानें स्थानीय मानी गई हैं.

गौरतलब है कि राज्य में आदिवासियों की आबादी 26 फीसदी ही है और 74 फीसदी गैरआदिवासी हैं. झारखंड मुक्ति मोरचा के विधायक नलिन सोरेन कहते हैं कि उन की पार्टी शुरू से ही साल 1932 को आधार मान कर स्थानीय नीति बनाने की मांग करती रही है. नई डोमिसाइल नीति से आदिवासियों का हक मारा गया है. इस नीति में आदिवासियों की अनदेखी कर गैरआदिवासियों का ध्यान रखा गया है.

गौरतलब है कि झारखंड सरकार ने 22 सितंबर, 2001 को बिहार के नियम को अपनाया था. संकल्प संख्या-5, विविध-09/2001, दिनांक 22 सितंबर, 2001 द्वारा बिहार के श्रम, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग के सर्कुलर 3/स्थानीय नीति 5044/81806, दिनांक 3 मार्च, 1982 को आधार बनाया गया. इसी आधार पर खतियान (पिछला सर्वे रिकौर्ड औफ राइट्स) को स्थानीयता का आधार माना गया है.

साल 2000 में बिहार से अलग हो कर नया झारखंड राज्य बनने के बाद राज्य में डोमिसाइल नीति को ले कर आंदोलन चल रहा था. नया झारखंड राज्य बनने के बाद से 2015 तक 10 बार मुख्यमंत्रियों की अदलाबदली हुई, पर हर किसी ने डोमिसाइल नीति पर टालमटोल वाला रवैया ही अपनाया.

बहरहाल, शिबू सोरेन राजनीतिक फायदे को देख कर पाला बदलने और गुलाटी मारने के माहिर खिलाड़ी रहे हैं.

साल 1980 में वे पहली बार जब सांसद बने, तो उस समय कांग्रेस के साथ थे. 1983 में जनता दल बना तो उन्होंने कांग्रेस को ठेंगा दिखा कर जनता दल का दामन थाम लिया.

2 साल बाद उन्हें लगा कि वहां उन की दाल नहीं गल रही है तो फिर कांग्रेस की गोद में जा बैठे और 1985 का विधानसभा चुनाव कांग्रेस के साथ मिल कर लड़ा. 1990 आतेआते कांग्रेस से उन का मन भर गया और उन्होंने फिर से जनता दल का झंडा उठा लिया.

जनता दल के घटक दल के रूप में उन्होंने चुनाव लड़ा. उन की पार्टी झामुमो के 6 उम्मीदवार जीत कर संसद पहुंच गए.

साल 1993 में शिबू सोरेन का माथा फिर घूमा और वे अपने 6 सांसदों के साथ कांग्रेसी प्रधानमंत्री नरसिंह राव के पक्ष में खड़े हो गए, जिस के लिए वे 3 करोड़ रुपए से ज्यादा की घूस लेने के आरोप में भी फंसे हुए हैं.

इस के कुछ समय बाद ही उन का कांग्रेस से मन उचट गया और वे भाजपा के साथ मिल कर नीतीश कुमार को बिहार का मुख्यमंत्री बनाने की मुहिम में लग गए.

साल 1996 में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री तो बने, पर सदन में बहुमत साबित नहीं कर पाए और जनता दल टूट गया. तब गुरुजी शिबू सोरेन लालू प्रसाद यादव के साथ खड़े हो गए.

साल 2000 में जब अलग झारखंड राज्य बना, तो वे मुख्यमंत्री बनने के लोभ में भाजपा की अगुआई वाले राजग में शामिल हो गए. जब भाजपा ने बाबूलाल मरांडी को मुख्यमंत्री बना दिया तो शिबू बिदक कर कांग्रेसराजद गठबंधन की छत के नीचे जा बैठे.

साल 2007 में मधु कोड़ा को झारखंड का मुख्यमंत्री बनाने में उन्होंने मदद की और साल 2008 में खुद मुख्यमंत्री बनने के चक्कर में कोड़ा की सरकार को गिरा दिया था. अब अपनी पार्टी और बेटे की सरकार में वे उलटपुलट बयान दे कर उन के लिए परेशानी खड़ी कर रहे हैं.

14 मार्च, 2020 को एक पत्रकार ने पूछा कि अब झारखंड में आप की सरकार है, तो क्या राज्य का विकास होगा? इस के जवाब में शिबू सोरेन ने कहा, 'हम विकास का ठेका लिए हुए हैं क्या?' ●

आदिवासी हमेशा तीरधनुष पास में रखें – शिबू सोरेन

शिबू सारेन उर्फ गुरुजी ने आदिवासियों को सलाह दी है कि वे अपने पास हमेशा तीरधनुष रखें. उन्होंने कहा कि जिस तरह से सिख लोग हमेशा अपने पास कृपाण रखते हैं, उसी तरह से आदिवासी भी 24 घंटे अपने पास तीरधनुष रखें. यह आदिवासी की परंपरा रही है और उसे इसे बोझ नहीं समझना चाहिए. यह आदिवासियों की हिफाजत का भी सवाल है.

आदिवासी जंगलों में रहते हैं, जंगल में बाघभालू जैसे खतरनाक जानवर मिल गए तो उस समय अपनी जान कैसे बचाएंगे? उसे नमस्ते करेंगे क्या? नमस्ते करेंगे तो सारी नमस्तेगीरी निकल जाएगी. तीरधनुष साथ में रहेगा तो आदिवासी आसानी से अपनी और अपनों की जान बचा सकते हैं.

सरस सलिल

मनोहर कहानियां

मनोहर कहानियां पर आधारित
क्राइम, थ्रिलर, हॉरर
की अनोखी पेशकश अब TATA sky अद्भुत कहानियाँ Tune in to 144 पर

आपराधिक घटनाओं की सत्य और ताजा रिपोर्टिंग

पुलिस अधिकारियों से बातचीत पर आधारित

पैसा, प्रेम, सैक्स, धोखा, छलफरेब, प्रपंच का परदाफाश

अपराधों के बारे में जानिए और सतर्क रहिए



खरीदें बुक स्टाल से हर महीने 10 तारीख तक नया अंक उपलब्ध

हर माह कथा रूप में नई कहानियां नए तेवर और कलेवर के साथ

केवल Rs 500 में वार्षिक ग्राहक बने और प्रतिमाह रजिस्टर्ड डाक से पाएं अपनी मनपसंद पत्रिका मनोहर कहानियां

Subscription@delhipress.in



साथ ही पढ़िए सत्यकथा हर महीने

MK MAGAZINE KING

DELHI PRESS MAGAZINES

33 Magazines | 10 languages | 2.2 Crore Readers

हरि विश्नोई

दान के प्रचार का पाखंड

इतिश्हारी लत ने दीवाना बना दिया,
तसवीर खिंचाने का बहाना बना दिया.
खैरात से भी ज्यादा के ढोल बज गए,
लोगों ने गरीबी को फसाना बना दिया.

गरीबों की मदद के नाम पर बढ़ते प्रचार के बारे में ये लाइनें बड़ी मौजूं लगती हैं. दरअसल, गरीबी की समस्या हमारे देश में आज भी बहुत भयंकर है.

हालांकि आजादी के बाद से 'गरीबी हटाओ' का नारा व गरीबों के लिए चली सरकारी स्कीमों में पानी की तरह पैसा बहाया गया है, लेकिन हिस्साबांट के चलते गरीबी बरकरार है. साल 2016 में 37 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे थे. गांव हों या शहर, गरीब लोग हर जगह बहुत बड़ी तादाद में मिल जाते हैं.

ऐसे में बहुत से लोग पुण्य लूटने की गरज से गरीबों की मदद करते हैं. गरीबों को मुफ्त सामान का लालच दे कर बुलाते व रिझाते हैं और उन्हें सामान देते हुए अपना फोटो खिंचाते हैं. इतना ही नहीं, उन फोटो का इस्तेमाल अपनी दरियादिली के प्रचार में करते हैं.



दरअसल, जिस दान में प्रचार खूब किया जाए वह पाखंड है, जो दानदक्षिणा का माहौल बनाने के लिए किया जाता है. इन में पंडितों के फोटो तो लिए नहीं जाते, क्योंकि पंडित अब दान नहीं लेता. वह तो उलटे दान देने वाले को पुण्य कमाने का मौका व पुण्य लाभ देता है.

ऐसे में दान देने वाला लाभार्थी हो जाता है. वक्त के साथ दान देने के तौरतरीके भी बदल गए हैं. ज्यादा से ज्यादा दान इकट्ठा करने की गरज अब तिरुपति बालाजी, वैष्णो देवी व काशी विश्वनाथ वगैरह बहुत से मंदिरों द्वारा भक्तों के लिए घर बैठे औनलाइन व ईवालेट से दान देने की सहूलियतें मुहैया कराई गई हैं.

तिरुपति बालाजी जैसे कुछ मंदिरों ने तो अपने डीमैट खाते खोल लिए हैं, ताकि नकदी, सोना व हीरेजवाहरात के अलावा शेयर्स भी लिए जा सकें.

यह कैसी मदद

गरीबों के हक हड़प कर भ्रष्ट नेता, अफसर और मुलाजिम अमीर हो रहे हैं, इसलिए गरीब लोग उन के लिए दूध देने वाली गाय साबित हो रहे हैं.

सरस सलिल

MK MAGAZINE KING

ऐसे लोग गरीबों को आसान व कारगर औजार बना कर अपना मकसद पूरा करने में लगे रहते हैं. गरीबी से पार पाने के लिए टिकाऊ व मुकम्मल रास्ता दिखाने के बजाय उन्हें मुफ्तखोरी के लिए उकसाते रहते हैं, ताकि वे काम व कोशिश न करें और हाथ में कटोरा थामे पीढ़ी दर पीढ़ी गरीब ही बने रहें.

यही वजह है कि गरीबों की मदद के नाम पर उन की वक्ती जरूरतों की चीजें भोजन, कपड़े व बरतन बांटने की रस्मअदायगी की जाती है.

इस काम में सरकारें भी पीछे नहीं हैं, इसलिए मुफ्त का माल झपटने के चक्कर में अकसर जहांतहां हादसे होते रहते हैं. छीनाझपटी करते वक्त गरीब लोग एकदूसरे को कुचल देते हैं.

पिछले दिनों पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर शहर में सरकारी कंबल बांटते समय हुई ऐसी ही एक घटना में बहुत से लोग जख्मी हो गए थे.

समाजसेवा का डंका पीटने वाले चालाक लोग गरीबों की मदद के नाम पर थोड़ा पैसा खर्च कर अपना नाम चमकाने व मशहूर होने की जुगत में लगे रहते हैं. वे अकसर कुछ चीजें गरीबों को बांटते हैं और ज्यादा का दिखावा करते हैं, इसलिए हकीकत में काम कम व प्रचार ज्यादा होता है. अखबारों से सोशल मीडिया तक कंबल, खाना व कपड़े वगैरह बांटने वालों के फोटो सुर्खियों में छाए रहते हैं.

कहीं पर निगाहें कहीं पर निशाना

ज्यादातर मामलों में गरीबों को दान इनसानियत दिखाने या राहत पहुंचाने से ज्यादा वाहवाही लूटने व प्रचार पाने की गरज से किए जाते हैं. गरीबों की मदद करने को भी बहुत से लोगों ने अपना धंधा बना लिया है. बहुत सी कागजी संस्थाएं गलीमहल्लों में बढ़ रही हैं.

कई लोग खासकर छुटभैए नेता गरीबों की मदद व समाजसेवा के नाम पर बेहिसाब चंदा इकट्ठा करते हैं और अपना मतलब साधने में लगे रहते हैं. इस में फायदा उन का व नुकसान आम जनता का होता है. जो जना पंडितों के नाम पर गरीबों को थोड़ा सा दान करेगा, वह पंडितों के कहने पर पंडों और मंदिरों को तो मोटा दान करेगा ही.

इनसानियत के नाते मुसीबतजदा, जरूरतमंद अपाहिजों वगैरह की मदद करना सही व सब का फर्ज है. बेसहारा को इमदाद देना अच्छा है, लेकिन किसी मजबूर की असल मदद करना बेहतर है. जिस में दायां हाथ दे और बाएं हाथ को खबर न हो यानी कहीं कोई जिक्र न हो.



बात जबान पर आने से लेने वाले को ठेस लगती है.

उस पर अहसान जताने व अपनी दरियादिली के ढोल बजाने से तो गरीब जीतेजी मर जाता है, लेकिन अमीरों को इस से कुछ फर्क नहीं पड़ता.

वे गरीबों को दिए दान के प्रचार से नाम कमा कर एक तरह से अपने दान की कीमत वसूलते हैं और मुफ्त सामान पाने के लालच में गरीब यह खेल समझ ही नहीं पाते.

तिल का ताड़

गरीबों को दान देने वाले भूल जाते हैं कि दान की बढ़ाचढ़ा कर नहीं बताना चाहिए. दिए गए दान का बारबार बखान करने, अपनी शान व शेखी बघारने, ढिंढोरा पीटने से देने वाले में गुरूर बढ़ता है और लेने वाले का जमीर खत्म हो जाता है.

इस के बावजूद गरीबों की मदद के नाम पर तरहतरह से प्रचार के पाखंड रचे जाते हैं, ताकि समाज में नाम ऊंचा हो व दानवीरता के तमगे मिलें. आजकल यह दिखावा जंगल में आग की तरह फैल रहा है.

गरीबों को मुफ्त चीजें बांटने वाले लोग बड़ी ही बेशर्मी से हंसतेमुसकराते हुए गरदन ऊंची कर के इस तरह से अहसान जताते नजर आते हैं, जैसे कि उन्होंने गरीबों को जागीर सौंप दी हो. फिर गरीबों को सामान देते हुए फोटो खिंचाना, वीडियो बनाना व तारीफ हासिल करने के लिए ह्वाट्सएप और फेसबुक वगैरह पर पोस्ट करना तो आम बात है. इस के अलावा स्मारिकाओं में चिकने कागज पर दानदाताओं के रंगीन फोटो छपे जाते हैं.

इमदाद लेने वाले मजबूर की गरदन तो पहले ही गुरबत, शर्म व अहसान के बोझ से झुकी रहती है, ऊपर से मदद लेते वक्त फोटो खिंचा कर उस की नुमाइश लगाने में उस गरीब की आंखें जमीन में गड़ जाती हैं.

देखा जाए, तो गरीबों को दान दे कर उस का प्रचार करना उन के लिए किसी दिमागी सजा से कम नहीं है. गरीबों को दान कर के अपना प्रचार करने की भूख उन करोड़ों की तरह होती है, जिन की मार गरीबों के बदन पर तो नहीं दिखती, लेकिन उन के भीतर उतर कर उन के यकीन को हिला देती है.

उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में गढ़ रोड पर रंगोली मंडप के पास एक मलिन बस्ती है. इस में आएदिन कई संगठनों के लोग गरीबों को फल, दूध, बिसकुट वगैरह खानेपीने व जूते, कपड़े वगैरह इस्तेमाल की चीजें बांटने के लिए आते रहते हैं. सामान देते वक्त ज्यादा जोर फोटो खिंचवाने पर लगा रहता है, इसलिए अगले दिन अखबारों में खबर के साथ फोटो छपते हैं.

एक संस्था के कर्ताधर्ता का कहना था, ''जिस तरह से बुराइयों को देखसुन कर लोगों पर उन का खराब असर पड़ता है. बहुत से लोग उन्हें अपना लेते हैं, ठीक उसी तरह से लोगों पर नेकियों का अच्छा असर भी पड़ता है.

''अच्छे काम होते देख कर भी लोग उन से सीख व सबक लेते हैं, इसलिए गरीबों की मदद करने वाले कामों का प्रचार करने से उन का सिलसिला आगे बढ़ता है.''

गरीबों को दान दे कर उस के प्रचार का पाखंड रचने वाले लोग भले ही अपने हक में कितनी भी दलीलें दें, लेकिन सच यही है कि दान के प्रचार की लत हमारे समाज में नई नहीं है.

दान के प्रचार से ही तो दक्षिणा के लिए माहौल बनता है. नए चेले व चेलियां जाल में फंसते हैं. पुण्य का फायदा हासिल करने की गरज से सदियों से ऐसा होता रहा है. बरसों पुराने मंदिरों व धर्मशालाओं वगैरह में आज भी दीवारों व चबूतरों पर लगे पत्थरों पर दान देने वालों के नाम खुदे हुए देखे जा सकते हैं.

प्रचार की भूख में बहुत से लोग तो अपनी अक्ल को उठा कर ताक पर रख देते हैं. दुनिया से जा चुके अपने मांबाप की याद में फर्श पर लगवाए पत्थरों पर ही उन के नाम खुदवा देते हैं.

फर्श पर लगे पत्थरों के साथसाथ उन पर खुदे मांबाप के नामों पर भी लोग पैर रख कर आतेजाते रहते हैं व दान के चक्कर में फंस कर मांबाप का नाम ऊंचा होने की जगह मिट्टी में मिल जाता है.

सर्दियों के दौरान बड़े शहरों में सड़क किनारे पड़े गरीबों को रजाईकंबल बांटने वालों की बाढ़ सी आ जाती है. कई बार देखा है कि बहुत से गरीबों को दान में दिया गया सामान अगले ही दिन उन गरीबों के पास नहीं होता और वे फिर से अपनी उसी खराब हालत में दिखाई देते हैं, क्योंकि ज्यादातर गरीब बदहाल जिंदगी के आदी हैं, इसलिए कुछ भी

मिलने के थोड़ी देर बाद ही वे दान में मिली चीजें औनेपौने दामों पर बाजार में बेच देते हैं. गरीबों को दी गई मदद भी उन के हालात बदलने में नाकाम साबित होती है.

असली मदद

मुफ्त का खाना सिर्फ 5-6 घंटे को पेट भरता है. अगले वक्त फिर भूख लगती है. दान का कपड़ा भी चंद बरस चलता है, लेकिन अपनी मेहनत व दिमाग से आगे बढ़ने की राह ताउम्र काम आती है, इसलिए गरीबों को दान की बैसाखी देने से बेहतर है उन्हें खुद अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद करना. अपनी कोशिश से ऊपर उठ कर जिंदगी संवर कर निखर जाती है. भीख का कटोरा व दूसरों की और ताकना छूट जाता है.

लिहाजा, गरीबों पर तरस खा कर, उन्हें दान दे कर दूसरों के रहमोकरम पर जीने का आदी बनाने से अच्छा है. उन की सच्ची व सही मदद करना, ताकि उन में खुद पर यकीन पैदा हो और वे खुद गरीबी से नजात पाने की कोशिश करें. यह मुश्किल नहीं है.

करोड़ों गरीबों व भिखारियों को कम ब्याज पर 10 अरब डौलर के छोटे कर्ज दिला कर रोजगार में लगाने वाले बंगलादेश के मोहम्मद यूनुस को साल 2006 में नोबल पुरस्कार मिला था. उसी का नतीजा है कि आज बंगलादेश भारत व पाकिस्तान से ज्यादा तेजी से आगे बढ़ रहा है.

माइक्रो फाइनैंसिंग के जरीए गरीबों की मदद करने व कामयाब मुहिम चला कर गरीबों को नई जिंदगी दे कर मिसाल बने मोहम्मद यूनुस का नाम आज दुनियाभर में जाना जाता है.

भारत में भी ऐसे काम होना लाजिमी है. साथ ही, गरीबों की तालीम, हुनर व काबिलीयत बढ़ा कर उन्हें ज्यादा पैसा कमाने के गुर सिखा कर भी निठल्लेपन व नशे जैसी बुराइयों से नजात दिलाना भी उन की मदद करने से कम नहीं है.

गरीबों को माली इंतजाम के उपाय बता कर उन की फुजूलखर्ची घटाई जा सकती है. वे ज्यादा कमा कर बचत करना सीख सकते हैं. जागरूक हो कर धार्मिक अंधविश्वासों से छुटकारा पा सकते हैं. अपनी जेबें हलकी होने से बचा सकते हैं. इसलिए मुफ्त की चीजें देने से अच्छा है कि उन्हें साफसुथरा रह कर बेहतर व सुखी जिंदगी बिताने के तौरतरीके समझाए जाएं.

सही राह दिखाना ही गरीबों की सच्ची मदद करना है. इस से हमारे समाज में सदियों से चली आ रही गरीबी के कलंक से छुटकारा मिल सकता है. ●

कहानी

सूनी आंखें

अक्षय कुलश्रेष्ठ

सुबह के समय अरुण ने पत्नी सीमा से कहा, 'आज मुझे दफ्तर जरा जल्दी जाना है. मैं जब तक तैयार होता हूं तुम तब तक लंच बना दो, ब्रेकफास्ट भी तैयार कर दो, खा कर जाऊंगा.'

बिस्तर छोड़ते हुए सीमा तुनक कर बोली, 'आज ऐसा कौन सा काम है, जो इतनी जल्दी मचा रहे हैं?'

अरुण ने कहा, 'आज सुबह 11 बजे जरूरी मीटिंग है. सभी को समय पर बुलाया है.'

'ठीक है जी, तुम तैयार हो जाओ. मैं किचन देखती हूं,' सीमा मुसकान बिखेरते हुए बोली.

अरुण नहाधो कर तैयार हो गया और ब्रेकफास्ट मांगने लगा, क्योंकि उस के दफ्तर जाने का समय हो चुका था, इसलिए वह जल्दबाजी कर रहा था.

गैराज से कार निकाली. सड़क पर फर्राटा भर अरुण दफ्तर पहुंच गया.

दफ्तर के कामों से फुरसत पा कर अरुण आराम से कुरसी पर बैठा था. दफ्तर के दरवाजे पर एक अनजान औरत खड़ी अजीब नजरों से चारों ओर देख रही थी.

चपरासी दीपू के पूछने पर उस औरत ने बताया कि वह अरुण साहब से मिलना चाहती है. उस औरत को वहां रखे सोफे पर बिठा कर चपरासी दीपू अरुण को बताने चला गया.

''साहब, दरवाजे पर एक औरत खड़ी है, जो आप से मिलना चाहती है,'' दीपू ने अरुण से कहा.

''कौन है?'' अरुण ने पूछा.

''मैं नहीं जानता साहब,'' दीपू ने जवाब दिया.

''बुला लो. देखें, किस काम से आई है?'' अरुण ने कहा.

चपरासी दीपू उस औरत को अरुण के केबिन तक ले गया.

केबिन खोलने के साथ ही उस अजनबी औरत ने अंदर आने की इजाजत मांगी.

अरुण के हां कहने पर वह औरत अरुण के सामने खड़ी हो गई.

अरुण ने उस औरत को बैठने का इशारा करते हुए कहा, ''बताइए, मैं आप के लिए क्या कर सकता हूं?''

''सर, मेरा नाम संगीता है. मेरे पति सुरेश आप के दफ्तर में काम करते हैं.''

अरुण बोला, 'जी, औफिस के बहुत से काम वे देखते हैं. उन के बिना कई काम रुके हुए हैं.'

इस के बाद अरुण ने चपरासी दीपू को बुला कर चाय लाने को कहा.

चपरासी दीपू टेबल पर पानी रख गया और चाय लेने चला गया.

कुछ देर बाद ही चपरासी दीपू चाय ले आया.

चाय की चुसकी लेते हुए अरुण पूछने लगा, ''कहो, कैसे आना हुआ?''

''मैं यह बताने आई थी कि मेरे पति सुरेश की तबीयत आजकल ठीक नहीं रहती है, इसलिए वे कुछ दिनों के लिए दफ्तर नहीं आ सकेंगे.''

''क्या हुआ सुरेश को?'' हैरान होते हुए अरुण बोला.

''डाक्टर उन्हें अजीब सी बीमारी बता रहे हैं. अस्पताल से उन्हें आने ही नहीं दे रहे,'' संगीता रोने वाले अंदाज में बोली.

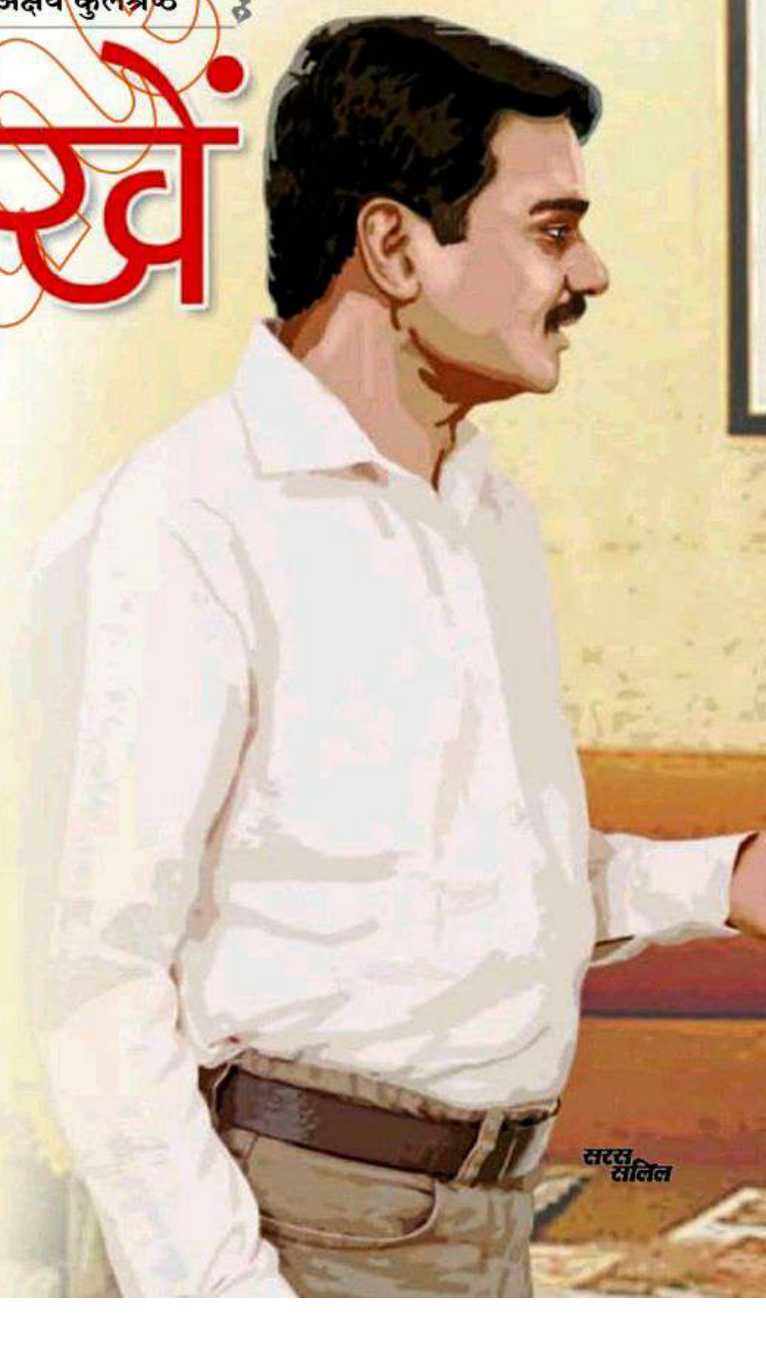
संगीता को रोता हुआ देख कर अरुण बोला, ''रोइए नहीं. पूरी बात बताइए कि उन को यह बीमारी कैसे लगी?''

''कुछ दिनों से ये लगातार गले में दर्द बता रहे थे, फिर तेज बुखार आया. पहले तो पास के डाक्टर से इलाज कराया, पर जब कोई फायदा न हुआ तो सरकारी अस्पताल चले गए.

''सरकारी अस्पताल में डाक्टर को दिखाया तो देखते ही उन्हें भरती कर लिया गया.

''जब अस्पताल से इन का फोन आया तो मैं भी सुन कर हैरान रह गई,'' संगीता ने अपने आंसू पोंछते हुए कहा.

''अभी वे अस्पताल में ही हैं?''



MK MAGAZINE KING

संगीता से अरुण ने पूछा.

''जी,'' संगीता ने जवाब दिया.

अरुण यह सुन कर परेशान हो गया. सुरेश का काम किसी और को देने के लिए चपरासी दीपू से कहा.

अरुण ने सुरेश की पत्नी संगीता को समझाते हुए कहा कि तुम अब बिलकुल चिंता न करो. घर जाओ और बेफिक्र रहो, उन्हें कुछ नहीं होगा.

संगीता अरुण से आश्वस्त हो कर घर आ गई और उसे भी घर आने के लिए कहा. अरुण ने भी जल्द समय निकाल कर घर आने के लिए कहा.

''सर, मैं कुछ कहना चाहती हूं,'' कुरसी से उठते समय संगीता ने झिझकते हुए पूछा.

''हांहां, कहिए, क्या कहना चाहती हैं आप...'' अरुण ने संगीता की ओर देखते हुए कहा.

''जी, मुझे कुछ पैसों की जरूरत है. इन की तनख्वाह मिलने पर काट लेना,'' संगीता ने सकुचाते हुए कहा.

''बताइए, कितने पैसे चाहिए?'' अरुण ने पूछा.

''जी, 20,000 रुपए चाहिए थे...'' संगीता संकोच करते हुए बोली.

''अभी तो इतने पैसे नहीं है, आप कलपरसों में आ कर ले जाना,'' अरुण ने कहा.

''ठीक है,'' यह सुन कर संगीता का मन उदास हो गया.

''आप जरा भी परेशान न होइए. मैं आप को पैसे दे दूंगा,'' संगीता के उदास चेहरे को देख कर कहा.



अरुण के दफ्तर से निकलने का समय हो चुका था, इसलिए संगीता भी अपने घर लौट आई.

अगले दिन दफ्तर के काम जल्द निबटा कर अरुण कुछ सोच में डूबा था, तभी उस के मन में अचानक ही सुरेश की पत्नी संगीता की पैसों वाली बात याद आ गई.

2 दिन बाद ही संगीता अरुण के दफ्तर पहुंची. चपरासी दीपू ने चायपानी ला कर टेबल पर रख दिया.

अरुण ने सुरेश की तबीयत के बारे में जानना चाहा. संगीता आंखों में आंसू लाते हुए बोली, ''अभी वे ठीक नहीं हैं. मैं अस्पताल गई थी, पर वहां किसी को मिलने नहीं दे रहे.''

''क्या...'' अरुण हैरानी से बोला.

''अस्पताल वाले कहते हैं, जब वे ठीक हो जाएंगे तो खुद ही घर आ जाएंगे.''

यह जान कर अरुण हैरान हो गया कि अस्पताल वाले किसी से मिलने नहीं दे रहे. वह आज शाम को ही उस से मिलने जाने वाला था.

अरुण ने संगीता को 20,000 रुपए के बजाय 30,000 रुपए दिए और कहा कि और भी पैसों की जरूरत हो तो बताना.

संगीता पैसे ले कर घर लौट आई.

21 मार्च की शाम जब अरुण हाथपैर धो कर बिस्तर पर बैठा, तभी उस की पत्नी सीमा चाय ले आई और बताने लगी कि रात 8 बजे राष्ट्र के नाम संदेश आएगा.

अरुण टीवी खोल कर तय समय पर बैठ गया. मोदी का संदेश सुनने के बाद अरुण ने पत्नी सीमा को अगले दिन रविवार को 'जनता कर्फ्यू' के बारे में बताया कि घर से किसी को बाहर नहीं निकलना है. साथ ही, यह भी बताया कि शाम 5 बजे अपनेअपने घरों से बाहर निकल कर थाली या बरतन, कुछ भी बजाएं.

उस दिन शाम को जब पड़ोसी ने घर से बाहर निकल कर थाली बजाई तो अरुण भी शोर सुन कर बाहर आया.

पत्नी सीमा भी खुश होते हुए थाली हाथ में लिए बाहर जोरजोर से बजाने लगी. उसे देख अरुण भी खुश हुआ.

सोमवार 23 मार्च को अरुण किसी जरूरी काम के निकल आने की वजह से औफिस नहीं गया.

उसी दिन शाम को फिर से राष्ट्र के नाम संदेश आया. 21 दिनों के लौकडाउन की खबर से वह भी हैरत में पड़ गया.

अगले दिन किसी तरह अरुण औफिस गया और जल्दी से सारे काम निबटा कर घर आ गया.

घर पर अरुण ने सीमा को औफिस में साथ काम करने वाले सुरेश के बारे में बताया कि उस की तबीयत ठीक नहीं है.

अगले दिन सड़क पर सख्ती होने से अरुण दफ्तर न जा सका. लौकडाउन होने की वजह से वह घर में रहने को मजबूर था.

इधर जब सुरेश को कोरोना होने की तसदीक हो गई तो संगीता के घर को क्वारंटीन कर दिया. अब वह घर से जरा भी बाहर नहीं निकल सकती थी.

उधर क्वारंटीन होने के कुछ दिन बाद ही अस्पताल से सुरेश के मरने की खबर आई, तो क्वारंटीन होने की वजह से वह घर से निकल नहीं सकती थी.

संगीता को अस्पताल वालों ने फोन पर ही सुरेश की लाश न देने की वजह बताई. वजह यह कि ऐसे मरीजों को वही लोग जलाते हैं, ताकि किसी और को यह बीमारी न लगे.

यह सुन कर संगीता घर में ही दहाड़े मारते हुए गश खा कर गिर पड़ी.

औफिस में भी सुरेश के मरने की खबर भिजवाई गई, पर औफिस बंद होने से किसी ने फोन नहीं उठाया.

जब लौकडाउन हटा तो अरुण यों ही संगीता के दिए पते पर घर पहुंच गया.

अरुण ने सुरेश के घर का दरवाजा खटखटाया, तो संगीता ने ही खोला.

संगीता को देख अरुण मुसकराते हुए बोला, ''कैसा है सुरेश? मैं उस की तबीयत पूछने चला आया.''

संगीता ने अंदर आने के लिए कहा, तो वह संगीता के पीछेपीछे चल दिया.

कमरे में अरुण को बिठा कर संगीता चाय बनाने किचन में चली गई.

कमरे का नजारा देख अरुण हैरत में पड़ गया, क्योंकि सुरेश की तसवीर पर फूल चढ़े हुए थे, अरुण समझ गया कि सुरेश अब नहीं रहा.

संगीता जब चाय लाई तो अरुण ने हैरानी से संगीता से पूछा तो उस ने रोते हुए बताया कि ये तो 30 मार्च को ही चल बसे थे. अस्पताल से खबर आई थी. मुझे भी क्वारंटीन कर दिया गया. फोन पर ही अस्पताल वालों ने लाश देने से मना कर दिया. क्या करती, घर में फूटफूट कर रोने के सिवा.

अरुण ने गौर किया कि सुरेश की फोटो के पास ही पैसे रखे थे, जो उस ने संगीता को दिए थे.

संगीता ने उन पैसों की ओर देखा और अरुण ने संगीता की इन सूनी आंखों में देखा और थके कदमों से अरुण वहां से लौट आया.

इन सूनी आंखों में अरुण को जाते देख संगीता की आंखों में आंसू आ गए. ●



नशे की आदत डलवा कर लूटते हैं लोग

नशा करने से खुद पर काबू नहीं रहता, नशा इनसान को हैवानियत में डाल देता. नशे के बाद इनसान रिश्ते भूल जाता है, नशे का असर बरबादियों की चाल देता.

ये लाइनें नशे के नुकसान पर बड़ी मौजूं लगती हैं. घात लगा कर दूसरों को लूटने वाले लोग अपना शिकार फांसने के लिए तरहतरह से चारा डाल कर जाल फैलाते हैं. मसलन, सुनसान जगहों पर अपने गिरोह की जवान औरतों को मदद मांगने के लिए खड़ा कर देते हैं, जो आगे चल कर अपने शिकार को लूटने के बाद खुद को उठा कर लाने व इज्जत लूटने के आरोप लगा कर शोर मचा देती हैं और अपने साथियों के साथ रफूचक्कर हो जाती हैं.

इसी तरह से कई लोग पहले दोस्ती का दिखावा करते हैं, फिर दूसरों को नशे की आदत डलवा कर अपना शिकार बना लेते हैं.

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में भी यही घटना घटी. वहां एक कारोबारी ने घाटे से उबरने के लिए अपने एक दोस्त से 5 लाख रुपए उधार लिए थे. उस ने रुपए तो ले लिए, लेकिन चुकाते वक्त उस की नीयत बदल गई.

धीरेधीरे 2 साल बीत गए, लेकिन उस ने वह रकम नहीं चुकाई. जब दोस्त ने तकाजा किया तो उस कर्जदार ने साहूकार दोस्त को दावत के नाम पर अपने घर बुलाना शुरू किया. अपनी पत्नी के हाथों उसे शराब पिलाने की आदत डलवा दी और फिर एक दिन मौका पा कर नशे की हालत में उसी की हत्या कर दी, जिस ने आड़े वक्त में उसे सहारा दिया था.

नशे की आदत डलवा कर शिकार बना लेने का यह मामला अकेला नहीं है. ऐसे मामले अकसर सुर्खियों में छाए रहते हैं खासकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पिछले कुछ सालों के दौरान ऐसी वारदातों की गिनती तेजी से बढ़ी है. जमीनजायदाद हड़पने, दूसरों की औलाद को बिगाड़ने, दूसरी औरतों को फांसने व रंजिश का बदला लेने के लिए अपनी जेब से खर्चा कर के शिकार को शराब पिलाने की आदत डलवाना आम बात है.

यह बात गौरतलब है कि मक्कार लोग दूसरों को कभी बेमकसद शराब नहीं पिलाते. इस के पीछे उन की गहरी चाल होती है, जिसे वे बाद में सूद समेत अपने शिकार से वसूल कर लेते हैं.

शातिर अपराधी साजिशन पहले अपना शिकार तलाशते हैं, फिर उसे नशे की आदत डलवाते हैं और मौका पाते ही जर, जोरू, जमीन हड़प कर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं. इस में नुकसान नशा करने वालों का और फायदा नशे की आदत डलवाने वाले का होता है.

शराब के धंधे में फायदा सरकार का है, क्योंकि उस का खजाना भरता है. भले ही लोग कंगाल व घरपरिवार बेहाल हों, लेकिन शराब की बिक्री से सरकारें जरूर मालामाल होती हैं.

इस दौरान शराब बेचने वालों की और पुलिस की जेबें भी खूब भरती हैं. इस में नुकसान हर तरह से शराब पीने वाले का होता है, लेकिन फिर भी लोगों की आंखें नहीं खुलतीं.

उलटा नशा करने को तो बहुत से लोग अपनी खुशकिस्मती समझते हैं, क्योंकि सदियों से भांग, धतूरे, शराब वगैरह का भोग देवीदेवताओं को लगा कर मंदिरों में उस का प्रसाद बंटता है, इसलिए दवा से ज्यादा पैसा दारू पर खर्च होता है.

शराब की खपत के मामले में भारत दुनिया में तीसरा सब से बड़ा देश है. जानकारों के मुताबिक, देशी, अंगरेजी व बीयर मिला कर शराब का कुल सालाना कारोबार 2 लाख करोड़ रुपए से भी ज्यादा है.

पाबंदी और चेतावनी के बावजूद भी

हरि विश्नोई

शराब की खपत लगातार बढ़ रही है, इसलिए पिछले 10 सालों में शराब के कारोबार में कई गुना इजाफा हुआ है. देश में 20 कंपनियां, 220 डिस्टलरी और 60,000 से भी ज्यादा दुकानों पर शराब बेची जाती है.

लूट का जरीया

शराबी दोस्त बड़ी जल्दी आपस में हम निवाला हम प्याला हो जाते हैं. आपस में साझेदारी कर के जल्दी व ज्यादा कमाई का जायजनाजायज धंधा शुरू कर देते हैं, लेकिन शराबखोरी करने वालों में ज्यादातर का मकसद एकदूसरे को लूटना होता है.

दरअसल, शराब वह बुराई है, जो अकेली नहीं आती, बल्कि अपने साथ में जुआ, चोरी, लूट व बलात्कार जैसे अपराध भी लाती है.

ज्यादातर नशेड़ी कमाने लायक नहीं रहते, इसलिए वे अपनी लत को पूरा करने के लिए दूसरों से उधार मांगने लगते हैं. जब पैसा वापस नहीं कर पाते, तो उन की काठ की हांड़ी बारबार नहीं

MK MAGAZINE KING

चढ़ पाती, इसलिए धीरेधीरे उन के अपने भी उन्हें उधार देना बंद कर देते हैं. इस के बाद जब उन की जेब में पैसे नहीं रहते तो नशेड़ी कोई भी जुर्म करने से नहीं चूकते.

दरअसल, नशे की लत के शिकार हुए इनसान को अगर नशा करने को न मिले तो उसे बेचैनी होने लगती है. ऐसे में वह कुछ भी करने पर उतारू हो जाता है.

पिछले दिनों मेरठ में एक बिगड़ैल व निखट्टू बेटे ने अपनी मां से शराब पीने के लिए पैसे मांगे. मां रोजरोज उसे पैसे देदे कर तंग आ चुकी थी, इसलिए उस ने पैसे देने से मना कर दिया.

नशे के लिए पैसे न मिलने पर गुस्सा खा कर उस शैतान ने अपने मांबाप को मार दिया था. इस से साबित होता है कि शराब जो न करा दे, वही कम है.

शराब घरपरिवार की सुखशांति व सेहत खराब करने के साथसाथ इसलिए भी नुकसानदायक है कि इसे पी कर इनसान हैवानियत की हदों को पार कर जाता है. उसे सहीगलत कुछ नहीं दिखता है.

शराब का नशा करने वाले ज्यादातर लोग लूटखसोट, चोरीडकैती व जुए वगैरह में लगे रहते हैं. बीते दिनों



गाजियाबाद में गाड़ी चुराने वालों का एक गिरोह पकड़ा गया था. इस गिरोह के बदमाश महंगी शराब पी कर जुआ खेलने व मौजमस्ती के लिए बसों, रेलों में लूट करते थे. बहुत से नौजवान शराब की लत के शिकार हो कर अपराध की दुनिया में चले जाते हैं.

नशा घुन व दीमक की तरह अच्छेभले परिवारों को खोखला कर के तबाह कर देता है. मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर जैसे जिलों के अनेक गांवों में ऐसे अनेक परिवार हैं, जो कभी सैकड़ों बीघा जमीन के मालिक व बेहद खुशहाल हुआ करते थे, लेकिन शराब की लत में उन की सारी जमीन बिक गई और आज वे दानेदाने को मुहताज हैं.

राजा से रंक बनने का यह सच्चा किस्सा सब पलक झपकते ही पूरा नहीं हो गया. इस में असावधानी उन की भी है. वे समझ ही नहीं सके कि शराब की आदत डालने वाले उन के दोस्त नहीं, बल्कि दुश्मन हैं.

अक्ल पर ओले

शराब पीने की लत से अक्ल पर ओले पड़ जाते हैं. बीवीबच्चों और पड़ोसियों को गाली देना, उन से मारपीट, लड़ाईझगड़ा व कलहक्लेश करना तो आम बात है.

पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में एक गांव है, रानी की सराय. पिछले दिनों वहां एक बाप शराब के नशे में इतना धुत्त हो गया कि उस ने अपनी बेटी से ही रेप कर दिया.

दरअसल, नशे की लत में डूब कर इनसान के होशोहवास गुम हो जाते हैं, अक्ल घास चरने चली जाती है, तनमन बेकाबू हो जाता है और इनसान के गिरने की कोई सीमा नहीं रहती. बहुत से नशेड़ी नालियों में गिरे पड़े रहते हैं. नशा इनसान के उठने, चलने, संभलने व जिंदगी की दौड़ में आगे बढ़ कर सुख से जीने में कई तरह से रुकावटें पैदा करता है.

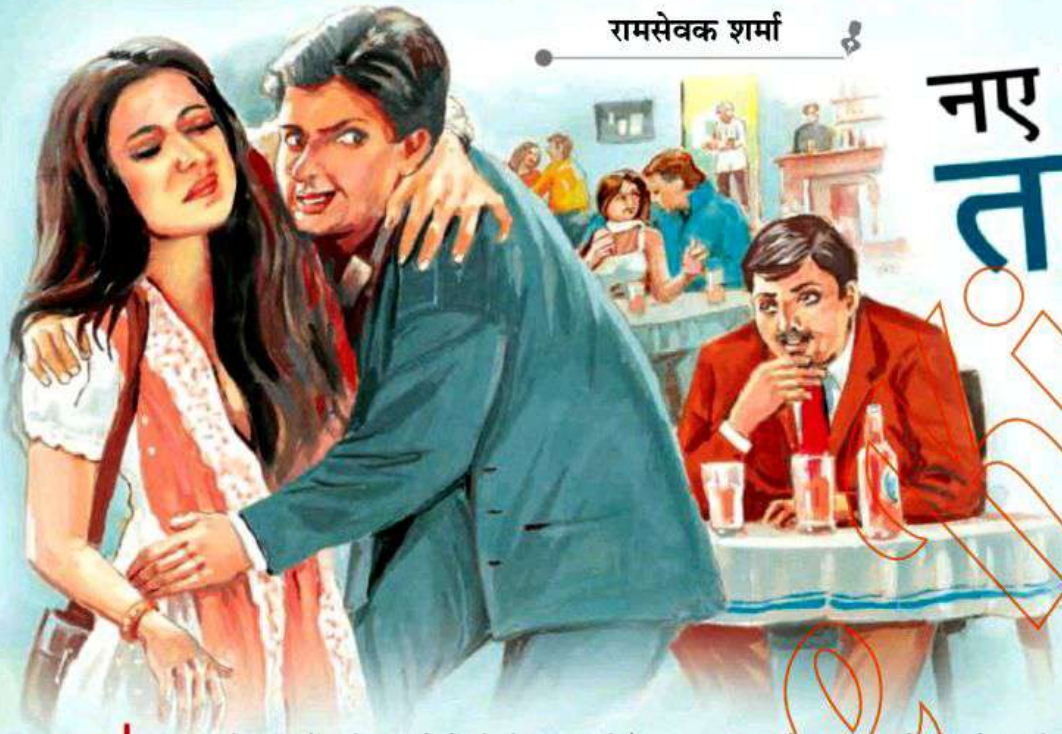
लिहाजा, नशे की लत से बचने के लिए ऐसे लोगों से चौकस रहना बेहद जरूरी है, जो लूटने के लिए दूसरों को शराब पीना व पिलाना सिखाते हैं.

इस के लिए चालाक व मक्कार किस्म के लोग भोलेभाले लोगों के साथ अपनेपन व यारीदोस्ती का दिखावा करते हैं और तीजत्योहार, दावतपार्टी व खातिरदारी के नाम पर धीरेधीरे उन्हें नशे की आदत डलवा देते हैं, इसलिए जब भी कोई शराब पीने का न्योता दे तो संभल जाएं, वरना बिन बुलाई आफत व मुसीबतों से बचना नामुमकिन है. ●



रामसेवक शर्मा

नए चेहरे की तलाश



पूरा हाल ही तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजने लगा. प्रैस रिपोर्टरों के कैमरे चमकने लगे. कंचन को 'नृत्य सुंदरी' के अवार्ड से नवाजा जा रहा था.

उसी समय भंडारी ने कंचन के पास जा कर बधाई देते हुए कहा, "मिस कंचन, मैं मुंबई से आया हूं. अगर आप फिल्मों में काम करना चाहें, तो यह रहा मेरा कार्ड. मैं अलंकार होटल में ठहरा हूं.

कंचन के पिता बैंक की नौकरी से रिटायर हो चुके थे. उन के कोई दूसरी औलाद नहीं थी, इसलिए कंचन का लालनपालन बहुत ही लाड़प्यार से हुआ था. पढ़ाईलिखाई में वह होशियार थी. डांस सीखने का भी उसे शौक था. कदकाठी की अच्छी कंचन रूपरंग में भी खूबसूरत थी.

कंचन के मन में फिल्मी हीरोइन बनने के ख्वाब पहले से ही करवट ले रहे थे. उस ने सोचा भी नहीं था कि फिल्मों में जाने का मौका उसे इतनी जल्दी मिल जाएगा. वह रातभर भंडारी का कार्ड ले कर सोई. अगले दिन दोपहर होतेहोते वह अलंकार होटल पहुंच गई.

"क्या लेंगी... ठंडा या गरम?" भंडारी ने पूछा.

"ठंडा लूंगी," कंचन ने कहा.

भंडारी ने वेटर को ठंडा लाने का आर्डर दिया. इस बीच उस ने कंचन को कई एंगल से देखा.

भंडारी ने कंचन की आंखों में देखते हुए कहा, "मिस कंचन, मैं यहां फिल्मों के लिए नए चेहरे की तलाश में आया हूं. मुश्किल यह है कि जहां भी जाता हूं, वहां नए चेहरों की भीड़ लग जाती है.

"मैं हर किसी को तो हीरोइन बना नहीं सकता, जिस में टेलैंट होगा, वही तो फिल्मों में आ सकेगा..."

"मेरे बारे में आप की क्या राय है?" कंचन ने शरमाते हुए भंडारी से पूछा.

भंडारी ने कहा, "तुम्हारा गोराभूरा भरा हुआ बदन है. फिगर भी अच्छी है. तुम्हारे मुसकराने पर गालों में जो ये गड्ढे बनते हैं, वे भी लाजवाब हैं. डांस में तो तुम होशियार हो ही. रही ऐक्टिंग की बात, तो ऐक्टिंग ट्रेनिंग जौइन करवा दूंगा."

भंडारी को लगा कि चिड़िया फंस रही है. उस ने कंचन की ओर देखते हुए फिर कहा, "मिस कंचन, मुझ पर भरोसा रखो. मैं आज रात को मुंबई जा रहा हूं. 2 दिन बाद मेरे इस पते पर आ जाना. साथ में कोई ज्यादा सामान लाने की जरूरत नहीं है. वहां मैं सारा इंतजाम कर दूंगा. अभी तुम अपने घरपरिवार या फिर यारदोस्त को भी मत बताना."

कंचन के ऊपर भंडारी की बातों का जादू की तरह असर हुआ. वह अभी से अपनेआप को फिल्मी हीरोइन समझने लगी थी. उस ने मन ही मन तय किया कि वह मुंबई जरूर जाएगी. रही मांबाप की बात, तो ढेर सारी दौलत आने के बाद सब ठीक हो जाएगा.

आज भंडारी को गए तीसरा दिन था. कंचन ने चुपचाप मुंबई जाने की तैयारी कर ली. स्टेशन पर पहुंचते ही उस ने भंडारी को फोन कर दिया कि वह सुबह की गाड़ी से मुंबई आ रही है. भंडारी ने उसे दादर स्टेशन पर मिलने के लिए कहा.

कंचन पहली बार मुंबई आई थी. दादर स्टेशन पर उतरते ही उसे भंडारी मिल गया. स्टेशन के बाहर निकलते ही भंडारी ने कंचन को कार में बैठाया और कार तेजी से चल दी.

भंडारी कंचन को एक आलीशन बंगले में ले गया. कंचन की आंखें भी उस बंगले को देख कर चौंधिया गईं.

भंडारी ने कहा, "मिस कंचन, आप थकी हुई हैं. नहाधो कर आराम कीजिए. मैं शाम 7 बजे आऊंगा."

शाम को 7 बजे से पहले ही भंडारी आ गया. उस ने कंचन को बड़े ध्यान से देखा और बोला, "मिस कंचन, वैसे तो सब ठीक है. पर तुम्हें यहां कुछ खास लोगों से मिलना होगा. पहनने को कुछ बढ़िया कपड़े भी चाहिए... वैसे, मैं खरीदारी करवा दूंगा.

"आज एक खास आदमी से तुम्हारी मुलाकात करानी है. मिस्टर कापड़िया फिल्म इंडस्ट्री की जानीमानी हस्तियों में से एक हैं. वे दर्जनों फिल्में बना चुके हैं. बहुत ही कामयाब फिल्मकार हैं."

भंडारी ने कंचन को गाड़ी में बैठाया और थोड़ी ही देर में वे समुद्र किनारे बने होटल स्टार में जा पहुंचे.

कापड़िया वहां पहले से मौजूद था. भंडारी ने कंचन का परिचय कराया. कापड़िया कंचन को देख कर बहुत खुश हुआ. एक अनछुई कली उसे मिलने वाली थी.

कापड़िया ने भंडारी से कहा, "क्या लेंगे... ठंडा या गरम?"

भंडारी ने कहा, "कल की होने वाली हीरोइन हमारे सामने है. आज तो कुछ यादगार पार्टी हो जाए. आज का मीनू मिस कंचन की पसंद का होगा."

कंचन ने केवल ठंडा पीने की हामी भरी.

"ठीक है, आज हम भी मिस कंचन की पसंद का ही ड्रिंक लेंगे."

कापड़िया ने वेटर को ठंडा सोफ्ट ड्रिंक लाने का आर्डर दिया. थोड़ी ही देर में वेटर ने टेबल पर ड्रिंक सजा दिया.

भंडारी ने गिलास में ड्रिंक डालते हुए कहा, "मिस कंचन, यह फिल्मी दुनिया है. यहां कुछ ज्यादा ही दिखावा करना पड़ता है. सामने देखो, फिल्मी हस्तियां बैठी हुई हैं. अपना मनोरंजन तो कर रही हैं, साथ ही अपने हावभाव से दूसरों को भी लुभा रही हैं."

कंचन ने एक बार फिर होटल में उफनते हुए मादक माहौल को देखा. वहां की बातचीत और हवा में अजीब सी गंध तैर रही थी. तीनों लोग ठंडा पीने लगे. इसी बीच भंडारी ने कंचन के गिलास में एक पुड़िया घोल दी, जिसे कंचन नहीं देख सकी.

कापड़िया ने कंचन को तिरछी नजरों से देखा और कहा, "मिस कंचन, हम लोग फिल्मों में करोड़ों रुपए लगाते हैं. किसी नए कलाकार के लेने में रिस्क होता है. बैडरूम सीन भी लेने पड़ते हैं.

"अगर नया हीरो उस सीन को करने में शरमा गया, तो अपना बेड़ा गर्क समझो, इसलिए हम बहुत सोचसमझ कर किसी नए हीरो को लेते हैं."

कंचन ने सोचा, 'मुश्किल से मुझे यह मौका मिला है. अगर अपने भरोसे से इन्हें नहीं जीता, तो काम नहीं बनेगा...'

अचानक कंचन को अपना सिर भारी सा लगा. जगमगाती रोशनी नाचती सी दिखी. उस ने भंडारी से कहा, "मेरा सिर चकरा रहा है. मुझे नींद सी आ रही है. मैं अब बैठी नहीं रह सकूंगी."

भंडारी ने कापड़िया की ओर देखा और कहा, "चलो, हम लोग चलते हैं. कल स्क्रिप्ट पर चर्चा करेंगे."

भंडारी ने कंचन को सहारा दिया और होटल के बाहर खड़ी कार तक लाया. कंचन पर पुड़िया का पूरा असर हो गया था.

कंचन को साथ ले कर भंडारी कापड़िया के साथ बैठ गया. वे गाड़ी को

सीधे एक कोठी पर ले गए. कंचन पूरी तरह बेसुध थी.

सुबह जब कंचन की नींद खुली, तो उस का बदन दर्द के मारे फटा जा रहा था. वह समझ गई कि उस के साथ धोखा हुआ है. अब पछतावे के सिवा वह कर भी क्या सकती थी... घर तो वापस जाने से रही. वह तकिए में मुंह छिपा कर सिसकती रही.

शाम होते ही मिस्टर कापड़िया दोबारा कमरे में आया.

"हैलो मिस कंचन, कैसी हो? तुम्हारे लिए जल्द ही एक फिल्म शुरू कर रहा हूं. फिल्म के फाइनैंसर जयंत भाई आए थे. सभी बातें तय हो गई हैं. चलो, तुम्हें कुछ खरीदारी करवा दूं. हमारी नई हीरोइन जल्द ही बुलंदियों को छूने वाली है."

कंचन बेमन से उठी. उसे फिल्म में हीरोइन बनने का सपना बारबार खींच रहा था. कंचन ने भंडारी के बारे में पूछा, तो कापड़िया ने कहा कि वह फिल्म की लोकेशन देखने बाहर गया है. इस फिल्म की शूटिंग विदेशों में भी होगी.

कंचन जब रात को लौटी, तो उस के पास नए फैशन के कपड़े थे. वह अपनेआप को फिल्मी हीरोइन समझने लगी थी. इसी तरह कापड़िया के साथ पूरा महीना निकल गया. वह रोज रात को मिस्टर कापड़िया के साथ सोती.

एक दिन कापड़िया ने कंचन से कहा, "मिस कंचन, मैं फिल्म के सिलसिले में बाहर जा रहा हूं. इस बीच जयंत भाई आएंगे. वही फिल्मी ट्रेनिंग भी दिलवाएंगे. मेरे लौटने पर फिल्म का भव्य मुहूर्त होगा."

जयंत भाई भी कंचन को फिल्मी ख्वाब दिखाते रहे. इस बीच न तो भंडारी लोकेशन देख कर लौटा और न ही कापड़िया अमेरिका से. जो खेल कापड़िया उस के साथ खेलता रहा था, वही खेल जयंत भाई ने भी खेला.

मुंबई आने पर कंचन पहली बार 3 दिन तक अकेली रही. दोपहर का समय था. वह चिंता में डूबी एक मैगजीन पलट रही थी कि बाहर की घंटी बजी.

कंचन ने दरवाजा खोला, तो दरवाजे पर कुछ दादाटाइप लोग खड़े थे. उन्होंने कंचन से कहा, "मैडम, यह कोठी खाली कीजिए. इस का एग्रीमैंट खत्म हो गया है... किराए पर थी."

"मैं कहां जाऊं...? यहां तो मेरा कोई भी नहीं है. मिस्टर कापड़िया और जयंत भाई को आ जाने दीजिए."

"कापड़िया और जयंत भाई अब कभी नहीं आएंगे."

"और भंडारी...?"

"देखिए मैडम, भंडारी आप को कहां मिलेगा... वह तो नए चेहरे की तलाश में पूरा हिंदुस्तान घूम रहा होगा."

"देखिए, मुझे कुछ तो समय दीजिए. यहां मेरा कोई नहीं है. अपना कुछ इंतजाम करती हूं. आप की बड़ी मेहरबानी होगी."

"ठीक है, हम 24 घंटे का समय देते हैं. कल इसी समय आएंगे. अगर यहां से नहीं जाओगी, तो धक्के मार कर तुम्हें बाहर निकाल देंगे. यह मुंबई है मुंबई. ध्यान रखना मैडम."

कंचन के पैरों से जमीन खिसक गई. उसे ध्यान आया कि इस बीच मिस रीटा से उस की मुलाकात हुई थी. उस ने कहा था कि जब जरूरत हो, मुझे याद करना. रीटा का कार्ड उस के पर्स में था. उस ने फोन किया, "मैं कंचन बोल रही हूं."

'ओह, कंचन, कैसी हो? बोलो, क्या बात है?'

कंचन ने रोतेरोते फोन पर सारी बात बता दी.

रीटा ने कहा, 'मैं जानती थी कि एक दिन तुम्हारे साथ भी वही होगा, जो मेरे साथ हुआ था. ये अच्छेभले घर की लड़कियों को फिल्मी दुनिया के ख्वाब दिखाते हैं. तुम्हारी तरह मैं भी इन के चंगुल में फंस गई थी. हीरोइन तो नहीं बन सकी, लेकिन कालगर्ल जरूर बन गई.

'मैं ने भंडारी के साथ तुम्हें पहले दिन ही देखा था. मुझे भी यही भंडारी का बच्चा हीरोइन बनाने के लिए लाया था. अब मैं घर की रही न घाट की.

'तू ऐसा कर, मेरे पास आजा और मेरी रूम पार्टनर बन जा. शाम 7 बजे मुझे कहीं निकलना है. फोन पर फोन आते हैं. ...समझ गई न, फिल्मी सिटिंग पर चलना है.

'मेरी और तुम्हारी जैसी न जाने कितनी ही लड़कियां इस मायानगरी में आ गईं और कितनी ही आने वाली हैं. यह सिलसिला कब रुकेगा, कहा नहीं जा सकता.

'आज भी मिस्टर भंडारी जैसे कई दलाल फिल्मी हीरोइन बनाने के लिए नए चेहरों की तलाश में हैं. मिस्टर कापड़िया और जयंत भाई भी नए चेहरों को ले कर फिल्म बना रहे हैं, लेकिन इन की फिल्म आज तक नहीं बनी.' ●



आखिरी भाग

गुलदारनी

कुमुद कुमार

पिछले अंक में आप ने पढ़ा था : *जटपुर गांव के आसपास के जंगलों में एक मादा गुलदारनी का खौफ था. इस गांव में ब्याह कर आई स्वाति का भी अपनी ससुराल में दबदबा था. उस ने गांव के चौधरी राम सिंह को अपनी तरफ कर लिया था. वह गांव के मनचलों के साथ भी सैल्फी खिचवाती थी. इस बीच स्वाति के पति नरदेव पर छेड़छाड़ करने का आरोप लगा. स्वाति ने चौधरी राम सिंह को यह मामला सुलझाने के लिए कहा.* ***अब पढ़िए आगे...***

बाबूराम ने चौधरी राम सिंह की बात का मान रखते हुए कहा, "चौधरी साहब, आप की पगड़ी का मान रख रहा हूं, नहीं तो थाने में रिपोर्ट लिखवा कर नरदेव को जेल भिजवा कर ही दम लेता. बस चौधरी साहब, हमारा भी इतना मान रख लो कि नरदेव से माफी मंगवा दो."

रात के साए में चौधरी राम सिंह स्वाति और नरदेव को ले कर बाबूराम के घर पहुंचे. नरदेव ने बाबूराम से माफी मांग ली और आइंदा कभी ऐसी हरकत न करने की कसम खाई. सब ने यही समझा कि नरदेव के माफी मांगने से पहले ही मामले का खात्मा हो गया.

चौधरी राम सिंह भी मामले को निबटा समझ कर यही सोच रहे थे कि अब तो स्वाति उन के एहसान तले दब जाएगी और उन के फंदे में फंस जाएगी, लेकिन स्वाति फंदे में फंसने वाली कहां थी. वह उन्हें तरसाती रही.

उस रात चौधरी राम सिंह को खबर मिली कि जंगल में 'गुलदारनी' ने एक पिंजरा और पलट दिया है, लेकिन जंगल महकमे का अफसर भी उसे पकड़ने पर आमादा था. उस का मानना है कि बकरे की अम्मां कब तक खैर मनाएगी. आज नहीं तो कल पिंजरे में फंस कर रहेगी.

उधर गांव के खिलाड़ी लड़कों को जब यह पता चला कि स्वाति भाभी और नरदेव भैया का बाबूराम से कोई पंगा हो गया है और वे परेशानी में हैं तो उन अल्हड़ लड़कों ने बिना सोचेसमझे स्वाति भाभी को खुश करने के लिए बाबूराम के बेटे कुंदन की धुनाई कर दी.

यह खबर सुन कर स्वाति बहुत खुश हुई. उस ने लड़कों को बुलवा कर उन के साथ सैल्फी ली और उन्हें मिठाई खिलाई.

लेकिन ऐसा करते हुए स्वाति भूल गई कि बाबूराम का नासूर अभी हरा है. जब बाबूराम को यह पता चला कि कुंदन की पिटाई करने वाले लड़कों को स्वाति ने मिठाई खिलाई है, तो वह आगबबूला हो गया. उसे लगा कि स्वाति ने उसे बेवकूफ बनाया है. एक ओर तो नरदेव से माफी मंगवा दी, वहीं दूसरी ओर उस के लड़के को पिटवा दिया.

इस मामले को सुलझाने में भी एक बार फिर चौधरी राम सिंह काम आए. उन्होंने समझाबुझा कर किसी तरह बाबूराम को शांत किया.

लेकिन स्वाति और नरदेव से भी जलने वाले कम न थे. उन का पड़ोसी हरिया उन से खूब जलता था. हरिया का नरदेव से किसी न किसी बात पर पंगा होता ही रहता था. कोई भी एकदूसरे को नीचा दिखाने का मौका नहीं चूकता था. स्वाति के बढ़ते दबदबे से भी हरिया चिंतित रहता था.

नरदेव पर लगा छेड़खानी का आरोप हरिया के लिए स्वाति और नरदेव को नीचा दिखाने का सुनहरा मौका था. वह उन की गांवभर में बदनामी तो कर ही रहा था, मामले को किसी तरह दबने भी नहीं देना चाहता था. उस ने बाबूराम की कमजोर नब्ज पकड़ी.

हरिया दारू की बोतल ले कर बाबूराम के चबूतरे पर पहुंचा. नमकीन की थैली उस ने कुरते की जेब में ठूंस रखी थी.

हरिया के हाथ में बोतल देख कर बाबूराम की आंखें चमक उठीं, "क्या ले आया रे हरिया आज?"

"कुछ नहीं, बस लालपरी है. सोचा, बहुत दिन हो गए बड़े भैया के साथ दो घूंट लगा लूं."

यह सुन कर बाबूराम हरिया के लिए चारपाई पर जगह बनाने के लिए ऊपर को खिसक गया.

"बैठो, आराम से बैठो हरिया. यह तुम्हारा ही तो घर है."

"हांहां, बाबूराम भैया. हम ने कब इसे गैरों का घर समझा है. यह तो तुम हो जो हमें मुसीबत में भी याद नहीं करते."

"ऐसी कोई बात नहीं है हरिया, बस बात को क्या बढ़ाएं?"

इसी बीच बाबूराम घर से 2 गिलास और नमकीन के लिए प्लेट ले आया और कोठरी का दरवाजा बंद कर दिया.

हरिया ने पैग बनाने शुरू किए और लालपरी का रंग धीरेधीरे बाबूराम पर चढ़ना शुरू हो गया.

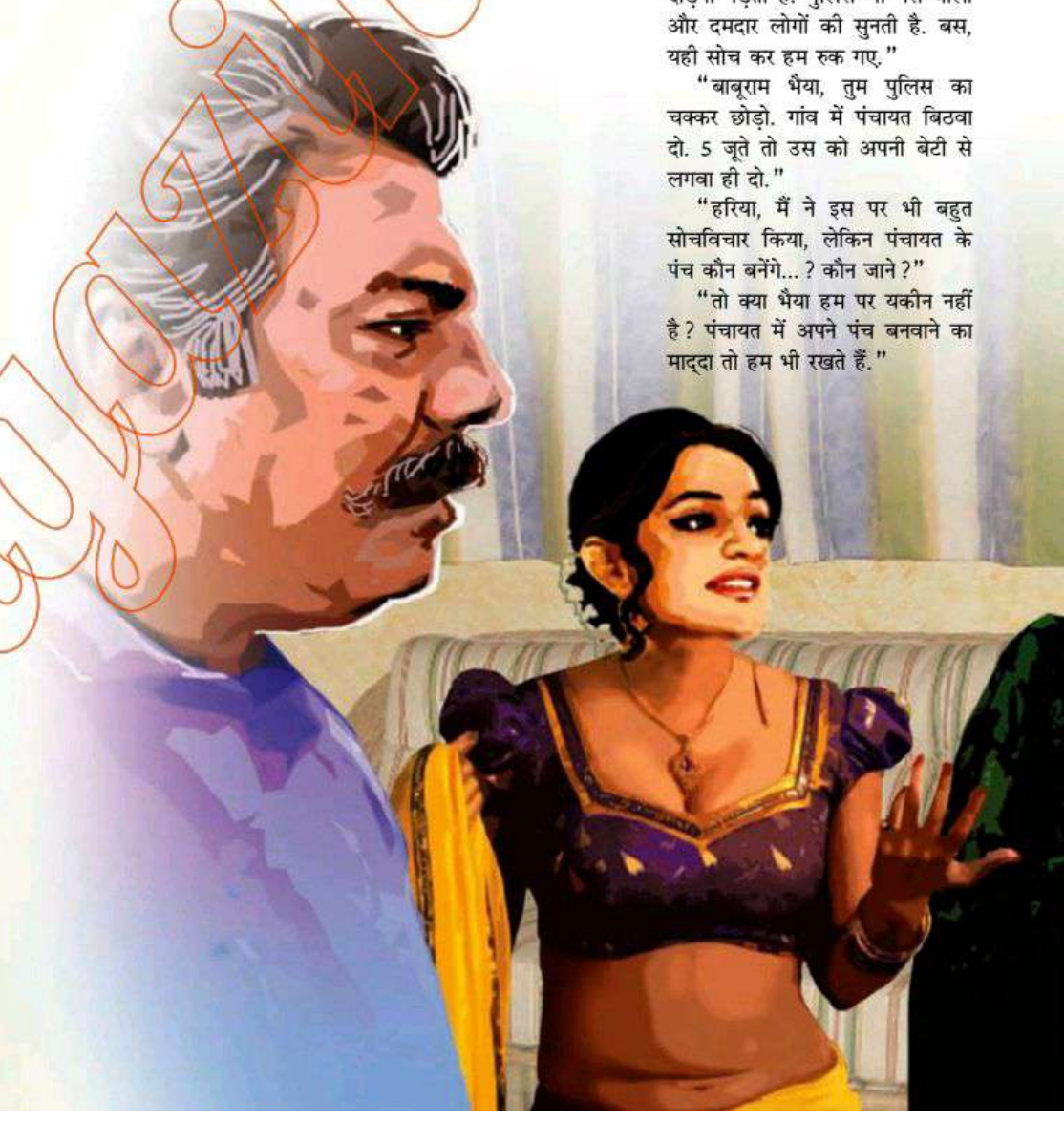
मौका ताड़ कर हरिया ने पांसा फेंका, "बाबूराम भैया, हमारे और तुम्हारे संबंध बचपन से कितने गाढ़े हैं. तुम्हारी बेटी को नरदेव ने छेड़ा तो छुरी अपने दिल पर चल गई भैया. तुम्हारी बेटी हमारी बेटी भी तो है. तुम ने इस बेइज्जती को सहन कैसे कर लिया भैया?"

"हरिया, हम गरीब आदमी जो हैं. पुलिस का केस बन जाए तो दिनरात दौड़ना पड़ता है. पुलिस भी पैसे वालों और दमदार लोगों की सुनती है. बस, यही सोच कर हम रुक गए."

"बाबूराम भैया, तुम पुलिस का चक्कर छोड़ो. गांव में पंचायत बिठवा दो. 5 जूते तो उस को अपनी बेटी से लगवा ही दो."

"हरिया, मैं ने इस पर भी बहुत सोचविचार किया, लेकिन पंचायत के पंच कौन बनेंगे...? कौन जाने?"

"तो क्या भैया हम पर यकीन नहीं है? पंचायत में अपने पंच बनवाने का माद्दा तो हम भी रखते हैं."



MK MAGAZINE KING

"तो ठीक है हरिया, तू ही बिसात बिछा. गांव वालों से बात कर. चौधरी से बात कर. वही कुछ कर सकते हैं. गांव में उन की धाक है. समझदार भी हैं और निष्पक्ष भी."

हरिया ने अगले दिन से ही स्वाति और नरदेव के खिलाफ गोटी बिछानी शुरू कर दी.

चौधरी राम सिंह के कानों में खबर पहुंची तो वे सीधे स्वाति के पास पहुंचे. उन्होंने स्वाति को चेताते हुए कहा, "स्वाति, पंचायत बैठ गई, तो बेइज्जती होगी. इस आग पर बिना पानी डाले काम न चलेगा. प्रधान तेजप्रताप न माना, तो पंचायत बैठ कर ही रहेगी."

"तो फिर क्या करना होगा... ?"

"प्रधान मेरे हाथ में नहीं है. उस की लगाम कसने की कोई तरकीब सोचो. यह सारी आग पंचायत की हरिया की लगाई हुई है."

स्वाति समझ गई कि चौधरी राम सिंह जितना इस मामले में कर सकते थे, उन्होंने कर लिया. प्रधान का शिकार किए बिना काम नहीं चलेगा.

स्वाति ने अपना दिमाग लड़ाया. प्रधान की पत्नी रत्नो से उस की बातचीत तो है, लेकिन दूसरा महल्ला होने के चलते उस का उधर कम ही आनाजाना है. स्वाति की जानकारी में था कि रत्नो देशी घी बड़ा अच्छा तैयार करती है. उसी का बहाना बना कर वह प्रधानजी के घर पहुंच गई.

"स्वाति बेटी, तू किसी के हाथ खबर भिजवा देती तो मैं देशी घी तेरे घर ही पहुंचवा देती."

"चाची, तुम्हारे दर्शन करे बहुत दिन हो गए थे. मैं ने सोचा तुम्हारे दर्शन कर लूं. आनेजाने से ही तो जानपहचान बढ़ती है."

"हां, सो तो है. तू भी कोई दावत का इतंजाम कर. खुशखबरी सुना तो हम भी तेरे घर आएं."

"यह भली कही चाचीजी. आज ही लो. शाम को प्रधानजी की और तुम्हारी दावत पक्की."

स्वाति को तो मौका मिलना चाहिए था. उस ने प्रधानजी और रत्नो की दावत का पूरा इंतजाम कर लिया.

स्वाति ने खूब अच्छे पकवान बनाए. प्रधानजी के बराबर में बैठ कर उन की खूब सेवा की. खाने के बाद चाय की प्याली पेश की गई.

स्वाति जानती थी कि खाने के वक्त ज्यादा बातें नहीं हो पातीं, लेकिन चाय का समय तो होता ही इन बातों के लिए है.

स्वाति ने दांव चला, "रत्नो चाची, ऐसा लगता है कि आप कभी बाहर घूमने नहीं जातीं?"

"यह बात प्रधानजी से कहा. हम कितना चाहते हैं कि हरिद्वार के दर्शन कर आएं, लेकिन ये कभी ले जाते ही नहीं."

अब तक प्रधानजी स्वाति के मोहपाश में फंस चुके थे. उन्होंने भी अपने तरकश से तीर निकाला, "स्वाति, तुम्हीं बताओ, क्या अकेले घूमना अच्छा लगता है. कोई साथ हो..."

"हम हैं न प्रधानजी. नरदेव और मैं चलूंगी आप दोनों के साथ. और हमारी कार किस काम आएगी," स्वाति ने प्रधानजी की बात को लपकते हुए और उस का समाधान करते हुए कहा.

2 दिन बाद वे चारों हरिद्वार में घूम रहे थे. रात में फिल्म का शो देखा. होटल में ठहरे. सारा बंदोबस्त स्वाति का था. गंगा में चारों ने एक ही जगह स्नान किया. प्रधानजी न चाह कर भी कनखियों से स्वाति के भीगे कमसिन बदन को देखते रहे.

स्वाति सब समझ रही थी कि प्रधानजी मन हार चुके हैं. स्वाति ने जब देखा कि प्रधानजी उस की बात को अब 'न' नहीं करेंगे तो मौका देख कर कहा, "प्रधानजी, यह हरिया हमारा पुराना दुश्मन है. सारा मामला सुलझ गया तो पंचायत की बात उठा दी. अब आप ही बताओ कि क्या गांव में ऐसे बैर बढ़ाना चाहिए?"

प्रधानजी तो स्वाति पर लट्टू हो चुके थे. स्वाति का दिल जीतने के लिए उन्होंने कहा, "स्वाति, मेरे होते हुए तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं. मेरे होते हुए पंचायत नहीं होगी. बाबूराम को मैं समझा दूंगा, हरिया को तुम देखो. वह अड़ियल बैल है. उस से मेरी नहीं बनती है."

स्वाति प्रधानजी के मुंह से यही तो सुनना चाहती थी. उस का 'मिशन प्रधान' कामयाब हुआ.

चौधरी राम सिंह को जब पता चला कि स्वाति प्रधानजी के साथ हरिद्वार घूम आई है तो उन की काटो तो खून नहीं वाली हालत हो गई. उन्हें उन की 'गुलदारनी' के बारे में सूचना मिली कि उस ने आज एक नया तगड़ा शिकार किया है.

उस रात 9 बजे चौधरी राम सिंह के पास स्वाति का फोन आया. वह उन से तुरंत मिलना चाहती थी. चौधरी सबकुछ भूल कर स्वाति के घर की ओर लपके, मानो उन्हें दुनिया की दौलत मिल गई हो.

नरदेव चौधरी राम सिंह को घर के अंदर ले गया. स्वाति गुलाबी गाउन पहने सोफे पर बैठी थी. उस ने चौधरी को भी सोफे पर ही बैठा लिया और कहा, "चौधरी साहब, हमारे तो बस आप ही हो. आप के कहे बिना तो हम एक कदम नहीं चलते.

"आप ने प्रधानजी को मना लेने की बात कही थी, हम ने उन्हें मना लिया. अब बचा हरिया, उस से एक बार मिलाने का जुगाड़ बिठा दो, तो बात बन जाए."

आज रसोईघर में चाय नरदेव बना रहा था. स्वाति बेझिझक बोल रही थी, लेकिन चौधरी को समझ नहीं आ रहा था कि वे अपने मन की बात कहें कि स्वाति की बात का जवाब दें.

स्वाति के साथ अकेले बैठने का मौका, वह भी रात में उन्हें पहली बार मिला था. इस से पहले कि वे अपने मन की कुछ कह पाते, नरदेव चाय ले कर आ गया.

चौधरी राम सिंह मन मसोस कर रह गए. स्वाति की बात का जवाब देते हुए उन्होंने कहा, "हरिया, तुम्हारे घर तो आएगा नहीं, उसे किसी बहाने से मुझे अपने घर की बैठक पर ही बुलाना पड़ेगा."

"चौधरी साहब, आप किसी बहाने से भी बस हरिया को अपनी बैठक पर बुला लो. बस, फिर मैं ने जानी या उस ने जानी."

चौधरी राम सिंह स्वाति की बात को कैसे टालते? उन्होंने अगले दिन ही शाम को हरिया को अपनी बैठक पर बुला लिया.

दिन तकरीबन ढल चुका था. हरिया के आते ही उन्होंने चुपके से स्वाति को फोन कर दिया.

स्वाति नरदेव के साथ चौधरी राम सिंह की बैठक पर पहुंची. हरिया को देखते ही वह भड़क गई, "क्यों रे हरिया, तू हमारी बहुत इज्जत उतारने में लगा है. बहुत पंचायत कराने में लगा है. बोल अभी उतारू तेरी इज्जत. अभी फाड़ूं अपना ब्लाउज और शोर मचाऊं कि हरिया ने मेरी इज्जत पर हाथ डाला है."

स्वाति का यह गुस्साया रूप देख कर हरिया तो हरिया चौधरी राम सिंह भी दंग रह गए. हरिया को लगा कि उस ने किस से पंगा मोल ले लिया. यहां तो लेने के देने पड़ने की नौबत आ गई. कहां तो वह नरदेव को जूते लगवाने की बिसात बिछा रहा था, कहां खुद जूते खाने की नौबत आ गई.

हरिया ने अपने बचाव का रास्ता ढूंढ़ते हुए कहा, "न जी न, मैं कोई पंचायत नहीं करवा रहा. मैं तो अपने घर जा रहा हूं."

उस दिन से गांव में हरिया की बोलती बंद हो गई. चौधरी के मन में भी डर बैठ गया कि जो हरिया को ऐसी धमकी दे सकती है, वह एक दिन उस के साथ भी ऐसा कर सकती है.

अगले दिन चौधरी राम सिंह को खबर मिली कि पिछली रात जंगल की 'गुलदारनी' ने एक पिंजरा और पलट दिया और पिंजरा लगाने वालों को भी घायल कर दिया.

चौधरी राम सिंह को स्वाति अभी भी बुलाती है, पर चौधरी या तो कोई बहाना बना देते हैं या फिर अपनी पत्नी के साथ ही स्वाति के घर जाते हैं. स्वाति अभी भी उन की खूब सेवा करती है. सुना है कि बिल्ली प्रजाति के जानवर अपने शिकार पर वापस लौटते हैं. ●



पछतावा

जनकदेव जनक

"सर, मुझे छोड़ दीजिए, मैं आप के पैर पड़ता हूं. मैं अपराधी नहीं, मुसीबत का मारा इनसान हूं..."

जब इंस्पैक्टर राजन छेत्री ने उसे टौर्चर करते हुए थर्ड डिगरी का इस्तेमाल किया, तब रतन बापबाप बोल उठा. मारे दर्द के उस का रोमरोम कांप उठा. उसे ऐसा लगा, जैसे प्राण शरीर छोड़ कर उड़ जाएगा.

रतन ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह पुलिस के हत्थे चढ़ेगा, क्योंकि उसे अपनी काबीलियत और होशियारी पर कुछ ज्यादा ही घमंड था. पर वह जैसे ही ओम सिनेमा के पास पहुंचा, वहां सादे लिबास में तैनात पुलिस वालों ने उसे दबोच लिया. उस की चीते जैसी फुती और कुत्ते जैसी सतर्कता न जाने कहां फुर्र हो गई. उस पर सिलसिलेवार बम धमाके करने का गंभीर आरोप था, जिस में पुलिस उस को सरगर्मी के साथ तलाश कर रही थी.

रतन की गिरफ्तारी के बाद उसे जिला हैडक्वार्टर में लाया गया. जहां आरक्षी निरीक्षक राजन छेत्री उस से कुछ गुप्त चीजें उगलवाने की कोशिश में था.

"बोल, तेरा नाम क्या है?"

"सर, अभी बताता हूं... सर..., पहले थोड़ा सा पानी पिला दीजिए न... मारे प्यास के मेरा गला सूखा जा रहा है. बिलकुल कांटे की तरह चुभ रहा है..." उस ने अपनी जबान को अपने होंठों पर फेरते हुए कहा.

"कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती, तू ऐसे नहीं मानेगा?"

"सर....सर...सर..., मेहरबानी कर के मुझे थोड़ा सा पानी... प्लीज सर..."

"अच्छा, ठीक है...," इतना बोल कर इंस्पैक्टर राजन छेत्री ने 2 गरम समोसे और एक गिलास गरम चाय मंगवा कर उसे दिया. साथ ही, जलती निगाहों से उसे घूरते हुए कहा, "फिलहाल तो यही मिलेगा..., तू समोसे खा कर चाय पी ले, प्यास मिट जाएगी."

मरता क्या न करता, भूखप्यास से बेहाल रतन उस के हाथों से समोसे झटक कर जल्दीजल्दी खाने लगा. लेकिन गला सूखा होने की वजह से निगलने में उसे दिक्कत होने लगी तो उस ने गरम चाय सुड़क ली. किसी तरह उस ने समोसा खाया और चाय पी, लेकिन प्यास कम होने की जगह और बढ़ गई.

"सर... सर... थोड़ा सा पानी... चुल्लू में ही दे दीजिए न, नहीं तो मैं जीतेजी मर जाऊंगा," वह मारे प्यास के तड़पते हुए हाथ जोड़ कर बोला. लेकिन इंस्पैक्टर राजन छेत्री पर उस का कोई असर नहीं दिखा.

"पहले अपना नाम बता?"

"रतन विश्वास."

"तेरे बाप का नाम क्या है?"

"सपन विश्वास."

"सर, नेताजी आए हैं. उन्होंने आप को याद किया है," इसी बीच थाने का एक सिपाही कस्टडी रूम में पहुंचा और आते के साथ ही एक पार्टी के कार्यकर्त्ता के आने की सूचना दी.

नेता का नाम सुनते ही इंस्पैक्टर राजन छेत्री गुस्से से लाल हो गया. कमरे से निकलते हुए उस ने एक बार रतन को घूरा जरूर, जैसे कह रहा हो कि तुम्हें छोड़ेंगे नहीं.

कमरे से इंस्पैक्टर राजन छेत्री के बाहर निकलते ही रतन ने गहरी सांस ली. वह समझ नहीं पा रहा था कि उस की मुखबिरी किस ने पुलिस से की है. उसे गिरफ्तार कराने में किस का हाथ है? कहीं मयंक और उस की प्रेमिका नैना थापा का हाथ तो नहीं. दार्जिलिंग के टाइगर हिल पर पिछले दिनों हुई थी उन से मुलाकात.

नैना टाइगर हिल में उगते सूरज को निहार रही थी. दूरदूर तक फैला हुआ नीला आकाश, उस के नीचे पहाड़ पर खूबसूरत कुदरती नजारे, रंगबिरंगी चिड़ियों का शोर मनभावन लग रहे थे. वह इन सब में खोई हुई थी कि अचानक रतन ने पीछे से आ कर उस की आंखों को अपनी उंगलियों से बंद कर दिया. वह हड़बड़ा कर अपनी आंखों पर से हथेलियों को हटाने की कोशिश करने लगी और बोली, 'अरे मयंक, यह क्या मजाक है. मेरी आंखों के ऊपर से हटाओ हाथ, टाइगर हिल की वादियों का नजारा जीभर कर देख तो लेने दो.'

'ऊहूं, पहले बुझो, मैं कौन हूं?'

अचानक पीछे से आई आवाज को नैना ने पहचान लिया. वह मयंक की आवाज नहीं, बल्कि रतन की आवाज थी. मयंक ने उसे बताया था कि रतन अच्छा इनसान नहीं है. उस का साथ आतंकवादियों से है.

रतन की आवाज पहचानते ही वह आगबबूला हो उठी और उस का हाथ अपनी आंखों से जबरन हटा दिया. उस की तरफ मुड़ कर नफरत भरी नजरों से देखते हुए वह बोली थी, 'तू ने मुझे छुआ क्यों? मेरी आंखें बंद करने वाले तुम होते कौन हो? दफा हो जाओ मेरी नजरों के सामने से..."

'अरे नैना, इतनी छोटी सी बात पर इतना बड़ा गुस्सा. ऐसी आंखमिचौनी तो हम कितनी बार खेल चुके हैं. प्लीज नैना, गुस्सा थूक दो. मैं अपने किए की माफी मांगता हूं,' 'रतन ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा, 'यह मयंक कौन है, जो तुम्हारे कान भरता रहता है. अनजान लोगों से दूर ही रहो तो अच्छा है. तुम उस के साथ यहां आई हो और वह तुम्हें ही अकेला छोड़ कर अपने दोस्तों के साथ किसी मसले पर बातचीत कर रहा है. मैं उधर से गुजर रहा था तो तुम पर नजर ठहर गई.'

'बंद करो अपनी बकवास. मयंक तुम्हारे जैसा अपराधी नहीं, बल्कि वह एक सच्चा इनसान है. इस की मैं तहेदिल से कद्र करती हूं. तुम यहां से जाते हो कि पुलिस को बुलाऊं...'

'ओह, मैं तेरे लिए इतना बेगाना हो गया हूं नैना कि पुलिस को बुलाने की धमकी दे रही हो? खैर, जाता हूं मैं. अगर मेरे प्रति थोड़ी सी भी ममता और प्यार हो, तो कल ओम सिनेमा घर के पास दोपहर के शो के दौरान मिलना...' इतना बोल कर रतन वहां से चला गया.

"अरे रतन, किन खयालों में डूबे हो?" अचानक नेता सुरेश राय लौकअप में बंद रतन को देखते ही बोल पड़े.

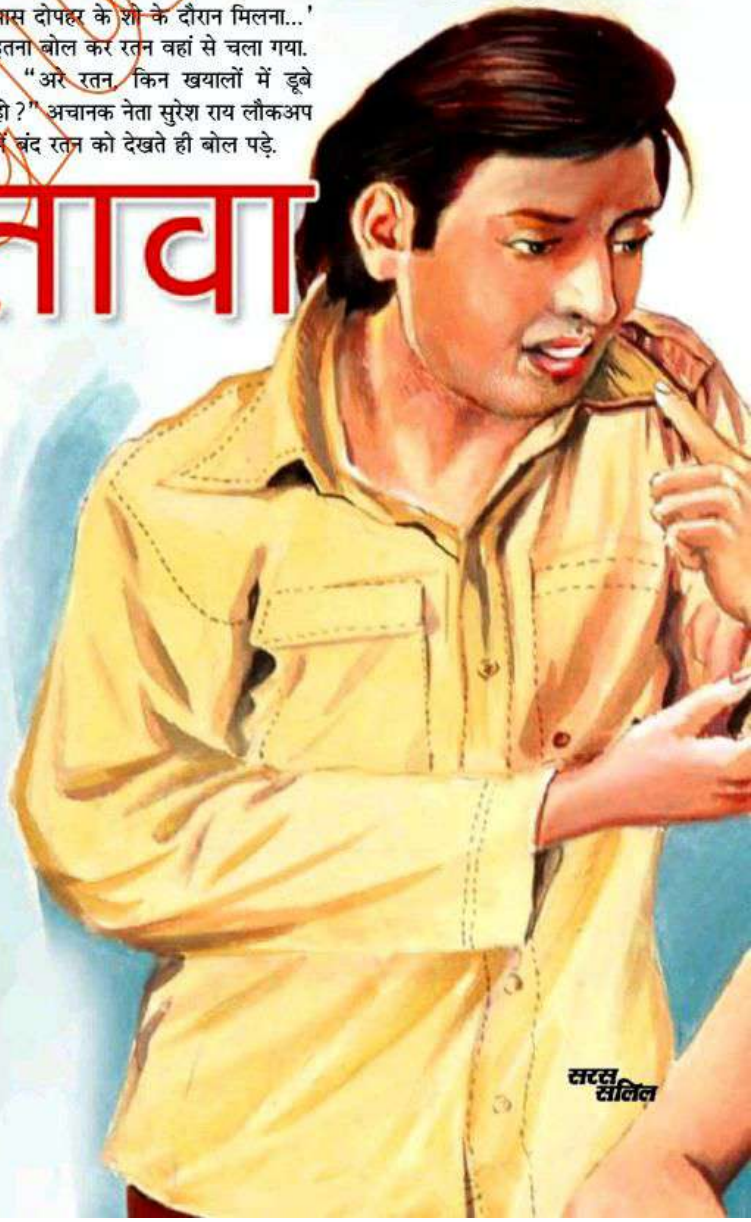
मंत्री सुरेश राय को देखते ही रतन अपने खयालों की दुनिया से वापस लौटा और अपने ऊपर होने वाले जोरजुल्म से बचने के लिए गुजारिश करते हुए बोला, "सर, मुझे किसी तरह इंस्पैक्टर से बचा लीजिए, नहीं तो वह मुझे जिंदा नहीं छोड़ेगा..."

"अरे रतन, तू बेकुसूर है. मेरे पास तेरी बेगुनाही के पुख्ता सुबूत हैं. एसपी ने इंस्पैक्टर छेत्री को फोन कर तुम्हें छोड़ने के लिए आदेश दे दिया है."

ठीक उसी समय इंस्पैक्टर राजन छेत्री आया और लौकअप पर तैनात सिपाही से रतन को छोड़ देने के लिए कहा.

बाहर निकलने के बाद मंत्री ने रतन को अपनी गाड़ी में बिठाया. तब रतन मंत्री के एहसानों के दबाव में बोला, "सर, मैं आप का यह उपकार जिंदगीभर नहीं भूल पाऊंगा."

"अरे, कैसा उपकार? मैं तेरे काम आ गया तो बदले में तू भी तो मेरा काम कर देता है. तेरे जैसे जोशीले नौजवान मुझे बहुत पसंद हैं..." गाड़ी की पिछली सीट पर बैठे हुए मंत्री सुरेश राय ने रतन



सरस सलिल

MK MAGAZINE KING

की पीठ को धीरे से थपथपाया और फिर कहा, "तुम्हारी मदद से ही तो मैं अपने दुश्मनों के दांत खट्टे करता हूं."

उन की गाड़ी बीरपाड़ा शहर से काफी दूर निकल गई थी. अचानक ड्राइवर ने ब्रेक लगाया, दरवाजा खोल कर रतन बाहर निकल गया था. जहां सड़क पर एक बेबस लड़की 'बचाओ... बचाओ...' की आवाज लगाते हुए दौड़ रही थी और उस के पीछे 4-5 गुंडे लगे हुए थे.

यह देख कर मंत्रीजी के हाथपैर फूल गए. उन्होंने घबराते हुए रतन को आवाज लगाई, "अरे रतन, उन के पीछे क्यों भागे जा रहे हो. मेरी जान आफत में डालोगे क्या? ड्राइवर तुम्हें भी कई बार कह चुका हूं कि रात में गाड़ी अनजान जगह पर मत रोको..'

"सौरी सर," ड्राइवर ने माफी मांगी, लेकिन रतन पर मंत्री की बातों का कोई असर नहीं पड़ा.

रतन ने दौड़ रहे एक गुंडे को पकड़ा और उस के पेट में अपनी लात से 2-4 किक जमाई. वह तिलमिला उठा. वार करने की जगह अपनी जान बचा कर चाय बागान में वह भाग गया. रतन दूसरे अपराधियों की ओर बढ़ा, लेकिन वे सब अपने को फंसते देख कर नौ दो ग्यारह हो गए.

सड़क पर दौड़ रही लड़की हांफती हुई धम्म से गिर गई. रतन ने उसे अपने कंधे पर उठाया और गाड़ी की पिछली सीट पर डाल दिया.

"अरे रतन, यह क्या चक्कर है. तुम्हें लड़की की जरूरत थी तो मुझ से बोला होता," मंत्री सुरेश राय ने उस से अपना गुस्सा इजहार किया.

"सर, गलत काम जरूर करता हूं, लेकिन शराब और शबाब से दूर रहता हूं. अनजान जगह पर किसी बेबस लड़की की जान बचाना कोई अपराध तो नहीं है. इनसानियत के नाते मैं ने अपना कर्तव्य निभाया है."

"देखो, फालतू बातों के लिए मेरे पास समय नहीं है. हक और धर्म की बातें हम अपने भाषणों में करते हैं, अपनी जिंदगी में नहीं. अब इस लड़की को कहां छोड़ोगे?"

"इसे सिलीगुड़ी के किसी अस्पताल में ले जाएंगे सर," विधान मार्ग पर बने सुभाषचंद्र नर्सिंग होम में उस अनजान लड़की को इलाज के लिए भरती करा दिया गया. साथ ही, इस की सूचना स्थानीय पुलिस को भी दी गई.

जब लड़की पर रतन की नजर गई, उस का कलेजा धकधक करने लगा. वह तो नैना थापा है, उसे देखने के बाद वह पत्थर की तरह वहीं खड़ा रह गया. कभी खून से लथपथ उस के सलवारसूट को देख रहा था तो कभी उस के मुरझाए चेहरे को. उसे सामूहिक हवस का शिकार बनाया था. दूसरे ही पल रतन के मन ने कहा, 'यह लड़की तो मुझ से नफरत करती है. कहीं होश में आने के बाद कोई नई मुसीबत न खड़ी कर दे. अब यहां से निकलने में ही भलाई है.'

"रतन, इस लड़की के पीछे तो तू ने अपना सारा काम चौपट कर दिया. पहले इसे उन बदमाशों से बचाया, उस के बाद अस्पताल में भरती कराया और अब इस के चेहरे पर टकटकी लगाए खड़ा है. आखिर क्या बात है?" नर्सिंग होम में देर होने पर नेता सुरेश राय ने रतन को टोका.

"नहीं, नहीं सर," वह हड़बड़ा कर बोल उठा और उन के साथ बाहर निकल गया. साथ ही जातेजाते रतन सोचने लगा, 'इस लड़की का क्या भरोसा, कब क्या आरोप लगा दे, इस से दूर रहने में ही भलाई है.'

जब नैना को होश आया तो एक बार रतन का चेहरा उस के दिमाग में नाच उठा. टाइगर हिल में दी गई उस की चेतावनी उस के मन को झकझोरने लगी. उसे अपनेआप पर पछतावा होने लगा, क्यों उस ने आंख मूंद कर मयंक पर भरोसा किया. जिस ने उस की इज्जत लूट ली. उस के साथियों ने उस का सबकुछ छीन लिया.

नैना की आंखें भर आईं. उस को अंदर ही अंदर घुटन महसूस होने लगी. वह सोचने लगी कि उस से शैतान और इनसान को पहचाने में कैसे भूल हो गई?

अचानक नैना के सामने रतन और मयंक की तसवीरें उभर आईं. दोनों ही अपराधी थे. मयंक कई मासूम लड़कियों को अपनी हवस का शिकार बनाने के बाद उन की हत्या कर देता था, तो रतन कई बार बम धमाके कर चुका था. एक हैवान था, तो दूसरा शैतान. दोनों जनता के दुश्मन थे.

अस्पताल से घर आने के बाद भी नैना को चैन नहीं मिला. लोकलाज के डर से उस ने कालेज जाना बंद कर दिया था. दिनरात उस के घर में जमघट लगाने वाली सहेलियां, अब उस से बात करने में भी कतराती थीं. हमदर्दी जताने के बजाय तरहतरह के ताने देती थीं.

एक दिन नैना के घर रतन पहुंच गया. उस समय नैना की आंखों में आंसू थे. नैना की हालत देख कर रतन भी रोना आ गया.

रतन ने अपनी डबडबाई आंखों को रूमाल से पोंछा और फिर उस से बोला, "नैना प्लीज... मत रोओ, चाहे मयंक को सजा हो भी गई तो मैं उसे जिंदा नहीं छोड़ूंगा..."

रतन की आवाज सुनते ही नैना बिछावन से उठ बैठी. रतन को देखते ही उस का मन किया कि उस के गले से लग जाए और रोरो कर अपना मन हलका कर ले, पर दूसरे ही पल उस का विचार बदल गया. उस के मन ने कहा कि रतन तो देशद्रोही है, किसी दुष्कर्मी से भी बड़ा अपराधी. जिस ने देश की एकता, अखंडता और अमन को भंग करने का संकल्प ले रखा हो, वैसे अपराधी से वह कैसे संबंध रख सकती है? यह सोच कर उस का मन नफरत से भर उठा. रतन को घूरते हुए उस की नजरें हिकारत से भर उठीं.

"नैना हिम्मत से काम लो, हौसला बनाए रखो..."

"मत लो मेरा नाम, मुझे किसी की हमदर्दी की जरूरत नहीं. तुम सब एक ही थाली के चट्टेबट्टे हो. जिस थाली में खाते हो, उसी में छेद करते हो. तुम लोगों का एक ही धर्म है, इनसानियत को दागदार करना," नैना गुस्से में रतन पर बरस पड़ी.

"तुम गलत समझ रही हो, नैना. मैं वैसा आदमी नहीं हूं. मुझे कुछ लोगों ने एक साजिश के तहत फंसाया है. पुलिस के पास मेरे खिलाफ कोई सुबूत नहीं है. बम धमाके के मामले में मुझे नाहक ही घसीटा जा रहा है," रतन ने अपनी सफाई देनी चाही.

"फंसने के डर से कोई भी अपराधी अपना सुबूत वारदात वाली जगह पर नहीं छोड़ना चाहता, तो भला तुम क्यों छोड़ोगे? तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि नैना का बलात्कार हो गया, फिर भी वह किसी लाश की तरह जिंदा है. तुम पत्थरदिल हैवान, दिल की भाषा क्या जानो...?" अपने शब्दों के बाणों से रतन पर वार किया.

"चुप रहो नैना, बहुत हो चुका..." गुस्से में रतन चीखा और बोला, "मैं एक इनसान हूं, बिलकुल तुम्हारी तरह. बस फर्क इतना है कि तुम अमीर बाप की बेटी हो और मैं गरीब का बेटा. तुम्हें क्या पता, इनसान कैसे अपराधी बनता है. जा कर उन मुसीबतों और हालात से पूछो.

"जब मैं नौकरी के लिए दरदर की ठोकरें खा रहा था. काम नहीं मिलने पर भूख और प्यास से बिलबिलाता था. मेरे घर में न अनाज था, न पैसा. गरीब बेटे की मां एकएक पैसे के लिए उस की राह ताकती थी. अनजाने में एक दिन मैं नक्सलियों के हाथ लग गया. उन के दबाव में आ कर उन का काम करने लगा. उन के इशारे पर काम जरूर किया, लेकिन मौका मिलते ही एक दिन सब की पोल खोल कर रख दूंगा नैना, लेकिन क्या उन के खूनी पंजों से मुझे कानून बचा पाएगा...?"

तभी नैना के मोबाइल की घंटी बज उठी. वह अपनी जगह से उठ कर बालकौनी में चली गई. उस ने काल रिसीव किया. कुछ पलों तक बात करने के बाद वह वापस आई और बोली, "आगे क्या हुआ...?"

"मेरे इस हालात के जिम्मेदार देश के भाग्यविधाता कहलाने वाले नेता हैं, जो अपने फायदे के लिए लोगों का इस्तेमाल करते हैं. कभी चुनाव के दौरान, तो कभी किसी दुश्मन को सबक सिखाने के लिए, तो कभी जनता में दहशत फैलाने के लिए. हर बार मेरे जैसे नौजवानों को गोली, बारूद जैस विस्फोटकों से जूझना पड़ता है. अपना सिर ऊंचा उठाने के लिए ये नेता लड़कों को गलत रास्ते पर धकलते हैं. देश के रक्षक ही भक्षक हो गए हैं."

तुम कहती हो कि मेरे पास दिल नहीं है. अगर दिल नहीं होता तो सड़क पर खून से लथपथ तुम को अपराधियों से क्यों बचाता. अगर हैवान होता तो तुम्हें मरने के लिए छोड़ नहीं देता. अस्पताल

में भरती कराने के बाद कई बार तुम से मिलने गया, लेकिन डर था कि मुझे पहचानने के बाद तुम कोई नया हंगामा न खड़ा कर दो, इसलिए कभी तुम से बात करने की हिम्मत नहीं हुई. पर आज दिल ने कहा कि जो होगा देखा जाएगा, इसलिए तुम से मिलने आ गया..."

"क्या मुझे तू ने बचाया... ?" हैरानी से नैना उसे देखते हुए बोल पड़ी और कहा, "अस्पताल के डाक्टरों का कहना है कि मंत्री सुरेश राय ने मुझे भरती कराया था."

"हां, उन्होंने सही कहा था. मैं मंत्रीजी के लिए काम करता हूं. उस रात उन्हीं के साथ था. तभी सड़क पर एक लड़की को बेतहाशा दौड़ते हुए देखा था. जिस का कुछ लोग उस का पीछा कर रहे थे. अगर मैं गलत बोल रहा हूं तो लो मंत्रीजी का नंबर, उन्हीं से पूछ लो, क्योंकि बिना सुबूत के तुम्हें यकीन नहीं होगा."

"नहीं रतन, अब मुझे सुबूत की जरूरत नहीं है. हो सके तो मुझे माफ कर दो..."

"अरे, इस में माफी की क्या बात है."

"जरूरत है रतन, मैं ने मयंक के साथ मिल कर पुलिस को फोन कर बताया था कि तुम ओम सिनेमा घर के पास दोपहर का शो देखने जा रहे हो. तुम्हारी गिरफ्तारी के लिए मैं खुद गुनाहगार हूं."

"खैर, तू ने जो कुछ किया, वह मयंक के बहकावे में आ कर किया. मैं तो कानून की नजरों में गुनाहगार हूं, पर तुम चाहो तो मैं बेकुसूर साबित हो सकता हूं."

"मेरे रतन, मेरे अच्छे रतन," अचानक नैना रतन के सीने से चिपक गई. देर तक दोनों एकदूसरे की बांहों में खोए रहे. जब मन का मैल धुल गया तो एकदूसरे से अलग हुए.

रतन ने उस से कहा, "नैना, अब कोई ऐसा काम नहीं करूंगा, जिस से तुम्हें शर्मिंदगी महसूस हो. आज ही मैं खुद को कानून के हवाले कर दूंगा. अगर उम्रभर के लिए कारावास भी हो जाए तो मेरी यादों के सहारे जेल की सलाखों के पीछे पूरी उम्र गुजार दूंगा..."

"रतन, मैं ने एक भूल और कर दी है..." नैना रतन से बोली, "तुम्हें इस के लिए कहीं जाना नहीं पड़ेगा. मेरे फ्लैट के बाहर पुलिस है. थोड़ी देर पहले इंसपैक्टर राजन छेत्री का फोन आया था."

"नैना, मेरी अच्छी नैना, अब जेल में ही अपने किए का पछतावा करूंगा," अचानक रतन ने उसे अपनी बांहों में समेट लिया और उस के होंठों को बेतहाशा चूमने लगा. ●

मजाक

मैरिज प्रीमियर लीग में आप का स्वागत है

रामविलास जांगिड़

हां तो दोस्तो, आप का इस भरी दोपहरी में स्वागत है इस मैरिज प्रीमियर लीग में. इस समय आसमान में सूरज तेज तमतमा रहा है. पारा 40 डिगरी के पार जा रहा है. सूरज खुद किसी छाया के इंतजार में कुहराम मचा रहा है.

वह देखो सामने से दूल्हे महाराज आ रहे हैं. कोट, टाई और पैंट के थ्रीपीस में भरे हुए, पान पर पान खाए जा रहे हैं. एक हाथ में रूमाल है, तो दूसरे हाथ में तलवार लहराए जा रहे हैं. भरी दोपहरी में शादी का ख्वाब सजा रहे हैं.

तीसरे फूफाजी हलवाई को फोन में घुस कर घुड़की पिला रहे हैं. गरम दोपहर में गरमगरम पकौड़े तलने के लिए हलवाई को खुद गरम तेल में तल रहे हैं.

जो फूफाजी भरी गरमी में जोर से कांप रहे हैं, ये फूफाजी नंबर 4 का तमगा गले में लटकाए किसी फूफी के बच्चे को गले लटकाए डोल रहे हैं. चारों ओर घनघोर और भयंकर फूफाबाजी चल रही है.

सड़क को दहला रहा है. दूल्हे के मांबाप हिसाब लगा रहे हैं कि इस दूल्हा बाजार में बेटा कितने रुपए में बेचा गया है. फूफाजी से डर रहे हैं कि उन्होंने इस माल को घटिया लोगों के यहां खपाया है.

तेज धूप में ब्यूटीपार्लरित कन्याओं व महाकन्याओं का पूरा मेकअप बह कर जमीन पर आ गिरा है. दूल्हा मंडी में इस तरह का सीन आप को इस भरी दोपहर में दिखाई पड़ रहा है.

हर शादी का राष्ट्रीय गीत 'बहारो फूल बरसाओ...' बन चुका है. इस गीत ने न जाने कितने गधों को घोड़ी पर बिठाया है.

जब शाम को बैंड वाले शराब की 5 बोतलें गटक कर यह गीत गाएंगे कि 'बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है...', तो मैं दोबारा आप को इस मैरिज प्रीमियर लीग मैच में ले आऊंगा. तब तक महबूब महाशय ताश की तीन पत्ती भी खेल चुके होंगे.

अब तक हर तरह के फूफाओं ने अपनी फूंफागर्दी की शानदार गेंदबाजी की है. तब तक एक छोटे से ब्रेक के लिए जा रहा हूं. आप कहीं नहीं जाइएगा. शादियां कहांकहां और किसकिस की हो रही हैं, यह देखने के लिए लगे रहिए हमारे मैरिज प्रीमियर लीग के इस चैनल के प्राइमटाइम पर. ●

तो दोस्तो, आप का स्वागत ही स्वागत है. वह देखो सामने से फूफाजी आ रहे हैं और वे लहराते हुए बरातियों को डांस करने के कायदे समझा रहे हैं. इधर से नागिन डांस बनाया जा रहा है. रूमाल मुंह में बांधेखांसे मिरगीनुमा मिरगई डांस हुआ जा रहा है. बीचबीच में अच्छीखासी टांगों के बीच घुस कर जो भी जीव सड़क पर रेंग रहा है, वह नागिन डांस का हीरो माना जा रहा है.

ऊलजुलूल, उलटपलट, पसरापसरी सबकुछ नागिन डांस के नाम पर ही परोसा जा रहा है. शादी के लिए आतुरचातुर कन्याकुंवर 'मेरा मन डोले...' गाने पर डोलायमान हुए जा रहे हैं.

एक फूफाजी शरबत पीपी कर आइसक्रीम वाले को हिदायत दे रहे हैं, तो वहीं दूसरे फूफाजी ट्रैफिक हवलदार बन कर पूरी सड़क पर लेटेलेटे ही बरात को कायदे से सड़क पर चलाने के नियम समझा रहे हैं.

यह लो, सामने से अब 'खाई के पान बनारस वाला...' का म्यूजिक बज उठा है. बूआजी कन्याओं को डांसातुर होने के लिए नियमकायदों की किताब ले कर उन्हें पाठ पढ़ा रही हैं.

फूफाजी नियमकायदों की गरमागरम चाय इस भरी गरमी में सब को पिला रहे हैं. घोड़ी पर चढ़ा गधा, जो इस समय शादी के लिए उतावला है, यह सब सीन देख कर एक पान फिर से मुंह में दबा रहा है.

दूल्हे के मुंह, नाक, कान, गले से पसीने का नाला बह रहा है. वह 10 रुपए के नोट को हाथ में ले कर हवा में लहरा रहा है. एक 10 रुपए के नोट को मुंह में दाबे नोट को पान की पीक में नहला रहा है.

बैंड मास्टर कानफोड़क म्यूजिक से

सरस सलिल

कहानी



जीने की राह

इरफना परवीन

मैं चांद साधारण घर से थी. मुझे याद है कि मेरे पापा के पास हम 6 बहनभाई को अच्छा खिलाने और पहनाने के बाद कोई खास पूंजी नहीं बचती थी. जैसे ही मैं ने कालेज किया, लोगों ने मेरी शादी के बारे में बात करना शुरू कर दिया. मैं इस के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं थी. मुझे अभी भी पढ़ना था और मेरा परिवार भी अभी शादी करने के बारे में ज्यादा नहीं सोच रहा था. वजह न जाने क्या थी, पर वे लोग तैयार नहीं थे.

मेरी जिंदगी गुजरती जा रही थी. मैं ट्यूशन क्लास दे कर जो भी कमाती थी, सब खानेपहनने पर ही खर्च कर देती थी. नौकरी करने की इजाजत नहीं थी, क्योंकि ऐसा माना जाता था कि मुसलिम लड़कियां नौकरी नहीं करतीं.

मैं देखने में कोई ज्यादा खूबसूरत नहीं थी. मेरा रंग थोड़ा गहरा था. वैसे भी मैं दुबलीपतली थी और सोने पर सुहागा यह कि मेरे दांत भी थोड़े आगे निकले हुए थे. सब लोग मुझे 'काली', 'दांतों' और न जाने क्याक्या कह कर बुलाते. किसी को कभी मेरी ऐजूकेशनल क्वालिटी नजर न आती.

इन बातों को सुन कर कभी मैं भावुक हो कर रोती, तो कभी गुस्से में आ कर बहस करती, "जाओ, ऊपर वाले से जा कर लड़ो, जिस ने मुझे ऐसा बनाया."

मैं अपनी मां से कहती, "मां, मुझे काली क्यों पैदा किया? मुझे भी खूबसूरत पैदा करती..."

मेरी मां कभी मुझे शांत हो कर देखती रह जातीं और कभी समझातीं. मैं ने 26 साल का आंकड़ा पार कर लिया था. इन सालों में मैं ने डबल सब्जैक्ट्स में मास्टर्स की डिगरी हासिल की थी.

मैं ने अपनी ऐजूकेशन के लिए सब गहने बेच दिए, क्योंकि मेरा परिवार नहीं चाहता था कि मैं प्रोफैशनल कोर्स करूं, तो उन्होंने कोई सपोर्ट नहीं किया. मुझे नौकरी की इजाजत नहीं मिली. हर कोई पूछा करता था कि शादी नहीं हुई? रिश्ता नहीं हुआ? मैं थक गई थी सुनसुन कर. अब और नहीं. शादी करने के लिए ही मजबूर हो गई.

रिश्तों के आने का एक सिलसिला शुरू हुआ. रिश्ते एक तो आते बहुत मुश्किल से थे और अगर आते भी थे तो वे मुझे नापसंद कर जाते.

पहली बार में मुझे बहुत गुस्सा आया, लेकिन फिर आदत हो गई. वजह, मेरे नैननक्श से ज्यादा हमारी माली हालत थी. मेरा परिवार लड़की दे सकता था, पर कार कैसे देता? और वह एक गोरी बहू भी नहीं दे सकता था.

मां और मेरी छोटी बहन बिलकुल टूट चुकी थीं. मुझे मेरी मां की उदासी अंदर तक तोड़ देती थी. जब कोई परिवार आता और बिना कोई जवाब दिए उठ कर चला जाता, तो मेरी हिम्मत नहीं होती थी उन का चेहरा देखने की.

अब मैं ने सोच लिया था कि बस बहुत हुआ, अब यह सब अब और नहीं. मैं ने रूढ़िवाद को खत्म करने की सोच ली. मैं ने अच्छा कोर्स किया. मैं ने टीचर बन कर पढ़ाना शुरू किया. साथ में पढ़ाई भी करती रही. दिनभर पढ़ाना और रात को पढ़ना मेरा रूटीन बन गया.

मैं ने सब की मरजी न होते हुए भी आईसीएस एग्जाम दिया और टौप किया. बस, अब मेरे खराब दिन खत्म हुए और ऐसी रोशनी आई, जिस ने सब तरफ का अंधेरा मिटा दिया. सब लोग मेरे बारे में अच्छे तरीके से बात कर रहे थे. हर कोई मेरी काबिलीयत को सलाम कर रहा था. कई लोग मुझ से शादी करना चाहते थे, लेकिन अब मुझे शादी नहीं करनी थी.

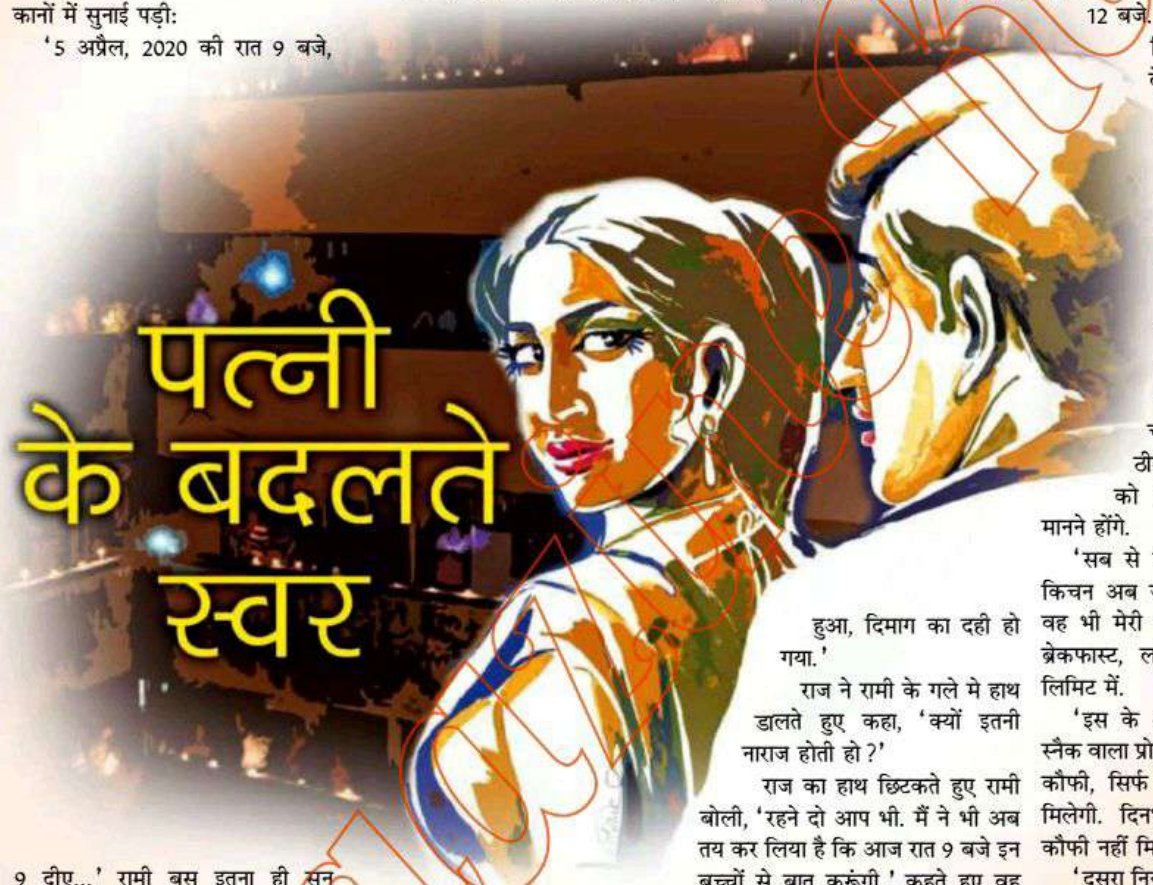
मैं ने अपने मांबाप को सपोर्ट किया. अपनी 4 बहनों की शादी की. खुद के बारे में भी सोचना था मुझे और मैं ने सोचा भी. एक प्यारी सी बेटी को गोद लिया और उस का नाम रखा 'चांदनी'.

अब मेरी जिंदगी में कुछ बुरा नहीं है. मैं खुश हूं. मैं अगर बुरे वक्त में जिंदगी से हार कर खुदकुशी कर लेती तो क्या होता? कुछ नहीं, इसलिए निराश न हों परेशानी से, बल्कि प्रेरणा बनें दूसरों की. ●

कहानी

पत्नी के बदलते स्वर

अक्षय कुलश्रेष्ठ



रामी काफी परेशान थी, क्योंकि देश में कोरोना के चलते 21 दिन का लौकडाउन था. बच्चे और पति राज घर पर ही थे. हर समय बच्चों के साथसाथ ये भी कुछ न कुछ फरमाइश करते रहते.

रामी को इस का कोई तोड़ नजर नहीं आ रहा था, तभी घर का काम करते हुए 3 अप्रैल की सुबह प्रधानमंत्री के भाषण की आवाज उस के कानों में सुनाई पड़ी:

'5 अप्रैल, 2020 की रात 9 बजे, 9 दीए...' रामी बस इतना ही सुन सकी, तभी छोटे बच्चे ने कार्टून का चैनल लगा दिया.

पति राज छत से टहल कर नीचे आए और एक कप चाय की मांग कर डाली. उन्हें नहीं पता था प्रधानमंत्री के इस भाषण के बारे में.

पति राज कुछ समझ पाता, पत्नी रामी ने थैला थमाते हुए कहा कि पहले कहीं से 9 दीए का इंतजाम करो.

'क्यों...? क्या हुआ...? इन दीए का क्या करोगी...?' राज ने पूछने की गुस्ताखी की, 'क्या लौकडाउन में भी...'

'जी हां, पहले जो कहा है, वह करो,' रामी ने गुस्सा दिखाते हुए कहा.

'अच्छा, जो तुम कहोगी, वही होगा, पर पहले नहा तो लेने दो,' राज ने अपना पक्ष रखा.

राज कुछ सोचता हुआ नहाने बाथरूम की ओर चला गया.

राज जब नहा कर आया, तो उस ने मुसकान बिखेरते हुए रामी से एक कप चाय की फरमाइश कर दी.

चाय का नाम सुनते ही रामी का पारा चढ़ गया, 'पहले जो कहा है, उसे पूरा करो.'

नरम पड़ते हुए राज ने रामी से कहा, 'क्या हुआ आज जो इतनी गुस्से में हो?'

'मैं गुस्से में नहीं हूं...' रामी ने नाराजगी छिपाते हुए कहा.

'जब मैं आज घर का नाश्ता तैयार कर रही थी, तभी प्रधानमंत्री की स्पीच आ रही थी, जिस में कहा गया था कि रविवार की रात 9 बजे 9 मिनट अंधेरा करें, फिर 9 दीए जला कर बालकनी में रखें...' रामी ने इतना ही कहा.

'तुम भी बेवजह हंगामा करती रहती हो,' राज ने छोटे बेटे के हाथ से मोबाइल छीन कर न्यूज वाला चैनल लगा दिया.

न्यूज सुन कर राज ने अपना सिर पीट लिया और बोला, 'हंसी आती है ऐसी बातों पर. क्या इस से कोरोना अपनी चाल बदल लेगा?

'क्या यही है वायरस को मारने का अचूक फार्मूला? पहले अंधेरा कर दो, फिर कुछ देर तक तेज दीए या मोबाइल की फ्लैश चला दो. रोशनी से आंखें फेल जाएंगी. वायरस दिखेगा नहीं और चला जाएगा, कहानी खत्म.'

'यह तुम क्या बोले जा रहे हो? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा,' रामी राज के अजीब चेहरे को देख कर बोली.

'तुम बस अपने घर पर ध्यान दो. इधरउधर की बातों में कम,' राज अजीब नजरों से रामी को देखता हुआ खुद ही चाय बनाने लगा.

राज को चाय बनाते देख रामी खुद ही असल बात पर आते हुए बोली, 'मैं इन दोनों बच्चों से काफी तंग आ चुकी हूं, सारा दिन काम करतेकरते मैं भी थक जाती हूं. कमबख्त, ये लौकडाउन नहीं हुआ, दिमाग का दही हो गया.'

राज ने रामी के गले मे हाथ डालते हुए कहा, 'क्यों इतनी नाराज होती हो?'

राज का हाथ छिटकते हुए रामी बोली, 'रहने दो आप भी. मैं ने भी अब तय कर लिया है कि आज रात 9 बजे इन बच्चों से बात करूंगी,' कहते हुए वह वहां से चली गई.

पूरे दिन खुटका रहा, रामी न जाने क्याक्या बच्चों से बोलेगी.

रात 9 बजे हम सब के लिए फर्श पर दरी बिछा दी गई.

ठीक रात के 9 बजते ही रामी ने 9 मिनट तक अंधेरा कर दिया, उस के बाद मोबाइल की फ्लैश जलाते हुए दरी पर बैठ गई.

यह हरकत देख बच्चे हैरानी से मां की ओर देखने लगे.

कुछ देर बाद राज ने लाइट जलाई और बच्चों के पास ही आ कर बैठ गए.

बच्चों की ओर देख कर रामी बोली, 'मेरे प्यारो, पापा के दुलारो, आप सब का काम करतेकरते मैं थक गई हूं. लौकडाउन के चलते सब ही घर में बैठे हैं और सिर्फ खाए जा रहे हैं, सो रहे हैं बस.

'पूरे दिन मोबाइल फोन पर गेम या व्हाट्सएप पर चैटिंग के अलावा टीवी के तमाम प्रोग्राम देखते रहते हैं और मैं पूरे दिन चकरघिन्नी की तरह इधर से उधर तुम सब की फरमाइश पूरी करने के लिए दौड़ती रहती हूं.

'इसलिए मैं ने बहुत सोचसमझ कर यह फैसला लिया है कि आज रात 12 बजे...' कहते हुए रामी ने थोड़ा पोज बदला, ध्यान से सुनिए, 'आज रात 12 बजे...'

फिर रामी बच्चों की ओर देखने लगी... बच्चों के साथसाथ राज की भी सांस ऊपरनीचे हो रही थी. पता नहीं, क्या कहेगी. फिर मेरी ओर देख कर वह बोली, 'आज रात 12 बजे से अब इस घर में मेरा लौकडाउन रहेगा. आज से सब अपनाअपना काम खुद ही करेंगे, अगर आप चाहते हैं कि सबकुछ ठीकठाक चलता रहे तो आप को मेरे द्वारा बनाए नियम मानने होंगे.

'सब से पहला नियम तो यह कि किचन अब जरूरी होगा तभी खुलेगा, वह भी मेरी मरजी से. मतलब, सिर्फ ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर और वह भी लिमिट में.

'इस के अलावा शाम 4 बजे का स्नैक वाला प्रोग्राम नहीं होगा, चाय हो या कौफी, सिर्फ सुबह और शाम को ही मिलेगी. दिनभर किसी को चाय या कौफी नहीं मिलेगी.

'दूसरा नियम यह कि खाने के स्वाद, मात्रा और क्वालिटी पर किसी को कुछ भी कहने का हक नहीं होगा.

'आप सभी को मेरे बनाए नियम मानने होंगे. यह नियम आज रात 12 बजे से ही लागू माने जाएंगे.'

फिर बच्चों की ओर उंगली दिखाते हुए रामी बोली, 'अगर घर में ठीक ढंग से रहना है तो मेरे इन नियमों को मानना होगा, वरना बाहर सड़क पर पुलिस वालों से मार खाने के लिए तैयार रहना.'

रामी की बात में सचाई थी, इसलिए सभी चुप थे. पति राज ने बच्चों की आंखों में देखा और एक मत से रामी के लिखे नियम पर दस्तखत कर दिए.

ऐसा देख रामी अपनी जीत पर इतराते हुए मुसकराई और बेडरूम की ओर विजयी मुद्रा में सोने चल दी. ●



ग्लैमर बिना फिल्में अधूरी होती हैं - सहर आफसा

● शैलेंद्र सिंह

भोजपुरी फिल्म 'मेहंदी लगा के रखना 3' में खेसारीलाल यादव के साथ नई हीरोइन सहर आफसा ने अपनी अदाकारी दिखाई है. सहर आफसा बैंगलुरु की रहने वाली हैं और पहले उन का भोजपुरी से कोई रिश्ता नहीं था. अब वे यशी फिल्म्स, अभय सिन्हा और इज माई ट्रिप डौट कौम प्रस्तुत और रेणु विजय फिल्म्स ऐंटरटेनमैंट बैनर तले बनी भोजपुरी फिल्म 'मेहंदी लगा के रखना 3' में पहली बार काम कर रही हैं. साउथ की रहने वाली सहर आफसा भोजपुरी फिल्मों में ऐक्टिंग कर रही हैं. पेश हैं, इस मुद्दे पर सहर आफसा से हुई बातचीत के खास अंश:

साउथ से भोजपुरी फिल्मों में काम करने का खयाल कैसे आया?

भोजपुरी फिल्म में ऐक्टिंग के बारे में कभी सोचा नहीं था. सच तो यह है कि भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री की बहुत जानकारी भी नहीं थी. मैं यशी फिल्म्स के अभय सिन्हा से मिली. वे फिल्म 'मेहंदी लगा के रखना 3' को ले कर कलाकारों की तलाश कर रहे थे. मेरे फोटो उन को अच्छे लगे. उन को मेरे जैसा ही चेहरा अपनी फिल्म के लिए चाहिए था. इस तरह से मेरी शुरुआत हुई. इस फिल्म के साथ ही मुझे भोजपुरी फिल्मों के बारे में पता चल सका.



फिल्म 'मेहंदी लगा के रखना 3' में आप का किरदार क्या है?

इस फिल्म में मैं डाक्टर का किरदार निभा रही हूं. मेरे किरदार का नाम डाक्टर पल्लवी है, जो एक शहर से चल कर दूसरे शहर में आती है, फिर यहां बहुतकुछ होता है. अपने किरदार को ले कर मैं इतना कहूंगी कि फिल्म में मेरा किरदार मुझे पसंद है, जो दर्शकों को इमोशनल करने वाला है. पहली फिल्म के नाते मुझे इस से काफी उम्मीदें हैं.

आप के लिए इस फिल्म में काम करना आसान कैसे हुआ?

फिल्म के डायरैक्टर अभय सिन्हा ने मुझे बहुत सपोर्ट किया. उन के साथ निर्माता निशांत उज्ज्वल ने भी मुझे इंडस्ट्री और यहां काम करने के कल्चर को ले कर जागरूक किया. यह इंडस्ट्री अभी आगे बढ़ रही है. ऐसे में उन के साथ मेरा डैब्यू शानदान रहा है. इस फिल्म से जुड़े सभी लोगों का मुझे सपोर्ट और प्यार मिला. ऐसे में कभी कोई परेशानी नहीं आई. मैं साउथ से हूं, तो भोजपुरी में मुझे सैट पर शुरू में दिक्कतें आती थीं. तब खेसारीलाल यादव ने मेरी बहुत मदद की. वे मुझे हर चीज को डिटेल में बताते और समझाते थे.

भोजपुरी में आगे कौन सी फिल्में कर रही हैं?

अगर अच्छी कहानी मिली तो भोजपुरी में मैं आगे भी काम करूंगी. निर्माता अभय सिन्हा और सहनिर्माता निशांत उज्ज्वल की फिल्म 'घातक' कर रही हूं, जिस के डायरैक्टर टीनू वर्मा और हीरो पवन सिंह हैं. इस के अलावा मेरी तेलुगु और कन्नड़ में फिल्में रिलीज हो चुकी हैं.

भोजपुरी फिल्मों में दिखाया जाने वाला ग्लैमर दूसरी फिल्मों से अलग है क्या?

हर फिल्म में ग्लैमर होता है. ग्लैमर दर्शकों को सिनेमाघरों तक लाता है. यहां वे फिल्मों द्वारा दिए जाने वाले सामाजिक संदेशों को समझते हैं. फिल्में दर्शकों को ध्यान में रख कर ही बनती हैं. ●

रिचा चड्ढा की दरियादिली



जहां एक ओर कोरोना के कहर से खास और आम घरों में कैद हैं, वहीं सब से बड़ा सवाल है कि हमारे घरों के आसपास घूमते आवारा जानवरों के खानेपीने का इंतजाम कैसे होता होगा?

इसी के मद्देजर फिल्म हीरोइन रिचा चड्ढा ने कुछ ऐसा काम किया है कि लोग उन की वाहवाही कर रहे हैं.

दरअसल, उन्होंने अपने इलाके वर्सोवा में सड़कों पर घूमने वाली बिल्लियों को खाना खिलाने का बीड़ा उठाया है. उन्हें जहां भी ऐसी बिल्लियां दिखाई देती हैं, वे उन्हें खाना और पानी दे देती हैं.

रिचा चड्ढा ने बताया कि मेरी कार में एक हफ्ते तक का ऐसा स्टौक है. जब लौकडाउन का ऐलान किया था, तब सरकार ने जरूरी चीजों की लिस्ट जारी की थी और पशु आहार स्टोर को भी इस लिस्ट में शामिल करना तय किया था.

तब मैं समझ गई थी कि मुझे अपने इलाके के आवारा पशुओं की देखरेख करनी चाहिए. मैं ने पहले ही खाने का स्टौक कर लिया था, इसलिए अब मेरे पास उन्हें देने के लिए खाना है.

सोनम का केक और उस की सास

अनिल कपूर की बेटी और फिल्म हीरोइन सोनम कपूर की जब से शादी हुई है, तब से वे फिल्में कम कर रही हैं, लेकिन इस के बावजूद वे सुर्खियों में बनी रहती हैं.

कोरोना के कहर के बीच जब से सोनम कपूर लंदन से भारत लौटी हैं, वे घर पर ही बनी रही हैं. पिछले दिनों अपनी ससुराल दिल्ली में थीं तो टाइमपास के लिए उन्होंने सोशल मीडिया पर एक तसवीर शेयर की, जिस में वे केक बना रही थीं. साथ ही, उन्होंने यह भी बताया कि वह केक उन की ससुराल वालों को बेहद पसंद आया. इतना ही नहीं, सोनम कपूर की सास प्रिया आहूजा ने तो कमैंट कर दिया, 'शानदार केक बेटा.'

वाह सोनम, घर बैठे ही आप ने अपनी सास का दिल जीत लिया. वाकई केक कमाल का होगा.

मास्क है जरूरी



प्रधानमंत्री से ले कर गांव की गली में घूमने वाला चौकीदार भी बोल रहा है कि अगर आप किसी काम से घर के बाहर निकलते हैं तो चेहरे पर मास्क लगा लें. कोरोना से बचने का यह अच्छा और सस्ता उपाय है.

इसी कड़ी में हमारी फिल्म इंडस्ट्री के कलाकार भी पीछे नहीं हैं, जो लोगों को बता रहे हैं कि देशहित में मास्क पहनना कितना जरूरी है.

सोनू सूद ने तो इतना तक कह दिया है कि अगर बाजार में मास्क न भी मिले तो घबराएं नहीं और रूमाल और चुन्नी से भी मास्क बना सकते हैं. कुछ ऐसी ही बात विवेक ओबराय ने भी कही है.

इन की बात में दम है, क्योंकि जब तक इस कोरोना का कोई पुख्ता इलाज नहीं मिल जाता तब तक बचाव ही इलाज है. घर में रहें, महफूज रहें. ●



मैं 22 साल का हूं और अपनी एक ममेरी बहन से प्यार करता हूं, पर उस के घर वाले हमारी शादी के लिए राजी नहीं हैं. मैं क्या करूं?

बहनों से राखी बंधाई जाती है, प्यार नहीं किया जाता. यह प्यार नहीं वासना है. उस बहन से दूर रहें व पढ़लिख कर कुछ बनने की कोशिश करें.

●

मैं 22 साल का हूं. एक शादीशुदा औरत को 8 साल तक बच्चे नहीं हुए. मैं उस से प्यार करने लगा और हमारे बीच हमबिस्तरी भी होने लगी. नतीजतन, वह पेट से हो गई है. इस बात से उस का पति खुश भी है और दुखी भी है. मैं उस औरत के बिना नहीं रह सकता. मुझे क्या करना चाहिए?

उस औरत का पति हमबिस्तरी के लायक नहीं है, लिहाजा बीवी के पेट से होने पर खुश है, पर अपनी लाचारी से दुखी भी है. मुनासिब यही होगा कि आप उन के बीच से निकल जाएं.

●

मैं एक बच्चे की मां हूं. मेरे पति विदेश में हैं. मेरे पीछे एक आदमी दीवाना बना हुआ है. उस के 3 बच्चे हैं. मतलब न रखने पर वह जहर खाने की धमकी देता है. सही राह दिखाएं?

आप के पति विदेश में कमाने गए हैं. आप को उन के प्रति वफादार रहना चाहिए. उस आदमी से दोटूक इनकार कर के नाता तोड़ लें. वह चालाकी से आप को पाना चाहता है. ऐसे लोग जहर नहीं खाते, बल्कि नए शिकार ढूंढ़ते हैं.

●

मैं 22 साला हिंदू हूं. मुझे 17 साला असमी लड़की से प्यार हो गया था. वह लड़की मुझ पर शादी करने के लिए दबाव डाल रही है. शादी न करने पर वह जहर खा कर मरने की धमकी देती है. मैं उस से शादी नहीं करना चाहता. मुझे क्या करना चाहिए?

अगर आप को प्यार है और उस लड़की के घर वाले तैयार हैं, तो शादी में परेशानी क्या है? अगर वह जहर खाने की धमकी दे रही है, तो जाहिर है कि उसे गहरा प्यार है. हाथ से मौका न निकलने दें.

●

मैं सुनार हूं. 2 साल पहले एक लड़की से प्यार किया था, पर अब उस की शादी हो गई है. लिहाजा, मेरा दिल टूट गया है. मैं ने तय कर लिया है कि अब कभी प्यार नहीं करूंगा, पर लड़कियां फोन के जरीए मेरे पीछे पड़ी रहती हैं. मैं कई सिमकार्ड तोड़ चुका हूं. मैं कैसे बचूं?

प्यार न करने का फैसला अच्छा है. आप कोई सुपरस्टार या नामी खिलाड़ी तो नहीं हैं, फिर लड़कियां आप के पीछे क्यों पड़ेंगी? अपने काम से काम रखें, लड़कियां इतनी फालतू नहीं होतीं. सिमकार्ड तोड़ने की जरूरत नहीं है. आप का नंबर उड़ कर किसी के पास नहीं पहुंचेगा.

●

मैं अपनी सगी मौसेरी बहन से प्यार करता हूं और वह भी मुझ से प्यार करती है. हम दोनों शादी करना चाहते हैं. सलाह दें?

मुसलिमों में तो ऐसे रिश्ते होते रहते हैं, पर हिंदुओं के मामले में यह गलत है. कानून भी इस की इजाजत नहीं देता. बेहतर होगा कि आप बहन को राखी बांधने दें और प्यार किसी बाहरी लड़की से करें. ●

सरस सलिल

MK MAGAZINE KING

||राज-रतन||

डिटर्जेन्ट पाउडर एवं केक

जिन्दगी के रंग
राज-रतन के संग



ISO 9001-2008 CERTIFIED CO.

डीलर रहित क्षेत्रों में डीलर बनने हेतु सम्पर्क करें

Mob.: 9044200155, 9935815880

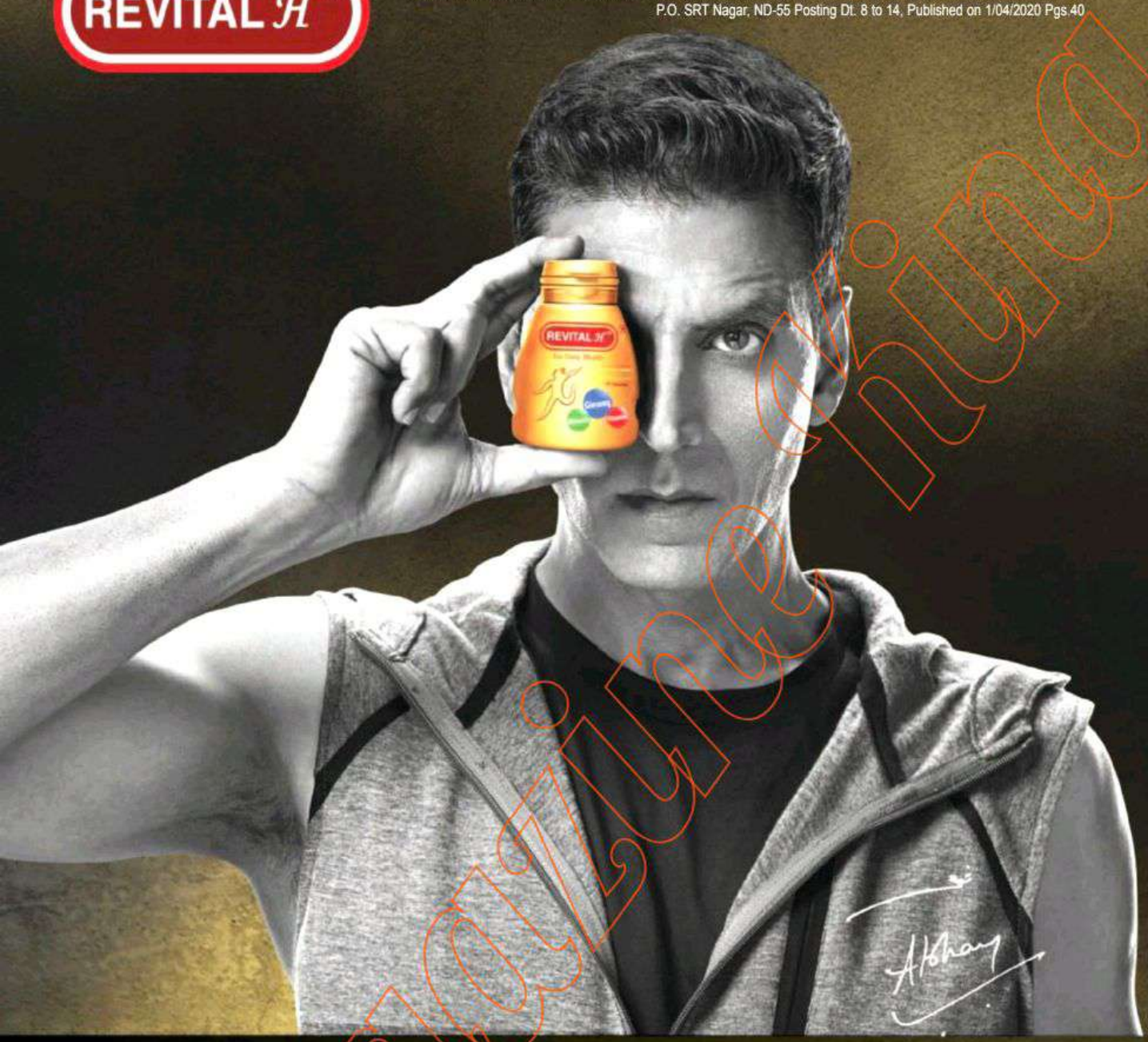
Requires: A.S.M., S.O., S.R. For U.P. & Bihar,
Send resume in ratandet@gmail.com

MK MAGAZINE KING

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2018-20/U(C) 135/163/2018-20 Saras Salil (Hindi) April-II
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 8 to 14, Published on 1/04/2020 Pgs.40

REVITAL H™

SUN PHARMA



सुबह से शाम तक मुझे रखे चार्ज्ड

अपनी एनर्जी को सुबह से शाम तक बनाए रखने के लिए अक्षय कुमार भरोसा करते हैं सिर्फ रिवाइटल एच पर। इसका नेचुरल जिनसेंग और मल्टीविटामिन्स ऑक्सिजन का उपयोग बढ़ाकर एनर्जी बनाए रखता है। तो आप भी रिवाइटल एच लेना शुरू करें और रखें अपनी बैटरी चार्ज्ड दिनभर।



रहो चार्ज्ड

MK MAGAZINE KING

क न्यूट्रास्यूटिकल है। सेहत संबंधी फायदे तत्व आधारित है। इस प्रॉडक्ट का उद्देश्य किसी बीमारी/बीमारियों का पता लगाने, उसका उपचार, उसे ठीक या उसकी रोकथाम करना नहीं है।